जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

उदयपुर

Rashtradoot

epaper.rashtradoot.com

उदयपुर, शनिवार 4 अक्टूबर, 2025

आन्दोलन
अशुद्ध के विरुद्ध

KEDIA™
Pavitra

250 g
MRP ₹ 250

लाकाडोंग
हल्दी पाउडर

विश्व का सर्वाधिक
CURCUMIN : 7 - 12%

• लाकाडोंग मेघालय की हल्दी
• CRYOGENIC GRINDING प्रोसेस से बना

मिर्ची पाउडर
250 g
MRP ₹ 150

धनिया पाउडर
250 g
MRP ₹ 100

उड़द दाल छिलका
500 g MRP ₹ 90

मूंग दाल
500 g MRP ₹ 95

देशी गेहूँ
10 kg MRP ₹ 450

शरबती सुपीरियर आटा
5 kg MRP ₹ 350

सूजी
500 g MRP ₹ 40

गेहूँ दलिया
500 g MRP ₹ 40

बेसन
500 g MRP ₹ 70

देशी चक्की आटा
5 kg MRP ₹ 250

शरबती गेहूँ
10 kg MRP ₹ 650

NO ADULTERATION • NO MIDDLE MEN • DIRECT TO RETAILER • DIRECT TO CUSTOMER

COMING SOON: खड़े मसाले । चावल । कुकिंग ऑयल । ड्राई फ्रूट्स । चाय

ORDER ON WEBSITE

ORDER ON APP

ORDER ON CALL
1800 120 2727

ORDER ON WHATSAPP

T&C Apply.

विचार बिन्दु

हम यहाँ किसी विशेष कारण से हैं। इसीलिए अपने भूत का कैदी बनना छोड़िये। अपने भविष्य के निर्माता बनिए। –रोबिन शर्मा

सुप्रीम कोर्ट, चुनाव आयोग और बिहार की मतदाता सूचियां

प्रातः भ्रमणकारियों के एक समूह में बड़ी रोचक चर्चा च रही थी। चर्चा बिहार चुनाव से संबंधित मतदातासूचियों, चुनाव की संभावित तिथियों व सुप्रीम कोर्ट में विचाराधीन लोक हित याचिकाओं पर केंद्रित थी। जैसा होता है समूह में भिन्न-भिन्न मत सामने आ रहे थे।

कुछ का कहना था कि यदि 7 अक्टूबर से पहले चुनाव कार्यक्रम घोषित कर दिया गया तो फिर याचिकाओं पर कोई निर्णय नहीं होगा क्योंकि संविधान के अनुच्छेद 329 के अनुसार चुनाव घोषणा के पश्चात चुनाव संबंधित किसी भी कार्यवाही को न्यायालय में विचार के लिए नहीं लिया जा सकता सिवाय कानून में प्रावधित चुनाव याचिकाओं के जरिए अर्थात चुनाव प्रक्रिया शुरू होने के बाद उसे न्यायालय आदेश से रोक नहीं जा सकता। इस हिसाब से संविधान के अनुच्छेद 32 के अंतर्गत याचिकाएं भी स्वतः महत्वहीन हो जाएंगी।

इस से भिन्न मत यह था कि सुप्रीम कोर्ट की शक्तियां सीमित नहीं है। वास्तविक चुनाव प्रक्रिया प्रारंभ मानी जाती है जब चुनाव के लिए पर्चा दाखिल करने की कार्यवाही शुरू हो जाती है। इस बीच यदि उच्चतम न्यायालय को लगे कि मतदाता सूचियों में व्यापक स्तर की गड़बड़ियां है तो ऐसी गलतियों को सुधारने के निर्देश दे सकता है । अगर ऐसा होता है तो चुनाव आयोग द्वारा घोषित चुनाव कार्यक्रम में भी आंशिक परिवर्तन किया जा सकता है। उद्देश्य केवल चुनाव कराने मात्र का नहीं हो सकता, उद्देश्य स्वच्छ मतदाता सूचियों के साथ स्वतंत्र, निष्पक्ष चुनाव करने का होता है और सुप्रीम कोर्ट इस को अवश्य ध्यान में रखेगा।

एक सह भ्रमणकारी ने बहस को अलग दिशा दी। उसके अनुसार मतदान संविधान के तीसरे भाग में उल्लेखित एक मूलभूत अधिकार नहीं है। अनुच्छेद 32 के अंतर्गत मूलाधिकारों के हनन या लागू करवाने के संबंध में ही याचिकाएं दायर की जा सकती है। इस प्रकार बिहार से संबंधित लोकहित याचिकाएं तो चलने योग्य ही नहीं।

साथ चलने वालों में से एक में कहा कि मूल अधिकारों से संबंधित अध्याय के पहले ही अनुच्छेद 14 में उल्लेखित है कि देश में प्रत्येक व्यक्ति को देश के कानून का बराबर संरक्षण उपलब्ध है, केवल नागरिकों को ही नहीं। मूल अधिकारों के शेष अनुच्छेदों में ही नागरिक शब्द उल्लेखित हुआ है किंतु अनुच्छेद 14 प्रत्येक व्यक्ति का उल्लेख है।

स्वच्छ मतदान के जरिए एक उत्तरदाई चुनी हुई लोकतांत्रिक सरकार बने यह हमारे संविधान का मूल ढांचा है (basic structure), हर नागरिक का यह मूल अधिकार है। उसके अनुसार यह अभिव्यक्ति के मूल अधिकार का विस्तार ही तो है। अंतर केवल यह है कि संविधान में उल्लेखित कुछ अपवादों जैसे पागल न हो, घोषित दिवालिया न हो आदि को छोड़कर समस्त वयस्क नागरिकों को, समान रूप से, यह अधिकार है।

संविधान के अनुसार, लोक सभा, विधान सभाओं के लिए सघन परीक्षण व पारदर्शी तरीके से स्वच्छ मतदाता सूचियां तैयार करने का अधिकार संविधान के अनुसार चुनाव आयोग का है। आशा है सुप्रीम कोर्ट में हुई सुनवाई और दिए गए निर्देशों के अनुसार ही चुनाव आयोग स्वच्छ मतदाता सूचियां तैयार करेगा। केवल एक बिंदु पर अभी तक स्थिति स्पष्ट नहीं हैः- अगर किसी गांव, मोहल्ले में किसी व्यक्ति ने यह कहा कि अमुक व्यक्ति अवैध विदेशी माइग्रेंट है तो चुनाव आयोग क्या करेगा? कैसे जांच करेगा?

मतदाता को स्वच्छ सरकार मिले इसके लिए सुप्रीम कोर्ट ने ही उम्मीदवारों के लिए यह लाजमी किया है कि वे अपनी संपति, अपराधिक रिकॉर्ड को सार्वजनिक करें, चुनाव के लिए प्राप्त धन का सही ब्यौरा दें। मतदाता अधिकार मात्र एक मत डालने का नहीं है, यह लोकतांत्रिक सरकार के गठन की दिशा में महत्वपूर्ण कदम होता है। एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स की याचिका पर ही सुप्रीम कोर्ट में चुनावी बॉन्ड के जरिए राजनीतिक पार्टियां को धन देने की योजना, लोक हित याचिका के जरिए ही निरस्त की थी और प्राप्त चुनावी चंदे की राशि और स्त्रोतों की जानकारी सार्वजनिक करने के आदेश दिए।

लेखक की राय में मतदान, संविधान में विहित प्रतिबंधों के साथ अभिव्यक्ति के मूल अधिकार का ही विस्तार है। इस की अभिव्यक्ति के जरिए ही लोकतांत्रिक सरकार का चयन होता है। सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार के बिना लोकतांत्रिक सरकार का गठन असंभव है तो फिर मतदान का अधिकार अन्य मूल अधिकारों से कमतर कैसे??? इसलिए बिहार SIR के संबंध में दायर याचिकाएं अनुच्छेद 32 के अंतर्गत है सुनी जाने के योग्य है।

अब अंत में बिहार SIR पर विचार करें। संविधान के अनुसार, लोक सभा, विधान सभाओं के लिए सघन परीक्षण व पारदर्शी तरीके से स्वच्छ मतदाता सूचियां तैयार करने का अधिकार संविधान के अनुसार चुनाव आयोग का है। आशा है सुप्रीम कोर्ट में हुई सुनवाई और दिए गए निर्देशों के अनुसार ही चुनाव आयोग स्वच्छ मतदाता सूचियां तैयार करेगा। केवल एक बिंदु पर अभी तक स्थिति स्पष्ट नहीं है::-- अगर किसी गांव, मोहल्ले में किसी व्यक्ति ने यह कहा कि अमुक व्यक्ति अवैध विदेशी माइग्रेंट है तो चुनाव आयोग क्या करेगा? कैसे जांच करेगा? मान लें कि 2,4,5 मौजीज व्यक्तियों, पटवारी, अध्यापक आदि से बात करके इस नतीजे पर पहुंचता है कि मामला संदेहास्पद है तो वह तो संदेहास्पद लिख देगा किंतु इसके आगे निर्वाचक नामावली पंजीकरण अधिकारी (ERO) या जिला निर्वाचन अधिकारी ऐसे मामलों का निपटारा कैसे करेंगे???

संविधान के अनुसार तो कोई व्यक्ति भारत का नागरिक है इसका निर्णय करने का अधिकार केवल व केवल केंद्र सरकार को है? एक रास्ता तो यह नजर आता है कि केंद्र सरकार ERO या जिला मजिस्ट्रेट को नागरिकता तय करने का अधिकार दे। इसके भी पहले व्यवहारिक बात तो यह प्रतीत होती है कि केंद्र सरकार ऐसी जांच कर ऐसे व्यक्तियों को डिटेंशन सेंटर्स में स्थानांतरित करे, उन्हें उनके संबंधित देश से बात कर के उन्हें उनके देश में भिजवाए। क्या यह प्रक्रिया 2,4,5,10 दिन या 1,2 महीने में निपटने वाली लगती है??

इसलिए चुनाव आयोग का दायित्व है कि वह स्पष्ट करे कि यदि इस प्रकार के मामले BLO ने ड्राफ्ट सूची में दे रखे है तो उनका निस्तारण कैसे किया???

–अतिथि सम्पादक,
महावीर सिंह,
आई.ए.एस. (से.नि.)

कार्तिक पुष्कर मेला, रेगिस्तान का जहाज और ऊंट संरक्षण की दरकार

डॉ. सुबोध अग्रवाल

राजस्थान का सबसे खास सांस्कृतिक मेला, पुष्कर मेला, अब बस कुछ ही दिन दूर रह गया है। जब रेगिस्तान में सुनहरे रेत के धोरों के पीछे सूर्य अपनी दिन की यात्रा पूरी कर छिपता है तब हवा में गूंजते लोकगीतों के बीच मेले की पहचान एक और तस्वीर उभरती है और वह तस्वीर होती है रेगिस्तान के जहाज ऊंट की। मोर के पंखों और छोटे-छोटे कटिंग वाले शीशों से सजाए गए ऊंट और रंग-बिरंगी पगड़ी पहने सजे-धजे ऊंट के मालिक पुष्कर मेले की अलग ही छटा बिखेरते दिखते हैं। देसी-विदेशी पावणों के बीच रंगीन पहनावा में ऊंट पालक और सजे धजे ऊंट रेत के धोरों को और भी खूबसूरत बना देते है। कार्तिक पुष्कर मेले की ऊंट रौणक है तो मेले की जीवंतता भी ऊंटों की उपस्थिति से ही बनती है।

ऊंट कई सदियों से रेगिस्तान की जान रहा है। रेगिस्तान की संस्कृति में रचा-बसा रहा हैं ऊंट। आवागमन का माध्यम, व्यापार का साधन, घुमंतू लोगों का साथी और पुष्कर का सितारा। लेकिन, अब इनकी संख्या कम हो रही है। साल 2012 में राजस्थान में ऊंटों की संख्या 3 लाख 26 हजार थी, जो साल 2019 आते-आते घटकर 2 लाख 12 हजार रह गई (पशुधन जनगणना) है। इसके कारण कई रहे हैं उनमें से कुछ घटते और सिकुड़ते चरागाह, आवागमन के आधुनितक साधनों की सहज उपलब्धता, मशीनीकरण और कम कमाई की वजह से ऊंट पालने वाले निराश हो गए हैं। इसके अलावा एक और अन्य प्रमुख कारण ऊंटों की तस्करी भी है। आज पुष्कर मेले में ऊंटों की संख्या घोड़ों से कम होती जा रही है। यह उन देसी-विदेशी पर्यटकों के लिए निराशाजनक है जो ऊंट को रेगिस्तान का असली प्रतीक मानते आए हैं। राजस्थान और यहां के लोगों के लिए भी यह अपने आपमें गंभीर है।

ऐसा नहीं है कि ऊंटों की घटती संख्या से गंभीर ना हो। यह भी साफ हो जाना चाहिए कि कमी का मतलब खत्म होना नहीं है। ऊंट का दूध, जिसे अब सुपरफूड माना जाता है, 80-100 रुपये प्रति लीटर बिकता है और यह दुनिया भर में बिक रहा है। सरकारी गैरसरकारी पहल से सहकारी समितियां और डेयरी कंपनियां ऊंट के दूध और सह उत्पादों से नई कमाई के अवसर पैदा कर रही हैं। पर्यटन भी बदल रहा है और ऊंट सफारी आकर्षण का केन्द्र बनती जा रही हैं। इको-सफारी, सांस्कृतिक यात्राएं और रेगिस्तानी अनुभव ऊंटों को फिर से मुख्य आकर्षण बना रहे हैं।

संस्थागत मदद जरूरी-

आईसीएआर-नेशनल रिसर्च सेंटर ऑन कैमल, बीकानेर, जो 1984 में स्थापित हुआ था। इसे 1995 में अपठोड किया गया है और ऊंटों की सेहत, प्रजनन और वैल्यू-एडेड प्रोडक्ट दूध पाउडर और आइसक्रीम से लेकर नई डायग्नोस्टिक किट तक के क्षेत्र में अठाणी काम कर रहा है। इससे ऊंट ऊंट पालकों के लिए बोझ बनने की जगह आय का साधन बनने लगे हैं। हालांकि इस क्षेत्र में अभी और काम किये जाने की आवश्यकता हैं क्योंकि ऊंटों की आबादी में बढ़ोतरी अभी हो नहीं पा रही है।

राज्य सरकार ऊंट की घटती आबादी को लेकर गंभीर हुई है और साल 2014 में, राजस्थान सरकार ने ऊंट को अपना राज्य पशु घोषित किया। साल 2015 के कैमल एक्ट ने ऊंटों की हत्या पर रोक लगा दी और उनके आवागमन-निर्यात को नियंत्रित किया गया। इन उपायों का मकसद इस प्रजाति को बचाना ही था, हालांकि इसका ऊंट पालने वालों पर आर्थिक असर मिला-जुला रहा है। ऐसे में सरकार को ऊंट पालकों के लिए भी पैकेज लाने की पहल की जानी चाहिए।

एक निजी बातः जब मैं बीकानेर का कलेक्टर और जिला मजिस्ट्रेट था (1994-95), तो हमने कैमल फेस्टिवल को बढ़ावा दिया। हमारे इस प्रयास को सराहा गया और यह आयोजन नवाचार होने के साथ ही बहुत सफल रहा। ऊंट फेस्टिवल में देश-विदेश के पर्यटकों की सहभागिता तय की गई उनकी हिस्सेदारी से ऊंट के प्रति लोगों का झुकाव और ध्यान आकर्षित हुआ। ऊंट फेस्टिवल के माध्यम से सिर्फ ऊंट पशु तक सीमित ना रहकर इससे जुड़ी संस्कृति और लोगों की आजीविका का जश्न मनाया गया।

रेगिस्तानी संस्कृति की पहचान

ऊंट रेगिस्तान की जान है। आज रेगिस्तारी धोरों की सफारी का नया दौर आया है। इस सफारी में वाहनों के स्थान पर ऊंट सफारी के रुप में ही आगे बढ़ाया जाए तो ऊंट और इससे जुड़ी गौरवपूर्ण संस्कृति को आगे बढ़ाया जा सकेगा। इसके साथ ही राजस्थान में ऊंटों को डेयरी, हस्तशिल्प और टिकाऊ पर्यटन जैसे उच्च-मूल्य वाले क्षेत्रों से जोड़ जाना चाहिए। सकारात्मक सोच, सही नीति, नवाचार और गर्व के मिश्रण से, हम आजीविका की रक्षा कर सकते हैं और विरासत को जीवित रख सकते हैं।

वैसे तो ऊंट के बिना रेगिस्तान की कल्पना नहीं की जा सकती ठीक उसी प्रकार कार्तिक पुष्कर मेला रंग बिरंगे सजे धजे ऊंट और ऊंट के करतबों, विभिन्न प्रतियोगिताओं के बिना अधूरा है।

–डॉ. सुबोध अग्रवाल,
(आईएएस),
अतिरिक्त मुख्य सचिव,
राजस्थान सरकार

प्रवासी दृष्टिः समाज, संस्कृति और सोच

डॉ. पंकज राजवंशी

तटस्थता की कीमत

कभी-कभी लगता है कि हम सब एक अजीब-से मंच पर खड़े हैं। कुछ के पास माइक है, कुछ बस दर्शक हैं, और कुछ तो इतने पीछे हैं कि मंच तक उनकी परछाइयाँ भी नहीं पहुँचतीं। और इस मंच पर सबसे ज़्यादा शोर किसका है? अक्सर उनका, जिनके पास माइक भी है, मंच भी है, और अभ्यास भी। लेकिन सवाल ये है, क्या आवाज़ का अधिकार मंच से तय होता है या अनुभव से? क्या किसी विषय पर सोचने, लिखने और बोलने के लिए सिर्फ पीड़ा ही पासपोर्ट है? या फिर संवेदनशीलता और जिम्मेदारी भी कुछ मायने रखती है?

आजकल के विमर्शों में यह सवाल लगभग रोज़ उठता है। कुछ खास विषय जैसे दलित अनुभव, स्त्री संघर्ष, आदिवासी जीवन, जिन पर लिखने से पहले यह साबित करना पड़ता है कि आप वह जीवन जी चुके हैं। अगर नहीं, तो फिर बोलने का हक़ कहाँ से आता है? यह सवाल मुझे खटकता है, और ईमानदारी से कहूँ तो डराता भी है। क्या अनुभवहीनता संवेदना शून्यता की गारंटी है? और क्या किसी वर्ग, जाति या पहचान से बाहर होना किसी मुद्दे को समझने में असमर्थ बना देता है?

माना कि पीड़ा की गहराई वही समझ सकता है जो उसे जीता है। लेकिन क्या इसका मतलब यह है कि बाकी सब चुप रहें? अगर हाँ, तो फिर साहित्य, शोध और सामाजिक विज्ञान के 90 प्रतिशत हिस्से को हम कैसे जायज़ ठहराएँगे? क्या कल्पना, करुणा और विवेक भी अब लाइसेंस से मिलेंगे?

यह सवाल मेरे लिए सिर्फ सैद्धांतिक नहीं है। यह व्यक्तिगत भी है। मैं एक प्रवासी भारतीय हूँ। तीन दशक से ज़्यादा समय से अमेरिका में रह रहा हूँ। मेरे पास स्थायित्व है, सुविधाएँ हैं, और निश्चित ही विशेषाधिकार है। लेकिन क्या इसी विशेषाधिकार के कारण मैं उन चीज़ों पर नहीं बोल सकता जो मेरे देश में घट रही हैं? या यह विशेषाधिकार ही मुझे और अधिक बोलने के लिए बाध्य करता है?

लोग कहते हैं, तुम तो बाहर रहते हो, तुम्हें क्या पता कि यहाँ क्या होता है। और कभी-कभी वही लोग यह भी कहते हैं, तुम लोग जो बाहर हो, कुछ करते क्यों नहीं? यह विरोधाभास दिलचस्प है। जब हम चुप रहें तो आलोचना, जब बोलें तब भी आलोचना। यानी जो भी करें, आप गलत हैं।

सच कहूँ तो कई बार मैं खुद भी असमंजस में रहता हूँ। क्या मेरी संवेदनशीलता सिर्फ एक आरामदेह बौद्धिक मुद्रा है? क्या मैं अपने लैपटॉप के सामने बैठकर बदलाव की बातें करने वाला 'आर्मचेयर एक्टिविस्ट' हूँ? शायद हूँ। लेकिन क्या यह कुर्सी मुझे सोचने से रोकती है? या फिर यही कुर्सी मेरी ज़िम्मेदारी बन जाती है?

मैं एक चिकित्सक हूँ। मेरी समझ, मेरी दृष्टि, मेरे प्रश्न, ये सब मेरी पेशेवर यात्रा का हिस्सा हैं। जब मैं देखता हूँ कि कोई परिवार दिनभर काम करता है ताकि दो वक़्त की रोटी मिल सके, तो मुझे मैस्लो का ज़रूरतों का सिद्धांत याद आता है। पहले पेट भरेगा, फिर सोच खुलेगी। जब कोई प्रवासी मज़दूर किराए और बच्चों की पढ़ाई के तनाव में डूबा होता है, तो मस्तिष्क की सोचने की क्षमता भी सीमित हो जाती है। ऐसे में विचारधारा की बातें लग्ज़री जैसी लगती हैं। लेकिन क्या इसका अर्थ है कि सोचने और कहने का काम सिर्फ वही करें जो पीड़ा में नहीं हैं? या फिर उन पर एक अतिरिक्त जिम्मेदारी है कि वे अपने मंच को दूसरों की आवाज़ बनने के लिए इस्तेमाल करें?

यहीं पर नैतिकता और विशेषाधिकार टकराते हैं। अगर आप किसी मंच पर हैं और आपके पास माइक है, तो क्या आप उसे सिर्फ अपने लिए इस्तेमाल करते हैं या किसी और की बात कहने के लिए भी थोड़ा हटकर खड़े होते हैं? यह एक बहुत महीन फर्क है। और इसी फर्क से तय होता है कि आप 'छद्म बुद्धिजीवी' हैं या ज़िम्मेदार लेखक।

हम अक्सर सोचते हैं कि पीड़ा की आवाज़ उन्हीं से आए जो पीड़ित हैं। यह उचित भी है। लेकिन अगर पीड़ितों की आवाज़ दबा दी गई हो? अगर उनके पास माइक ही न हो? तो क्या हम सब मूक दर्शक बनकर बैठ जाएँ? शायद नहीं। शायद ज़रूरत है यह जानने की कि कब बोलना है, कब चुप रहना है और कब माइक थमाना है।

हमेशा यह जरूरी नहीं कि बोलने वाला खुद पीड़ित हो। लेकिन जरूरी यह है कि वह अपने विशेषाधिकार को समझे। वह यह समझे कि उसकी आवाज़ गूँजती क्यों है और किसकी आवाज़ गूँजने से पहले ही दम तोड़ देती है। अगर वह ये समझ पाता है, तो शायद वह किसी का प्रवक्ता न बने, लेकिन उसका साथी ज़रूर बन सकता है।

लेखन एक माध्यम है। न तो तख़्त है, न ही तलवार। और अगर हम इसे सिर्फ आत्मप्रदर्शन का ज़रिया बनाते हैं, तो शायद हम वह कर रहे हैं जिससे बचने की सलाह हम दूसरों को देते हैं।

किसी मुद्दे पर लिखते समय यह ज़रूरी है कि हम खुद से बार-बार सवाल करें। क्या मैंने वाकई किसी से बात की है? क्या मैं सिर्फ पढ़ी हुई चीज़ों से सोच रहा हूँ या ज़मीन से भी जुड़ा हूँ?

क्या यह लेख सिर्फ मेरे विचार हैं, या इनमें कुछ और आवाज़ें भी छिपी हैं?

मेरे लिए यह लेखन अभ्यास नहीं है। यह बेचैनी है। यह भीतर की वह खरोंच है जो हर बार तब उभरती है जब किसी दूसरे की चुप्पी सुनाई देती है। मैं स्वीकार करता हूँ कि मेरे पास सभी उत्तर नहीं हैं। लेकिन सवाल हैं। और शायद कुछ संसाधन भी हैं। और इन दोनों के बीच एक पुल बन सकता है। संवाद का पुल, संवेदना का पुल और सबसे ज़रूरी, सहभागिता का पुल।

मुझे नहीं लगता कि लेखन से दुनिया बदलती है। लेकिन शायद यह एक शुरुआत होती है। एक सोचने की आदत बनती है। और कभी-कभी यह भी होता है कि किसी एक ने लिखा और किसी दूसरे को हिम्मत मिली।

मैं कोई नायक नहीं हूँ। और न ही किसी की तरफ़ से बोलने का दावा करता हूँ। मैं सिर्फ यह मानता हूँ कि अगर आप किसी व्यवस्था से लाभ उठाते हैं, तो उसके अन्याय पर चुप रहना अंतर्मन के साथ बेईमानी है। और यही वह बात है जो मुझे बार-बार लिखने पर मजबूर करती है।

हो सकता है कि मैं एक 'आर्मचेयर बुद्धिजीवी' ही रह जाऊँ। लेकिन इस कुर्सी से मुझे जो दिखता है, वह मुझे सोने नहीं देता। और शायद, अगर मैं सो नहीं पा रहा हूँ, तो यही बेचैनी ही मेरी नैतिकता की शुरुआत है।

मेरे शब्द यह दिखाने के लिए नहीं कि मैं कितना सोचता हूँ, बल्कि इसलिए कि शायद किसी और को थोड़ा और देखा जाए, थोड़ा और सुना जाए। और अगर कभी ऐसा हो सके, तो यही लेखन का उद्देश्य होगा।

–डॉ. पंकज राजवंशी,
सिएटल (अमरीका) में रह रहे एक गैस्ट्रोएण्ट्रोलॉजिस्ट

ग्रामीण सेवा शिविर : हर पात्र व्यक्तियों तक पहुंचा

ग्रामीणों के लिए राहत का पर्याय साबित हुए सेवा शिविर

दयाशंकर

जयपुर। आमजन को उनकी समस्याओं का त्वरित समाधान प्रदान करने के लिए प्रदेश भर में आयोजित ग्रामीण सेवा शिविरों में लाखों लोग लाभान्वित हुए हैं। इन शिविरों में आमजन के विभिन्न विभागों से जुड़े प्रकरणों का हाथों हाथ समाधान किया जा रहा है। साथ ही राज्य सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ भी दिया गया है। मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा के कुशल नेतृत्व में संपूर्ण प्रदेश में 17 सितम्बर से ग्राम पंचायतों में इन शिविरों का आयोजन किया जा रहा है। शिविरों में भूमि विभाजन, फसल बीमा, जाति प्रमाण पत्र, खाद्य सुरक्षा योजना, फसल बीमा, पशु बीमा, स्वास्थ्य सुरक्षा तथा सामाजिक सुरक्षा योजनाओं का सीधा लाभ ग्रामीणों को उनके घर के पास देकर उन्हें राहत प्रदान की गई।

उल्लेखनीय सफलता के साक्षी बने ग्रामीण सेवा शिविर

प्रदेश की ग्रामीण जनता के लिए राहत का पर्याय साबित हो रहे इन ग्रामीण सेवा शिविरों में राजस्व विभाग द्वारा आपसी सहमति से भूमि विभाजन के 11 हजार 115 लंबित प्रकरणों का निस्तारण किया गया। इसी तरह स्वामित्व योजना के तहत 77 हजार 408 पट्टों का वितरण किया गया। इन शिविरों में 64 हजार 934 लंबित नामांतरण प्रकरणों का निस्तारण कर राजस्व रिकॉर्ड में इंद्राज किया गया, भू-राजस्व अधिनियम 1956 की धारा 136 के तहत शुद्धिकरण के 69 हजार 316 प्रकरण निस्तारित किये गए। इसी प्रकार 67 हजार 376 लंबित फार्मर रजिस्ट्री पूरी की गई तथा आमजन को 90 हजार 631 मूल निवास प्रमाण पत्र एवं 1 लाख 8 हजार 992 जाति प्रमाण पत्र बनाकर जारी किए गए।

प्रदेश में पशुपालन एवं कृषि की राह प्रशस्त करते हुए ग्रामीण सेवा शिविरों में मुख्यमंत्री मंगला पशु बीमा योजना के तहत 1 लाख 10 हजार 458 पॉलिसियों तथा प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना में 1 लाख 20 हजार 421 पॉलिसियों का वितरण किया गया। शिविरों के माध्यम से सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजना के तहत 86 हजार 680 पेंशनर्स का सत्यापन किया गया। राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा पोर्टल पर लंबित 41 हजार 291 लंबित प्रकरण निस्तारित किये गए एवं टूलकिट/औजार सहायता योजना में 2 हजार 608 आवेदन स्वीकृत किये गए। वित्तीय समावेशन की दिशा में प्रधानमंत्री जन धन योजना के तहत शिविरों में 42 हजार 742 नए बैंक खाते खोले गए। इसके साथ ही जनाधार योजना में 43 हजार 163 आवेदनों को अपडेट किया गया।

ये ग्रामीण सेवा शिविर प्रदेश में विकास एवं विश्वास को सशक्त करने की दिशा में ऐतिहासिक कदम साबित हुए हैं।

–दयाशंकर,
सहायक निदेशक,
सूचना एवं जन सम्पर्क, जयपुर

संगीतमय नानी बाई रो मायरो की कथा शोभायात्रा से शुरू

बिजयनगर (निसं)। वैष्णव बैरागी सेवा संस्था बिजयनगर के तत्वावधान मे तीन दिवसीय संगीतमय नानी बाई रो मायरो कथा का शुभारंभ कलश शोभायात्रा के साथ हुई। लक्ष्मी नारायण मंदिर के पीछे वैष्णव भवन में नानी बाई रो मायर कथा का वाचन साध्वी जयमाला वैष्णव दीदी निलिया, नौगांवा मंदसौर वाले द्वारा किया जारहा है। कथा प्रतिदिन सवा बारह बजे से दोपहर सवा तीन बजे प्रतिदिन तीन अक्टूबर से पांच अक्टूबर तक चलेगी। कथा की शुरुआत विशाल कलश यात्रा के साथ गाजेबाज व भजनो पर नाचने गाते हुए श्रद्धालु तेजा चौक स्थित श्री त्रिवेणी माता जी मंदिर से शुरू होकर शहर के विभिन्न मार्गो से होते हुए कथा स्थल पहुंची । कलश शोभा यात्रा का जगह जगह विभिन्न समाज द्वारा पुष्प वर्षा कर स्वागत किया गया। इस दौरान बिजयनगर बैरागी सेवा संस्था के अध्यक्ष महावीर वैष्णव सहित पदाधिकारीयों ने कथा वाचक सहित अतिथियों का स्वागत सम्मान किया । कथा मे महंत श्याम दास महाराज बडली का सानिध्य मिला । कथा मे पूर्व भाजपा जिलाध्यक्ष नवीन शर्मा, पालिका चेयरमैन अनिता मेवाड़ा, भाजपा मंडल अध्यक्ष अमित मोदी, पालिका उपाध्यक्ष प्रीतम बडोला, पार्षद मनोहर कोगटा, विक्रम सिंह, कालूराम जाजू, आशीष सांड, ओमप्रकाश पांड्या, ज्ञानचंद प्रजापत, अमित लोढा, अभिषेक रांका, सहित अतिथियों का सेवा संस्था के पदाधिकारियों द्वारा स्वागत सम्मान किया गया। नानी बाई का मायरा कथा मे कथा वाचक सुश्री जय माला वैष्णव दीदी ने श्री नरसी जी मेहता के जन्म, बाल रुप व जीवन परिचय के बारे में विस्तार से बताया एवं सनातन धर्म के बारे में बताते हुए कहा कि 'जीवन मे सतगुरु का होना आवश्यक है, सनातन धर्म मे कई त्यौहार है जो बिना गुरु के सम्पन्न नहीं होते है, गुरु का मतलब सच्चे संत की पहचान है, जिनमे दया, करुणा, सब को अपना समझें, पराया नहीं व क्रोध नहीं करते है। कथा वाचक वैष्णव दीदी ने कहा की आज के समय मे सभी अपने बच्चों पर नजर रखे, उन्हें समय देवे, मन का विचार जाने व संस्कार देकर संस्कारित बनावे, मोबाइल का उपयोग कम से कम करने देवे। कथा मे भगवान के विभिन्न रुप व नरसी जी मेहता जीवांत झांकी सजाई गई।

राशिफल शनिवार 4 अक्टूबर, 2025

पंडित अनिल शर्मा

आश्विन मास, शुक्ल पक्ष, द्वादशी तिथि, शनिवार, विक्रम संवत 2082, धनिष्ठा नक्षत्र प्रातः 9:09 तक, शूल योग सायं 7:27 तक, बालव करण सायं 5:10 तक, चन्द्रमा आज कुम्भ राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य-कन्या, चन्द्रमा-कुम्भ, मंगल-तुला, बुध-तुला, गुरू-मिथुन, शुक्र-सिंह, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।

आज त्रिपुष्कर योग सूर्योदय से प्रातः 9:09 तक है। आज शनि प्रदोष व्रत, पंचक है।

श्रेष्ठ चौघड़ियाः शुभ 7:52 से 9:20 तक, चर 12:16 से 1:43 तक, लाभ-अमृत 1:43 से 4:39 तक।

राहूकालः 9:00 से 10:30 तक। सूर्योदय 6:24, सूर्यास्त 6:07

मेष
आर्थिक/वित्तीय मामलों में आ रही परेशानियां दूर होने लगेगी। संभावित धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी।

सिंह
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

धनु
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। अटके हुए कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

वृष
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

कन्या
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है। संभावित धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। मनोरंजन पर धन खर्च हो सकता है।

मकर
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। आज धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

मिथुन
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

तुला
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन हो सकता है। आर्थिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

कुंभ
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनःस्थिति में सुधार होगा। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। आज आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं।

वृश्चिक
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

मीन
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा। आज अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है।

जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

उदयपुर

Rashtradoot

फोनः- 2418945 फैक्सः- 0294-2410146 वर्षः 32 संख्याः 333 प्रभात उदयपुर, शनिवार 4 अक्टूबर, 2025 आर.जे. 7202 पृष्ठ 8 मूल्य 2.50 रु.

''आई लव मोहम्मद'' अभियान के विरोध या समर्थन का कोई असर नहीं दिख रहा है बिहार के चुनाव में

यह इस बात की पुष्टि करता है कि सदा से ही बिहार की राजनीति में धर्म से ज्यादा जाति असरदार है

-श्रीनंद झा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 3 अक्टूबर। क्या उत्तर प्रदेश का 'आई लव मुहम्मद' अभियान भाजपा द्वारा इस तरह रचा गया था कि बिहार में चुनावी माहौल को सांप्रदायिक बनाया जा सके?

इसी तरह की कई साज़िश की थ्योरी सामने आ रही हैं, खासकर बरेली के मौलाना तौकीर रज़ा ख़ान की गिरफ्तारी और उनके, उनके सहयोगियों व परिवार पर जिला प्रशासन की बुलडोज़र कार्रवाई के बाद।

बिहार की राजनीति पर हिंदुत्व की राजनीति का कोई बड़ा असर अब तक नहीं पड़ा है। यहाँ धर्म से अधिक, जाति ही राजनीतिक पहचान का मुख्य आधार रही है। लेकिन अतीत में कुछ इलाकों में सांप्रदायिक ध्रुवीकरण ने भाजपा को चुनावी लाभ ज़रूर दिया है।

- जैसा कि विदित है कि मौलाना तौक़ीर रज़ा खान ने गत माह आई लव मोहम्मद अभियान शुरु किया था, जो महाराष्ट्र, उत्तराखंड और गुजरात में भी पहुँचा।
- इसके जवाब में हिन्दुवादी ग्रुप्स ने ''आई लव महादेव'', ''आई लव राम'' पोस्टर वॉर छेड़ा। राजनीति टीकाकारों के अनुसार, इन दोनों अभियानों का ज्यादा असर इसलिये नहीं हुआ, क्योंकि तौक़ीर रज़ा खान को यू.पी. का असदुद्दीन ओवैसी समझा जाता है, जो सांप्रदायिक भावनाओं को भड़का कर अपने वक्तव्यों से ध्रुवीकरण करते हैं और इसका फायदा भाजपा को ही मिलता है।
- यह भी कहा जाता है कि मौलाना तौक़ीर रज़ा खान बरेली के भाजपा नेता संतोष गंगवार के नज़दीकी हैं और एक वरिष्ठ भाजपा नेता ने ही जेल से रिहाई के लिए उनकी जमानत की व्यवस्था कराई थी।
- बिहार के सीमांचल क्षेत्र में, जहाँ मुस्लिम मतदाता काफी संख्या में हैं, जरुर ओवैसी की पार्टी को, जो सभी सीटों पर लड़ने की घोषणा कर चुके हैं, कुछ लाभ मिल सकता है, क्योंकि वे मौलाना के पक्ष में अच्छी खासी बयानबाजी कर रहे हैं।

पिछले महीने कानपुर में अल्पसंख्यकों पर पुलिस की कार्रवाई और 'आई लव मुहम्मद' पोस्टर लगाने वालों पर रोक के बाद विरोध प्रदर्शन शुरू हुए। मौलाना तौकीर रज़ा ख़ान ने इनका नेतृत्व किया, जिसके चलते आंदोलन महाराष्ट्र, उत्तराखंड और गुजरात तक फैल गया। इसके जवाब में हिंदू संगठनों ने 'आई लव महादेव', 'आई लव राम' और यहाँ तक कि 'आई लव बुलडोज़र' जैसे पोस्टरों के साथ मुहिम छेड़ दी।

इस पोस्टर राजनीति ने माहौल को

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

पुतिन ने मोदी को साहसी नेता बताया

सोची, 03 अक्टूबर। रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने गुरुवार को अमेरिका पर निशाना साधते हुए कहा कि भारत किसी प्रकार का अपमान बर्दाश्त नहीं करेगा।

पुतिन ने काला सागर के तट पर स्थित रूस के सोची शहर में आयोजित वाल्दाई इंटरनेशनल डिस्कशन क्लब के मंच पर बोलते हुए कहा, ''भारत और चीन अपमान बर्दाश्त नहीं करेंगे।'' रूसी राष्ट्रपति का इशारा हाल ही में अमेरिका द्वारा भारत पर 25 प्रतिशत आयात

- उन्होंने कहा अब भारत पुराना भारत नहीं, अब वो किसी तरह का तिरस्कार बर्दाश्त नहीं करेगा।

शुल्क लगाने और रूस से तेल आयात बंद नहीं करने के कारण 25 प्रतिशत अतिरिक्त शुल्क लगाने के फैसले की ओर था।

रुसी राष्ट्रपति ने मोदी को साहसी नेता बताया और कहा कि, ''भारत अब पुराना भारत नहीं रहा, अब वो किसी तरह का तिरस्कार बर्दाश्त नहीं करेगा।'' पुतिन ने कहा, ''अगर भारत रूस से तेल आयात बंद कर देता है तो इसे बहुत घाटा होगा। पुतिन ने भारतीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व पर भरोसा जताते हुए कहा कि वे व्यक्तिगत तौर पर जानते

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

अब तक रूस की सीमा से लगते देश ही ''आतंकित'' थे रूस की आक्रामक कार्यवाही से

पर, अब रूस ने ड्रोन की उड़ानों से व एयर स्पेस उल्लंघन से मध्य यूरोप को भी डराना शुरु कर दिया है

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 3, अक्टूबर। पश्चिमी यूरोप अब दिन-ब-दिन छद्म युद्ध की मार को तेजी से महसूस कर रहा है, जिससे उसकी जरूरी और अहम सेवाएँ अलग-अलग समयावधि के लिए ठप हो रही हैं। सबसे बड़ी दिक्कत यह है कि इस बिगड़ती स्थिति का सामना कैसे किया जाए, इसका कोई स्पष्ट रास्ता नजर नहीं आ रहा।

अब तक ऐसे हमले रूस की सीमा से लगे देशों में हो रहे थे, लेकिन अब गुप्त हमले धीरे-धीरे मध्य यूरोप तक पहुँचने लगे हैं।

कल म्यूनिख हवाईअड्डे को उस समय कई घंटों तक बंद करना पड़ा, जब वहाँ आसपास बड़ी संख्या में ड्रोन देखे गए। उड़ानें बाधित हो गईं और भारी संख्या में यात्री परेशान हुए। सबसे पहले पोलैण्ड में बिना अनुमति उड़ रहे ड्रोन देखे गए थे, जिन्हें पोलिश सेना ने गिरा दिया था। अब ऐसी घटनाएँ लगातार बढ़ रही हैं।

पोलैंड की घटना के बाद, कोपनहेगन हवाईअड्डे को भी ड्रोन की

- सबसे पहले ये ड्रोन की उड़ानें पोलैण्ड में देखी गई थीं। इसके बाद कोपनहेगन, डैनमार्क, एस्टोनिया में भी हुई हैं।
- इन उड़ानों से कई जगह एयरपोर्ट उड़ाने विलंबित हुई हैं। ऐसी घटना दो साल पूर्व हुई थी, जिसमें नॉथ सी में गैस पाइपलाइन को दुर्घटनाग्रस्त किया गया था।
- लंदन की बहुप्रतिष्ठित पत्रिका इकॉनमिस्ट ने इस घटनाक्रम पर टिप्पणी करते हुए कहा कि सारी आपसी बातचीतों के बावजूद भी अभी तक रूस के खिलाफ कॉमन फ्रंट बनाकर खड़े होने की क्षमता नहीं बनी है। यूरोप को यह भी भय है कि अगर अभी रूस की डराने वाली कार्यवाही नहीं रोकी गई तो रूस की हिम्मत बढ़ती जायेगी। कुछ रूसी भाषी अल्पसंख्यकों की सहायता से वो रूस पर अपना आधिपत्य बढ़ाता जाएगा।

वजह से बंद करना पड़ा। इसके बाद डेनमार्क का बिजनेस एयरपोर्ट भी आसपास ड्रोन उडानों से प्रभावित हुआ। एस्टोनिया में रूसी लड़ाकू विमान उसके हवाई क्षेत्र में 12 मिनट तक उड़ान भरते हुए देखे गए।

ड्रोन के अलावा, यूरोप में जरूरी सेवाओं को बाधित करने वाली घटनाएँ भी बढ़ रही हैं। करीब दो साल पहले उत्तरी सागर में एक बड़ी गैस पाइपलाइन को समुद्र की सतह के नीचे क्षतिग्रस्त पाया गया।

सभी आरोपों की उंगली रूस की

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'भारतीय कंपनियां ''क्रोनीइज़्म'' से नहीं मेहनत और इनोवेशन से भी जीत सकती हैं'

लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने भारत में पूरी लोकतांत्रिक व्यवस्था पर एक ही कंपनी के एकाधिकार की कड़ी आलोचना करते हुए यह टिप्पणी की

- डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 3 अक्टूबर। पूरी अर्थव्यवस्था पर तीन-चार बड़ी कंपनियों के एकाधिकार की धारणा की आलोचना करते हुए कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने आज कहा कि दोपहिया वाहन निर्माता बजाज, हीरो और टीवीएस कोलंबिया में बेहतरीन प्रदर्शन कर रही हैं, जो यह साबित करता है कि भारतीय कंपनियां नवाचार (इनोवेशन) के दम पर सफल हो सकती हैं, न कि भाई-भतीजावाद (क्रोनीइज़्म) के जरिए।

दक्षिण अमेरिका के चार देशों के दौरे पर कोलंबिया पहुंचे राहुल गांधी ने 'एक्स' पर अपनी एक तस्वीर पोस्ट की

- दक्षिण अमेरिका के कोलंबिया में हीरो, बजाज और टीवीएस का काम काज देखकर राहुल ने खुशी जताई और एक्स पर एक फोटो भी पोस्ट की, जिसमें वे एक बजाज पल्सर मोटर साइकिल के साथ खड़े दिख रहे हैं। उन्होंने कोलंबिया में भारतीय कंपनियों को शानदार प्रदर्शन के लिए बधाई दी।
- कोलंबिया की इआईए युनिवर्सिटी, मैडलीन में विद्यार्थियों के साथ एक संवाद में राहुल ने सत्ता के विकेन्द्रीकरण पर जोर दिया और कहा कि पूरे आर्थिक ढांचे को एक ही व्यक्ति के हाथ में नहीं सौंपा जाना चाहिए।

है, जिसमें वे एक बजाज पल्सर मोटरसाइकिल के सामने खड़े हुये हैं।

लोकसभा में विपक्ष के नेता ने

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

मुख्यमंत्री ने 3 प्रतिशत महँगाई भत्ता बढ़ाया

जयपुर, 03 अक्टूबर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने इस माह दीपावली के त्यौहार से पहले राज्य कार्मिकों को महंगाई भत्ते में 3 प्रतिशत वृद्धि का उपहार दिया है। पेंशनर्स को भी महंगाई राहत में 3 प्रतिशत वृद्धि देय होगी।

मुख्यमंत्री ने शुक्रवार को इस संबंध में वित्त विभाग के प्रस्ताव का

- राज्य कर्मियों और पेंशनरों को 1 जुलाई 25 से बढ़ा हुआ महँगाई भत्ता मिलेगा।

अनुमोदन किया। अब प्रदेश में सातवें वेतनमान के अंतर्गत राज्य कर्मचारियों एवं पेंशनर्स को 1 जुलाई 2025 से 55 प्रतिशत से बढ़ाकर 58 प्रतिशत महंगाई भत्ता अथवा मंहगाई राहत देय होगी।

इस निर्णय से लगभग 8 लाख कार्मिक एवं 4.40 लाख पेंशनर्स लाभान्वित होंगे। पंचायत समिति तथा जिला परिषद के कर्मचारियों को भी इस बढ़ोतरी का फायदा मिलेगा।

एयर चीफ मार्शल ने प्रैस कॉन्फ्रैंस में बताया कि ऑपरेशन सिंदूर में कैसे पाकिस्तान को हराया भारत ने

एयर चीफ मार्शल ए.पी. सिंह ने कहा, पूरी दुनिया ने भारतीय वायु सेना की ताकत देखी

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 3, अक्टूबर। एयर चीफ मार्शल ए.पी. सिंह ने शुक्रवार को एक प्रेस कॉन्फ्रैंस में कहा कि ऑपरेशन सिंदूर के दौरान भारत द्वारा 4 से 5 पाकिस्तानी लड़ाकू विमान, अमेरिकी एफ-16 और चीनी जेएफ-17 को मार गिराया गया। उन्होंने कहा कि अगस्त में की गई प्रारंभिक टिप्पणी के बाद अब और स्पष्ट विवरण साझा किए जा रहे हैं।

उन्होंने यह भी बताया कि विश्व ने भारतीय वायुसेना की ताकत देखी। भारतीय वायुसेना ने पाकिस्तान और पाकिस्तान-अधिकृत कश्मीर में स्थित 9 आतंकवादी शिविरों और ठिकानों को भी निशाना बनाकर सफलतापूर्वक ध्वस्त किया।

वायुसेना प्रमुख ने बताया, ''हमारे पास यह प्रमाण है कि ऑपरेशन सिंदूर के दौरान एक अवाक्स (एयरबोर्न अर्ली वॉर्निंग सिस्टम) एयरक्राफ्ट और 4 से 5 फाइटर जेट्स को हवा में ही नष्ट किया गया। कुल मिलाकर 6 पाकिस्तानी विमान हमारी कार्रवाई में तबाह हुए।''

इसके अलावा, भारतीय मिसाइल

- उन्होंने बताया, हमारी सेना ने पाकिस्तान के 5 लड़ाकू विमानों के साथ एक ''अर्ली वॉर्निंग एण्ड कंट्रोल प्लेन'' नष्ट किया था और यही नहीं अमेरिका में बने सी-130 विमान, जिसे ''हरक्युलिस'' कहा जाता है, को भी नष्ट किया है।
- सिंह ने बताया, ''अर्ली वॉर्निंग एण्ड कंट्रोल प्लेन'' को 300 किलोमीटर दूर से सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइल से निशाना बनाया गया, जो अब तक का सबसे लंबी दूरी का निशाना है।
- उन्होंने कहा, हमारे हर हमले के हमारे पास पुख्ता सबूत हैं। पर, पाकिस्तान जो भारतीय राफेल गिराने के जो दावे कर रहा है, वह सिर्फ झूठा प्रचार है, जो वह अपनी जनता को मूर्ख बनाने के लिए कर रहा है।

हमलों ने पाकिस्तानी रडार सिस्टम, कमांड एंड कंट्रोल सैंटर, रनवे, हैंगर और अन्य सैन्य ढांचों को भी निशाना बनाकर निष्क्रिय कर दिया।

उन्होंने यह भी बताया कि हो सकता है कि सी-130 क्लास का एक अमेरिकी सैन्य ट्रांसपोर्ट विमान, जिसे ''हर्क्यूलिस'' कहा जाता है, वह भी निशाना बना हो।

उन्होंने कहा, ''पाकिस्तान के नुकसान की बात करें तो हमने उनके कई एयरफील्ड्स और सैन्य ठिकानों पर हमले किए। इसमें चार स्थानों पर रडार, दो स्थानों पर कमांड एंड कंट्रोल सैंटर, और दो रनवे क्षतिग्रस्त हुए। तीन विभिन्न एयरबेस पर तीन हैंगर भी नष्ट हुए,'' उन्होंने कहा।

एयर चीफ ने बताया कि एक एईडब्ल्यु एण्ड सी या इलैक्ट्रॉनिक इन्टैलिजैंस विमान को 300 किलोमीटर से अधिक दूरी से निशाना बनाकर मार गिराया गया, जो अब तक का सबसे लंबी दूरी का सतह से हवा में

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

सोनम वांगचुक की रिहाई के लिये सुप्रीम कोर्ट में याचिका

नयी दिल्ली, 03 अक्टूबर। राष्ट्रीय सुरक्षा कानून (एनएसए) के तहत गिरफ्तार सोनम वांगचुक की पत्नी गीतांजलि जे. अंगमो ने उनकी रिहाई के लिए उच्चतम न्यायालय का दरवाजा खटखटाया है।

अंगमो ने संविधान के अनुच्छेद 32 के तहत बंदी प्रत्यक्षीकरण याचिका

- वांगचुक की पत्नी की याचिका पर दशहरा की छुट्टियों के बाद सुनवाई होगी।

गुरुवार को दायर कर अपने पति की गिरफ्तारी को अवैध बताया है।

उन्होंने अपनी याचिका में अपने पति पर एनएसए लगाने पर सवाल उठाते हुए दावा किया कि उनकी ''गिरफ्तारी अवैध और नियमों का उल्लंघन है।'' उन्होंने यह भी कहा कि गिरफ्तारी के बाद उनके पति से कोई संपर्क नहीं हो पाया।

गौरतलब है कि वांगचुक राजस्थान

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

अमेरिका के शटडाउन का असर धीरे-धीरे सरकारी कर्मचारियों और जनता को महसूस होने लगा

केन्द्रीय सरकार के साढ़े सात लाख कर्मचारियों को अगले सप्ताह पे चैक नहीं मिलेगा और उन्हें अपनी बचत भुनाकर रोज़मर्रा का खर्चा चलाना पड़ेगा

-सुकुमार साह-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 3 अक्टूबर। वॉशिंगटन में बजट पर गतिरोध अब एक पूर्ण अमेरिकी सरकारी शटडाउन में तब्दील हो गया है, जिससे लाखों अमेरिकियों को वित्तीय अनिश्चितता, ठप्प सेवाओं और भविष्य को लेकर बढ़ती चिंता का सामना करना पड़ रहा है।

राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप और कांग्रेस के बीच वार्ता विफल होने के बाद अमेरिकी संघीय फंडिंग की अवधि समाप्त हो गई है। सांसद एक अस्थायी फंडिंग प्रस्ताव पर सहमति नहीं बना सके, जिससे सरकारी एजेंसियों को अपने कामकाज रोकने या सीमित करने के लिए मजबूर होना पड़ा।

करीब साढ़े सात लाख संघीय कर्मचारियों के लिए यह शटडाउन अनिवार्य अवकाश (फर्लो) है, जिसका अर्थ है कि, जब तक कोई फंडिंग बिल पास नहीं होता, तब तक बिना वेतन घर बैठना पड़ेगा। जरुरी सेवाओं से जुड़े कर्मचारी, जैसे सेना के जवान, बॉर्डर एजेंट और एयरपोर्ट कंट्रोलर, को बिना वेतन काम करना होगा। अगले सप्ताह तक, कई कर्मचारियों को अपना पहला वेतन नहीं मिल पाएगा, जिससे परिवारों को अपनी बचत को खर्च करना पड़ेगा या कर्ज़ लेना पड़ सकता है।

इस शटडाउन के प्रभाव पहले ही दिखने लगे हैं। हवाई यातायात यूनियनों ने स्टाफ की कमी को लेकर चेतावनी दी है, जिससे उड़ानों की सुरक्षा प्रभावित हो सकती है। राष्ट्रीय उद्यान, संग्रहालय और कई सार्वजनिक सेवाएं- जैसे पासपोर्ट कार्यालय और छोटे व्यवसायों के लिए लोन डेस्क आदि अपने दरवाजे बंद कर रहे हैं। सेवानिवृत्त नागरिकों, पूर्व सैनिकों और ग्रामीण इलाकों में सरकारी सहायता पर निर्भर परिवारों के लिए यह शटडाउन पहले से ही कठिन आर्थिक स्थिति में मुश्किले बढ़ा रहा है।

इस बार का संकट पहले के शटडाउन की तुलना में ज्यादा गंभीर है, क्योंकि वाइट हाउस की ओर से स्थायी

- जब तक बजट प्रस्ताव सीनेट से पारित नहीं होता, बिना तनख्वाह के छुट्टी पर जाने को मजबूर होना पड़ेगा। रिटायर्ड कर्मचारी, पूर्व सैनिक व ग्रामीण परिवार, जो सरकारी मदद पर निर्भर हैं, उनके जीवन में आर्थिक तनाव और बढ़ जायेगा।
- साधारण नागरिक के लिए नैशनल पार्क, म्यूज़ियम व अन्य पब्लिक सेवाएँ, यहाँ तक कि एयरपोर्ट व हवाई सेवा भी सुरक्षाकर्मियों के अभाव में अस्त-व्यस्त होनी शुरु हो गई हैं।

छंटनी के संकेत दिए जा रहे हैं। प्रेस सचिव कैसेलीन लेविट ने कहा कि एजेंसियां अब यह समीक्षा कर रही हैं कि ''कहां-कहां छंटनी सन्निकट है,'' जिससे यह आशंका बढ़ गई है कि कई कर्मचारी अब अपनी नौकरियों पर वापस नहीं लौट पाएंगे।

सरकार इस फंडिंग अवरोध का इस्तेमाल अपने खर्च प्राथमिकताओं नया रुप देने के लिए कर रही है। ऊर्जा विभाग ने घोषणा की है कि वह स्वच्छ ऊर्जा से जुड़ी परियोजनाओं को बंद कर रहा है- खासकर डेमोक्रेटिक पार्टी द्वारा शासित राज्यों में। वहीं, परिवहन विभाग ने न्यूयॉर्क के लिए 18 अरब के इन्फ्रास्ट्रक्चर ग्रांट्स को फ्रीज कर दिया है। आलोचकों ने इन फैसलों को राजनीतिक बदले की कार्रवाई कहा है।

यह गतिरोध हैल्थकेयर फंडिंग सीनेट डेमोक्रेट्स कम आय वाले परिवारों के लिए सब्सिडी बढ़ाना चाहते हैं, जबकि रिपब्लिकन किसी भी नए खर्च का विरोध कर रहे हैं और डेमोक्रेट्स पर आरोप लगा रहे हैं कि वे यह पैसा अवैध प्रवासियों को देने की कोशिश कर रहे हैं - जिसे डेमोक्रेट्स ने सिरे से नकारा है। बिना द्विदलीय समर्थन के, सीनेट 60 वोटों की आवश्यक संख्या जुटा नहीं पा रही है, जिससे कोई भी अल्पकालिक समाधान भी असंभव हो गया है।

आम अमेरिकी नागरिकों के लिए, यह शटडाउन वॉशिंगटन की राजनीतिक विफलता की एक कड़वी याद दिलाता है। रोज़मर्रा की सुविधाएं - जैसे परमिट रिन्यू कराना या राष्ट्रीय उद्यानों की सैर - अब बंद हैं। जिन संघीय कर्मचारियों की ज़िंदगी महीने की तनख्वाह पर टिकी है, उनके लिए यह स्थिति बेहद कठिन है।

वॉशिंगटन में घूमने आए एक सेवानिवृत्त व्यक्ति ने कहा, जो आज कई अमेरिकियों की साझा भावना बन गई है।

''समझौता किया जाता है। रास्ते निकाले जाते हैं। सबको थोड़ा-थोड़ा पीछे हटना पड़ता है।''

जहां रिपब्लिकन डेमोक्रेट्स पर यह आरोप लगा रहे हैं कि वे नीति-निर्धारण के लिए सरकार को बंधक बना रहे हैं, वहीं डेमोक्रेट्स जवाब दे रहे हैं कि ट्रंप की सार्वजनिक सेवाओं में की जा रही आक्रामक कटौतियां समाजिक सुरक्षा तंत्र को खतरे में डाल रही हैं।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'दो साल तक के बच्चों के कफ सिरप ना दें'

नयी दिल्ली, 03 अक्टूबर। मध्य प्रदेश और राजस्थान में कफ सिरप से बच्चों की मौत की रिपोर्टों को देखते हुए, केन्द्र सरकार के स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय (डीजीएचएस) ने दो

- केन्द्रीय स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय ने राजस्थान व मध्यप्रदेश में कफ सिरप पीने से हुई छोटे बच्चों की मौतों के मद्देनज़र यह निर्देश दिया।

साल तक के बच्चों को कफ सिरप न देने का निर्देश दिया है।

महानिदेशालय की ओर से शुक्रवार को सभी राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों के स्वास्थ्य सेवा निदेशकों को जारी परामर्श में कहा है कि बच्चों में आम तौर से होने वाली खांसी अपने-आप ठीक हो जाती है और किसी दवाई की जरूरत नहीं होती। उसने कहा है कि दो साल से कम उम्र के बच्चों को सर्दी और खांसी की दवा नहीं दी जानी

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

महिला और उसके प्रेमी की हत्या पति और चचिया ससुर व दामाद ने की

जिला पुलिस अधीक्षक सोनवाल ने प्रेस वार्ता कर मामले की जानकारी दी

करौली (निसं)। लांगरा थाना क्षेत्र के जंगलों में गत दिनों एक महिला और एक युवक के मृत अवस्था में मिलने के मामले को पुलिस प्रशासन ने गंभीरता से लेते हुए महिला के पति और चचिया ससुर एवं दामाद को हत्या के आरोप में गिरफ्तार कर मामले का मात्र 24 घंटे में खुलासा किया।

■ **लांगरा थाना क्षेत्र के जंगलों में गत दिनों एक महिला और एक युवक के मृत अवस्था में मिलने के मामले को पुलिस प्रशासन ने गंभीरता से लेते हुए महिला के पति और चचिया ससुर एवं दामाद को हत्या के आरोप में गिरफ्तार कर मामले का 24 घंटे में खुलासा किया**

जिला पुलिस अधीक्षक लोकेश सोनवाल ने प्रेस वार्ता कर मामले का खुलासा करते हुए बताया कि गत 30 सितंबर को टेलीफोन पर सूचना मिली कि कुमरावतपुरा के जंगलों में एक महिला और एक युवक की लाश पडी हुई है जिस सूचना पर लांगरा थाना अधिकारी लाल बहादुर मीणा पुलिस जाप्ता के रवाना होकर मौके पर पहुंचे जहां पुलिस को एक महिला और एक युवक की क्षत विक्षत हालत में लास पडी मिली वही मौके पर बिना नंबरी एक मोटरसाइकिल भी मिली ।

उन्होंने बताया कि वहीं इससे पूर्व महिला रंजीता के पति भूरा मीणा ने 27 सितम्बर को लांगरा थाने पर अपनी पत्नि कि गुमषुदगी कि रिपोर्ट दर्ज कराई थी। मौके से थाना अधिकारी ने भूरा मीणा और उनके परिजनों को मृतक महिला और युवक की पहचान के लिए बुलाया गया जहां भूरा मीणा निवासी सांतलपुर ने महिला की रंजीता मीणा की अपनी पत्नी होने की पहचान की और युवक की पहचान मृतक के पिता भंवरलाल मीणा ने निरंजन उर्फ रिंकू मीणा निवासी सांतलपुर कि अपने पुत्र के रूप में पहचान की जिला पुलिस अधीक्षक ने बताया कि पुलिस महानिरीक्षक भरतपुर रेंज भरतपुर के कैलाश चंद्र बिश्नोई के निर्देशन में और जिला पुलिस अधीक्षक लोकेश सोनवाल के नेतृत्व में हत्या एवं हत्या का प्रयास करने वाले अपराधियों के विरूद्ध आपरेशन हंता अभियान के तहत ब्लाइंड मर्डर का लांगरा पुलिस ने 24 घंटे में खुलासा करते हुए तीन हत्या के आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है ।

उन्होंने बताया कि इस मामले में 3 अक्टूबर को मृतक युवक के पिता भंवरलाल मीणा निवासी सांतलपुर ने मुकदमा दर्ज कराते हुए खुलासा किया कि मेरा पुत्र निरंजन उर्फ रिंकू 35 और रंजीता पत्नी भूरा मीणा के बीच करीब 8,10 वर्ष से प्रेम संबंध होने के कारण आपस में बातचीत करते थे मृतक युवक के पिता ने रिपोर्ट में बताया कि मेरा पुत्र निरंजन उर्फ रिंकू और रंजीता में प्रेम संबंध होने के कारण उसके पति भूरा मीना पुत्र लक्खू और चचिया ससुर एवं कमल मीणा पुत्र जगन मीणा निवासी सांतलपुर एवं रामकेश उर्फ पप्पी पुत्र शिव सिंह मीणा निवासी भाँकरी ने अन्य के साथ मिलकर षड्यंत्र रचकर इन लोगों ने मेरे पुत्र निरंजन उर्फ रिंकू ब रंजीता की हत्या कर दोनों की लाश को सबूत मिटाने व अपराध को छुपाने की नीयत से कुमरावतपुरा के जंगल में छुपा दिया और हत्या को आत्महत्या में बदलने की नीयत से सेलफोस की डिबिया डाल दी उन्होंने बताया कि रिपोर्ट पर मुकदमा दर्ज कर सभी एंगलों से मामले का अनुसंधान जारी किया जिस मामले में मात्र 24 घंटे में लांगरा थाना पुलिस ने महिला के पति भूरा मीणा और चचिया ससुर कमल मीणा एवं दामाद रामकेश उर्फ पप्पी मीणा को गिरफ्तार किया जिला पुलिस अधीक्षक ने बताया कि मामला प्रेम प्रसंग का निकला जो पिछले लंबे समय से आपस में चल रहा था ।

उन्होंने बताया कि इस पूरे प्रकरण में पुलिस महानिरीक्षक भरतपुर रेंज भरतपुर के कैलाश चंद बिश्नोई के निर्देशन में लांगरा थाना अधिकारी लाल बहादुर मीणा और मासलपुर थाना अधिकारी वासुदेव प्रसाद के नेतृत्व में शिवचरण हेड कांस्टेबल, सत्येंद्र अवस्थी, ऋषिकेश, जितेंद्र, विश्राम, मुकेश ,अभय कमांड के राजेंद्र ,कांस्टेबल और विश्वेंद्र सिंह की टीम ने तत्परता से कार्य करते हुए मामले का खुलासा किया है ।

उन्होंने बताया कि खास तौर से इसमें विशेष भूमिका आरोपियों की गिरफ्तारी में सत्येंद्र अवस्थी कांस्टेबल और ऋषिकेश मीणा कांस्टेबल की रही है जिला पुलिस अधीक्षक ने बताया कि इस प्रकरण में अन्य वांछित आरोपियों की तलाश जारी है प्रेस वार्ता के दौरान अतिरिक्त जिला पुलिस अधीक्षक गुमनाराम, पुलिस उपाधीक्षक अनुज शुभम, लांगरा थाना प्रभारी लाल बहादुर मीणा और मासलपुर थाना अधिकारी वासुदेव प्रसाद उपस्थित थे।

पुलिस वाहन दुर्घटना में 3 जवान गंभीर रूप से घायल

मदनगंज-किशनगढ़,(निस)। जयपुर हाइवे मार्ग पर रात्रि को पशु को बचाने के लिये अनियंत्रित होकर पुलिया से टकराने से पुलिस वाहन में सवार 3 पुलिसकर्मी गंभीर रूप से घायल हो गये। तीनो की स्थिति चिंताजनक होने पर तत्काल अजमेर रेफर कर दिया, किंतु हैंड कांस्टेबल उमराव भादू की स्थिति बेहद नाजुक होने पर जयपुर रेफर कर दिया। दुर्घटना इतनी भीषण थी की वाहन का अगला हिस्सा चकनाचूर होकर कबाड में तब्दील हो गया और स्टीयरिंग व टायर वाहन से अलग होकर दूर जा गिरे। दुर्घटना

■ **दो को जयपुर रेफर किया, पशु को बचाने के चक्कर में अनियंत्रित होकर वाहन पुलिया से टकराया**

की इतला मिलते ही पुलिस अधिकारियों ने जेएलएन हॉस्पिटल अजमेर पहुंचकर घटना की जानकारी ली। रात्रि को किशनगढ सिटी थाने में तैनात हैंड कांस्टेबल गांव तिलोनिया निवासी उमराव भादू (40), गांव नोहरिया निवासी कांस्टेबल पप्पू गुर्जर (32) व गांव साखून निवासी वाहन चालक सुरेन्द्र खोजी (32) वाहन से पेट्रोलिंग कर रहे थे। इसी दौरान रात्रि करीब 3.30 बजे भेरू जी पुलिया के पास पशु को बचाने के चक्कर में पुलिस वाहन अनियंत्रित होकर पुलिया से जा टकराया। दुर्घटना में घायल उपरोक्त तीनो जवानो को जेएलएन हॉस्पिटल अजमेर में भर्ती कराया, किंतु उमराव भादू चौधरी सहित दो जवानो की स्थिति चिंताजनक होने पर जयपुर रेफर कर दिया।

विश्वास में लेकर महिला को थमाई नकली सोने की चेन

अजमेर, 03 अक्टूबर (कासं)। शहर में नकली सोना देकर लाखों रुपए की ठगी का मामला सामने आया है। बदमाशों ने महिला को विश्वास में लेकर उसे जाल में फंसाया और फिर बस स्टैंड पर बुलाकर नकली सोना देकर करीब 3 लाख रुपए हड़प लिए। मामले की शिकायत पर सिविल लाइन थाना पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। पुलिस के अनुसार ब्यावर निवासी चंद्रकांता जांगिड़ ने दर्ज रिपोर्ट में बताया कि 20 सितंबर को दो व्यक्ति और एक

■ **शातिरों ने हड़पे 3 लाख रुपए पीडिता ने कराया मुकदमा दर्ज**

महिला उसकी दुकान पर आए और सोना बेचने की बात कही, उन्होंने सोने की माला का एक मोती तोडक़र दिया, जो असली निकला। कुछ दिनों बाद आरोपी फिर आए और चांदी का सिक्का भी चेक करने के लिए दिया। सिक्का और माला का मोती दोनों असली पाए गए। विश्वास में लिया महिला को, बस स्टैंड पर हुआ सौदा- महिला ने बताया कि आरोपी लगातार संपर्क में थे। एक अक्टूबर को उन्होंने महिला को अजमेर बस स्टैंड बुलाया और मोतियों की माला थमाई। भरोसे में आकर महिला ने उन्हें 3 लाख रुपए दे दिए, लेकिन घर जाकर जब माला की जांच करवाई गई तो सोना नकली निकला। सिविल लाइन थाना पुलिस ने शिकायत दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। पुलिस आरोपियों की तलाश कर रही है ।

पूरे देश में वोट चोर गद्दी छोड़ अभियान के पक्ष में जबरदस्त माहौल है : जितेंद्र सिंह

कल देश में रावण को जलाया था लेकिन आज भी बुराइयां हमारे बीच है, अब भाजपा सरकार के अहंकार को जलाना पड़ेगा : जूली

अलवर । वोट चोर गद्दी छोड हस्ताक्षर अभियान के तहत कठूमर में पूर्व केंद्रीय मंत्री जितेंद्र सिंह एवं नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली जमकर बरसे। कांग्रेस के दोनों नेताओं ने केंद्र और राज्य सरकार पर निशाना साधा।

पूर्व केंद्रीय मंत्री जितेंद्र सिंह बोले डबल इंजन की सरकार का अब कहीं पहिया भी नजर नहीं आ रहा है। उन्होंने कहा कि माफिया सरकार देश के किसानों और गरीबों को लूटने की योजना बनाकर आई है। उन्होंने कहा कि पूरे देश में वोट चोर गद्दी छोड अभियान के पक्ष में जबरदस्त माहौल है।

अलवर में वोट चोर गद्दी छोड़ हस्ताक्षर अभियान के तहत कठूमर में पूर्व केंद्रीय मंत्री जितेंद्र सिंह भाजपा पर जमकर बरसे।

सिंह बोले लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने पूरे देश को दिखाया कि किस तरह भारतीय जनता पार्टी मृतक का भी वोट डलवाकर कुर्सी हासिल करना चाहती है, जिसके लिए भारतीय चुनाव आयोग भाजपा के कार्यकर्ता के रूप में काम कर रहा है। उन्होंने कहा कि संविधान निर्माता डॉ भीमराव अंबेडकर द्वारा दिए गए अधिकार को हमसे कोई छीन नहीं सकता,आज देश पर सबसे बड़ा संकट पैदा कर दिया गया है, विदेश नीति का मजाक बना कर रख दिया है। हम सभी को मिलकर इस तानाशाही के खिलाफ लडऩा होगा।

उन्होंने कहा कि यह देश का दुर्भाग्य है कि आजादी के बाद पहली बार ऐसी सरकार का मुंह देखना पड़ रहा है।

नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली बोले कल देश में रावण को जलाया था लेकिन आज भी बुराइयां हमारे बीच है अब भाजपा सरकार के अहंकार को जलाना पडेगा।उनकी तानाशाही खत्म करनी पडेगी। जूली ने कहा कि जिस जनता ने सीट पर बैठाया उतारने में भी समय नहीं लगाएगी। उन्होंने कहा कि प्रदेश की उडऩ खटोला सरकार के डिप्टी सीएम को कंडक्टर तक नहीं पहचाने,इससे बुरी इस सरकार की स्थिति और क्या होगी। हम कई बार कह चुके हैं कि प्रदेश में सरकार नहीं बल्कि सर्कस चल रहा है। जूली बोले आरएसएस के इशारे पर प्रदेश के शिक्षा मंदिरों को राजनीतिक अखाड़ा बनाने का प्रयास किया जा रहा है।

भाजपा चलाएगी जिले में 90 दिन तक आत्मनिर्भर भारत संकल्प अभियान

भीलवाड़ा। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश महामंत्री एवं आत्मनिर्भर भारत अभियान के प्रदेश संयोजक सांसद दामोदर अग्रवाल ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 2047 के विकसित भारत के लक्ष्य को पूरा करने के लिए देश का

■ **आत्मनिर्भर भारत संकल्प अभियान के तहत स्वदेशी उत्पाद व स्वदेशी जीवनमूल्यों को अपनाने पर रहेगा जोर : सांसद अग्रवाल**

आत्मनिर्भर बनना जरूरी है। इसके लिए 140 करोड़ भारतीयों को स्वदेशी अपनाने का संकल्प लेना होगा। यह देश को विश्व की तीसरी अर्थव्यवस्था के रूप में स्थापित करने की दिशा में भी महत्वपूर्ण कदम साबित होगा। भारत की आत्मनिर्भरता की झलक कोरोनाकाल में स्वदेशी वैक्सीन और ऑपरेशन सिंदूर के तहत दुश्मनों को नेस्तनाबूद करने वाले स्वदेशी हथियारों के रूप में पूरी दुनिया देख चुकी है। सांसद अठावाल भाजपा जिला कार्यालय पर जिलाध्यक्ष प्रशांत मेवाड़ा की विशिष्ट उपस्थिति में आयोजित प्रेसवार्ता को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि पीएम मोदी का आत्मनिर्भरता का आ ान देश भर में विभिन्न आयामों में गूंज रहा है। इसी के तहत भाजपा ने यह निर्णय लिया है कि पीएम मोदी का यह संदेश आत्मनिर्भर भारत संकल्प अभियान के माध्यम से देश के प्रत्येक नागरिक तक पहुँचाया जाए तथा उन्हें स्वदेशी उत्पादों के उपयोग एवं स्वदेशी मूल्यों को अपनाने का संकल्प लेने के लिए प्रेरित किया जाए । 25 सितंबर से 25 दिसंबर तक चलेगा अभियान – उन्होंने कहा कि आत्मनिर्भर भारत संकल्प अभियान 25 सितम्बर पंडित दीनदयाल उपाध्याय की जयंती से 25 दिसम्बर भारत रत्न एवं पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की जयंती तक चलेगा। अभियान की सफलता के लिए केंद्र और प्रदेश से लेकर जिला व मंडल स्तर तक टोलियों का गठन किया गया है। सांसद अग्रवाल ने कहा कि अभियान में विभिन्न सरकारी विभागों, स्थानीय निकायों, उद्योग एवं व्यापार संगठनों, व्यावसायिक एवं सामाजिक संगठनों, धार्मिक एवं सांस्कृतिक नेताओं, युवा एवं महिला संगठनों, सेलिब्रिटी एवं इन्फ्लूएंसर्स को शामिल किया जाएगा। इसके अलावा आत्मनिर्भर भारत संकल्प सम्मेलनों का आयोजन भी जिला एवं मंडल स्तर पर किया जाएगा। आत्मनिर्भर भारत संकल्प के अंतर्गत व्यापारी सम्मेलन, उद्योग सम्मेलन, प्रभातफेरी, मशाल रैली, नुक्कड़ नाटक, मेले और किसान मार्च, कॉलेजों में सेमिनार, स्कूलों में निबंध लेखन, कविता एवं चित्रकला प्रतियोगिता जैसे कार्यक्रम आयोजित किए जाना प्रस्तावित है।

भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश महामंत्री एवं आत्मनिर्भर भारत अभियान के प्रदेश संयोजक सांसद दामोदर अग्रवाल की मौजूदगी में बैठक का आयोजन हुआ।

विधायक की मौजूदगी में ऐनीकट का शिलान्यास

पावटा। शिवनगर क्षेत्र के बहुप्रतीक्षित खारवाल ऐनीकट के जीर्णोद्धार कार्य का शिलान्यास विधायक कुलदीप धनखड़ ने अपने कर-कमलों से किया। इस अवसर पर विधायक धनकड़ ने बताया कि उक्त ऐनीकट 4.50 करोड़ की राशि से स्वीकृत करवाया गया है तथा आज से इसका निर्माण कार्य प्रारंभ होगा। उन्होंने कहा कि एनीकट निर्माण के पश्चात वर्तमान की तुलना में दुगना जल संचयन संभव होगा। पक्की पाल से रिसाव की समस्या भी समाप्त होगी और एनीकट की मजबूती वर्षों तक बनी रहेगी। जल संसाधन विभाग के अधिकारियों के अनुसार, इस जीर्णोद्धार से शिवनगर जोहड़ की जल भरण क्षमता

■ **ऐनीकट 4.50 करोड़ की राशि से स्वीकृत करवाया गया है**

में उल्लेखनीय वृद्धि होगी। और एनीकट में जल लंबे समय तक स्थायी रूप से संचित रहेगा। इसकी कुल क्षमता लगभग 2 एम.सी.एफ.टी. है। इससे आसपास के क्षेत्रों में भू-जल स्तर में सुधार होगा तथा कुऐ और बोरवेल होंगे। कृषकों को सिंचाई के लिए पर्याप्त जल मिलेगा, जिससे पैदावार बढ़ेगी। साथ ही, क्षितठास्त पाल व एनीकट का पुनर्निर्माण और जंगल सफाई के कार्य भी किए जाएंगे। इस परियोजना से पशुपालकों के लिए जल उपलब्धता सुनिश्चित होगी तथा भविष्य में यह स्थल पर्यटन के लिए भी आकर्षण का केंद्र बन सकता है। कार्य के माध्यम से खेलना, कुनेड और पावटा सहित पूरे क्षेत्र की जल-संरक्षण क्षमता मजबूत होगी और कृषि विकास को बल मिलेगा। इस अवसर पर विधायक श्री कुलदीप धनखड़ ने कहा जल ही जीवन है। एनीकट व जोहड़ जैसे जल-संरक्षण कार्यों से भू-जल स्तर सुधरता है और कृषि को संजीवनी मिलती है। आने वाली पीढ़ियों के लिए जल बचाना हम सबकी जिम्मेदारी है।

सांगवान का चेयरमैन बनना लगभग तय

अलवर। अलवर सरस डेयरी मे डायरेक्टरो के हुए निर्वविरोध चुनावों के बाद अब सरस डेयरी का चेयरमैन भी निर्विरोध ही चुना जाएगा जिसमें केन्द्रीय मंत्री के पीए नितिन सांगवान इस दौड में सबसे आगे है उनका चेयरमेन बनना तय माना जा रहा है लोगों ने तो अभी से नितिन सांगवान को चैयरमेन बनने की बधाई भी देना शुरू कर दी है। अलवर सरस डेयरी के सभी 12 डायरेक्टर निर्विरोध निर्वाचित हो गए हैं। इन 12 डायरेक्टर में से एक पदाधिकारी केंद्रीय मंत्री भूपेंद्र यादव के पीए नितिन सांगवान हैं। इनमें चार महिलाएं भी डायरेक्टर चुनी गई हैं। वहीं पहली बार सरस डेयरी की कमान एक आईआईटीयन को मिल सकती है। इन 12 में से ही एक डेयरी का चेयरमैन बनेगा। अलवर व खैरथल-तिजारा से 2 लोगों ने शुक्रवार को नामांकन वापस ले लिया

था। इसके बाद डायरेक्टर के 12 पदों पर इतने ही आवेदन बचे तो सभी निर्विरोध चुने गए। सभी डायरेक्टर अब 6 अक्टूबर को अलवर सरस डेयरी का चेयरमैन चुनेंगे। माना जा रहा है कि चेयरमैन का चुनाव भी निर्विरोध हो सकता है। नितिन के पिता और दादा सेना से हुए रिटायर नितिन सांगवान 2013 से 2018 बैच के आईआईटियन हैं। उन्होंने मानेसर के हिसार से स्कूल की पढाई की है। पिता रिटायर सैनिक हैं। दादा भी सेना में रहे हैं।

सड़कों की मरम्मत औपचारिक न होकर गुणवत्तापूर्ण हो : जाजू

भीलवाड़ा। शहर की टूटी-फूटी और गहरे गड्ढों वाली सड़कों को लेकर स्थाई लोक अदालत द्वारा जारी सख्त निर्देशों के बाद नगर निगम, नगर विकास न्यास एवं संबंधित विभागों ने मरम्मत कार्य प्रारंभ कर दिया है। हालांकि, पर्यावरणविद् बाबूलाल जाजू ने इस कार्य की गुणवत्ता पर गंभीर सवाल उठाए हैं।

जाजू ने आरोप लगाया कि करोड़ों रुपए खर्च करके सड़कों के गड्ढों का पैच वर्क का कार्य गुणवत्ता मानकों के विपरीत अफरा तफरी में करके औपचारिकता निभाई जा रही है। जाजू ने बताया कि काईन हाउस के बाहर, गंगापुर चोराहा एवं तेज सिंह सर्कल पर पैंच वर्क के लिए डाली गई गिट्टी डामरीकरण से पहले ही उखड़ गई है और अनेक लोग गिरकर चोटिल हो रहे है। उन्होंने बताया कि घटिया सामग्री का

■ **जाजू ने आरोप लगाया कि करोड़ों रुपए खर्च करके सड़कों के गड्ढों का पैच वर्क का कार्य गुणवत्ता मानकों के विपरीत अफरा तफरी में करके औपचारिकता निभाई जा रही है। जाजू ने बताया कि काईन हाउस के बाहरपैंच वर्क के लिए डाली गई गिट्टी डामरीकरण से पहले ही उखड़ गई है**

उपयोग और तकनीकी मानकों की अनदेखी साफ दिखाई दे रही है। उन्होंने आशंका व्यक्त की कि इस तरह किए गए कार्यों से दीपावली के बाद पुन: सडकें उखड जाएंगी और आमजन को फिर से गड्ढों का सामना करना पडेगा। जाजू ने कहा कि उनकी याचिका पर लोक अदालत ने जिन विभागों को नोटिस जारी कर जवाब तलब किया था, उसका उद्देश्य गुणवत्तापूर्ण और टिकाऊ सडकें उपलब्ध कराना था, न कि केवल औपचारिकता निभाना। जाजू ने प्रशासन से मांग की है कि निर्माण एवं मरम्मत कार्य गुणवत्तापूर्ण ढंग से कराया जाए। साथ ही उन्होंने जिला कलेक्टर का ध्यान आकृष्ट करते हुए सुझाव दिया कि सडकों के निर्माण कार्य की विभागीय अधिकारियों से मॉनिटरिंग कराई जाए और दोषपूर्ण कार्यों के लिए जिम्मेदार अधिकारियों एवं ठेकेदारों पर सख्त कार्रवाई की जाए। उन्होंने चेतावनी दी कि यदि शहर की सडकें गुणवत्तापूर्ण नहीं बनीं तो यह स्थाई लोक अदालत के आदेशों की अवहेलना मानी जाएगी।

ब्यावर में 4 माह से लापता बच्ची का सुराग नहीं

ब्यावर (निसं)। पिछले चार माह से शहर से हुई लापता नाबालिग का आज तक भी पुलिस अथवा प्रशासन को सुराग तक का पता नहीं लग पाया। ऐसा लगने लगा है की नाबालिग को ज़मीन निगल गई या आकाश में उड़ गई । अब तो आमजन को यह भी सोचने को मज़बूर कर दिया है की क्या कहीं आरोपी और उसके घरवालों को ज़बरदस्त राजनैतिक संरक्षण तो नहीं मिला हुआ है जिसके चलते पुलिस और प्रशासन के हाथ बांध गए और पंगु हो गई ? गौरतलब है की राजस्थान उच्च न्यायालय ने आज ब्यावर पुलिस द्वारा पेश रिपोर्ट पर कड़ी आपत्ति व नाराजगी जताई व जांच बदलने का कारण पूछा।

■ **कोर्ट ने इस प्रकरण क़ो बहुत गंभीर बताया है और ब्यावर पुलिस क़ो एक सप्ताह मे सही रिपोर्ट के साथ तलब किया है, उच्च न्यायालय मे पैरवी की।प्रदीप बोहरा के सहयोग से मुख्यमंत्री निवास पर विजिलेंस टीम से मुलाक़ात की**

उच्च न्यायालय ने पुलिस द्वारा पेश पूरी रिपोर्ट क़ो तस्सली से पढ़कर ब्यावर पुलिस क़ो उल्टे पाँव रवाना किया व एक सप्ताह मे सही रिपोर्ट पेश करने का आदेश दिया है। कोर्ट ने इस प्रकरण क़ो बहुत गंभीर बताया है और ब्यावर पुलिस क़ो एक सप्ताह मे सही रिपोर्ट के साथ तलब किया है।

बच्ची की ओर से एडवोकेट देशराज कलवानिया, एडवोकेट पूनमचंद भंडारी, एडवोकेट टी एन शर्मा व एडवोकेट नीलेश बुरड़ ने उच्च न्यायालय मे पैरवी की।प्रदीप बोहरा के सहयोग से मुख्यमंत्री निवास पर विजिलेंस टीम से मुलाक़ात की । 4 माह से लापता बच्ची पर मुख्यमंत्री आवास की टीम ने भी इसे बहुत गंभीर माना। शासन सचिवालय मे किरोड़ीलाल मीणा से भी मुलाक़ात की है। बीजेपी के कद्दावर तेज तर्रार नेता व क़ृषि मंत्री डॉ किरोड़ीलाल मीणा से सकल जैन समाज के शिष्ट मण्डल ने मुलकर बातचीत की। किरोड़ीलाल मीणा ने मामला देखते ही आश्चर्य जताया व कहा कि ये काम तो मैं करूँगा....आप थोड़ी देर बैठो।

इसके बाद उन्होंने एसपी ब्यावर क़ो फ़ोन लगाया व लापता बच्ची के 4 माह बाद भी नहीं मिलने पर कड़ी नाराजगी जाहिर की। सोमवार 6 अक्टूबर 2025 क़ो मुख्यमंत्री व डीजीपी से इस सम्बन्ध मे बात करने की कहते हुवे 6 अक्टूबर क़ो पुन: जयपुर बुलाया है।

प्रतिष्ठा महोत्सव

शाहपुरा । विप्र सेना सर्व ब्राह्मण समाज द्वारा आयोजित भगवान परशुराम जी की मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव के पहले दिन हवन कार्यक्रम इस कार्यक्रम आयोजित हुए। आचार्य योगेंद्र शर्मा द्वारा विधिविधान से पूजा और हवन किया। तीन दिवसीय महोत्सव के दौरान कई कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे, जिनमें सायंकालीन भजन कीर्तन भी शामिल है। पहले दिन विप्र सेना सर्व ब्राह्मण समाज द्वारा आयोजित हवन कार्यक्रम में 11 जोड़े शामिल हुए.रात्रि भजन कीर्तन ब्राह्मण समाज द्वारा भजन कीर्तन किया गया।महोत्सव 3 अक्टूबर से 5 अक्टूबर तक मनाया जाएगा। 5 अक्टूबर को भगवान परशुराम जी की प्रतिमा की प्राण प्रतिष्ठा होगी, जिसमें एक भव्य शोभायात्रा निकाली जाएगी. इस अवसर पर जगद्गुरु निबार्कचार्य श्यामशरण देवाचार्य जी महाराज की उपस्थिति में प्रतिमा का अनावरण किया जाएगा।

स्वयंसेवकों ने विजयादशमी उत्सव मनाया

बूंदी(निसं)। विजयादशमी पर तालेड़ा में बालिका विद्यालय के खेल प्रांगण में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवकों ने बड़े उत्साह से विजयादशमी उत्सव मनाया। इस अवसर पर अमरप्रीत सिंह काकू ने कार्यक्रम की अध्यक्षता ने की। मुख्य वक्ता कोटा विभाग के शारीरिक प्रमुख दुष्यंत शर्मा रहे।

कार्यक्रम शुरू होते ही अतिथियों ने मातृशक्ति को साथ लेकर शस्त्र पूजन किया। उसके बाद परम पवित्र भगवाध्वज फहराकर सभी समाजजनों के साथ स्वयंसेवकों ने प्रणाम किया । अध्यक्ष महोदय ने सर्व हिन्दू समाज को एक जाजम पर आने पर हर्ष जाहिर किया और समाजजनों से अपने बालक

■ **संघ शताब्दी वर्ष पर महिलाओं ने बड़ी संख्या में उपस्थिति दर्ज कराई**

बालिकाओं को संघ की शाखाओं में भेजने के लिए प्रेरित करने को कहा । सभी स्वयंसेवक गणवेश पहने उत्साह के साथ उत्सव मनाते नजर आए। पंक्तिबद्ध तरीके से बैठकर सभी ने उद्बोधन सुना। पंच परिवर्तन को लेकर चल रही इस संघ यात्रा में सहयोग के लिएआव्हान किया। मुख्य वक्ता दुष्यंत शर्मा ने सर्व हिन्दू समाज को पंच परिवर्तन को लेकर चल रही संघ यात्रा के बारे में बताया और इसमें सहयोग करने का आव्हान किया । पंच परिवर्तन में कुटुंब प्रबोधन, सामाजिक समरसता, पर्यावरण संरक्षण, स्व का बोध एवं नागरिक कर्तव्य के बारे में विस्तृत जानकारियां बताई। इसमें कुटुम्ब प्रबोधन में परिवार नियोजन एवं सामूहिक भोज पर जोर दिया। सामाजिक समरसता के बारे में बताते हुए इतिहास की जानकारी देते हुए हर वर्ग को साथ रखने की अपील की। बताया की तभी संगठित रह सकते हो। पर्यावरण संरक्षण में प्लास्टिक का बहिष्कार करने की बात कही ओर उत्सव के दौरान प्लास्टिक का उपयोग नहीं होने पर कार्यकर्ताओं की सराहना की।

बनास नदी में डीएसटी ने बजरी माफिया की 2 जेसीबी, 4 ट्रैक्टर ट्रॉली व बाइक जब्त

बीगोद थाना क्षेत्र में बेख़ौफ़ बजरी माफिया लम्बे समय से सक्रिय हैं

माण्डलगढ़ के बीगोद थाना क्षेत्र में बनास नदी से डीएसटी ओर पुलिस टीम ने बजरी माफिया के अधादर्जन वाहन जब्त किए।

■ बीगोद थाना क्षेत्र में बेख़ौफ़ बजरी माफिया लम्बे समय से सक्रिय हैं

माण्डलगढ़,। माण्डलगढ़ उपखण्ड के बीगोद थाना क्षेत्र में बेलगाम बजरी माफिया पर नकेल कसने के लिए

भीलवाड़ा जिले की स्पेशल टीम(डीएसटी) ओर स्थानीय पुलिस ने बजरी माफिया पर बड़ी कार्रवाई को अंजाम दिया हैं, पुलिस की टीम बजरी माफिया के मुखबिरी किले को भेद कर गुप्त रास्ते से बनास नदी में पहुंची और अवैध बजरी खनन में लिप्त आधा दर्जन वाहनों को जब्त किया हैं।

इस कार्रवाई को लेकर बजरी माफिया में हड़कम्प मच गया हैं, बताया जा रहा हैं कि सत्तारुढ़ दल के एक सरपंच पति के संरक्षण में बड़े पैमाने पर लम्बे समय से अवैध बजरी खनन ओर परिवहन किया जा रहा था, इस मामले में ग्रामीणों ने डीएसटी को शिकायत की थी। बीगोद थाना प्रभारी जय सुल्तान कविया ने बताया कि बीगोद थाना क्षेत्र के बिलिया गाँव के पास बनास नदी में बड़े पैमाने पर अवैध बजरी खनन ओर परिवहन की सूचना डीएसटी को मिली थी, पुलिस अधीक्षक धर्मेंद्र यादव के निर्देशन में गठित टीम का वाहन बजरी माफिया तक नदी में पहुँचे की बड़ी चुनोती थी, क्योंकि बजरी माफिया गिरोह के लोगों ने नदी हर रास्ते पर अपने मुखबिर लगा रखे थे। पुलिस की टीम 5 किलो मीटर तक गुप्त रास्तों से पैदल चल कर बनास नदी में पहुंची और घेराबंदी की गई। पुलिस टीम को देख नदी में खनन कर रहे वाहन भागने लगे। मोके ओर मौजूद कुछ लोगों ने वाहनों को जब्त करने से रोकने का प्रयास भी किया था। लेकिन जिला पुलिस की विशेष टीम ओर बीगोद थाना पुलिस ने सतर्कता बरत कर मौक़े से 2 जेसीबी मशीन, 4 ट्रैक्टर ट्रॉली ओर 4 बाइक को जब्त किया गया हैं, कार्रवाई के दौरान बजरी माफिया गिरोह के लोगों ने पुलिस टीम से उलझने की कोशिश भी की गई, पुलिस ने वाहनों को जब्त कर बीगोद थाने में ला कर खड़ा किया, कार्रवाई के दौरान जेसीबी मशीनों ओर ट्रैक्टर ट्रॉलियों के चालक वाहन छोड़ कर फरार हो गए। पुलिस ने खनिज विभाग को सूचना कर वाहन मालिक ओर चालकों के खिलाफ मामला दर्ज कर कार्रवाई की जा रही हैं । गौरतलब हैं कि बडलियास, बीगोद, काछोला तक बनास नदी और जोजवा के पास बेड़च नदी में इन दिनों धड़ल्ले से बजरी का अवैध खनन ओर परिवहन किया जा रहा हैं, हर रोज सड़कों पर बजरी से ओवरलोड भरे ट्रैक्टर ट्रॉली ओर ट्रैलर,डम्पर सरपट दौड़ रहे हैं, जिससे आए दिन हादसे भी सामने आ रहे हैं, लेकिन स्थानीय पुलिस और खनिज विभाग कार्रवाई करने से कतराते नजर आ रहे है। जबकि जिले की विशेष पुलिस टीम द्वारा बजरी माफिया पर लगातार कार्रवाई की जा रही हैं।

फुलेरा थानाधिकारी चंद्रप्रकाश यादव सहित दलाल को रिश्वत लेते पकड़ा

फुलेरा। भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो मुख्यालय के निर्देश पर एसीबी जयपुर ग्रामीण इकाई की ओर से गुरुवार को दोपहर 3 बजे कार्यवाही करते हुए फुलेरा थानाधिकारी पुलिस निरीक्षक चंद्रप्रकाश यादव सहित सीएलजी सदस्य व मोबाइल विक्रेता हैप्पी माथुर को 50 हज़ार रूपये रिश्वत राशि लेते रंगे हाथों गिरफ्तार किया है।

भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो की अतिरिक्त महानिदेशक पुलिस स्मिता श्रीवास्तव ने बताया कि एसीबी जयपुर ग्रामीण को एक शिकायत मिली थी कि परिवादी के भाई को साइबर क्राइम की शिकायत में गिरफ्तार नहीं करने एवं मामला रफा-दफा करने के लिए पुलिस निरीक्षक फुलेरा थानाधिकारी चन्द्रप्रकाश यादव सहित दलाल हैप्पी माथुर जो कि सीएलजी सदस्य व मोबाइल शॉप मालिक द्वारा 70 हज़ार रूपये की मांग कर परेशान किया जा रहा है। जिस पर एसीबी जयपुर के उप महानिरीक्षक के राजेश सिंह के सुपरविजन में एसीबी जयपुर ग्रामीण के अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक सुनिलकुमार सिहाग के नेतृत्व में गुरुवार को पुलिस निरीक्षक राजकुमार शर्मा व टीम ने कार्यवाही करते हुए ट्रेप कार्यवाही करते हुए आरोपी फुलेरा थानाधिकारी चंद्रप्रकाश यादव व दलाल हैप्पी माथुर को 50 हज़ार रूपये रिश्वत राशि लेते हुए गिरफ्तार किया गया है। जानकारी अनुसार आरोपी दलाल हैप्पी माथुर 20 हज़ार रूपये रिश्वत के रूप में पहले में ही वसूल कर लिए थे। भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो ने भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम के अन्तर्गत मामला दर्ज दोनों आरोपियों से पूछताछ तथा कार्यवाही की जा रही है।

उदयपुर विकास प्राधिकरण, राजस्थान

No. :- F-2(01)Acct/Contract/2025-26/161 - 164 Date :- 01/10/2025

ई-निविदा सूचना संख्या : 45/2025-26

उदयपुर विकास प्राधिकरण, उदयपुर द्वारा निम्नलिखित कार्यो मय डिफेक्ट लाईबिलिटी अवधि के लिये जो कि निविदा प्रपत्र में अंकित है के लिये उपयुक्त श्रेणी में पंजीकृत संवेदको से निर्धारित प्रपत्र में ई-टेण्डरिंग के माध्यम से ऑनलाईन निविदा आमंत्रित की जाती है :-

निविदा कार्यो की कुल लागत	रूपये 53.16 लाख (04 कार्य)
ऑनलाईन निविदा प्रपत्र डाउनलोड / अपलोड करने की अवधि	02.10.2025 को प्रातः 10.00 बजे से 16.10.2025 को सांयः 6.00 बजे तक
Online EMD, Tender Fee & Processing Fee जमा कराने की तिथी	02.10.2025 को प्रातः 10.00 बजे से 16.10.2025 को सांयः 6.00 बजे तक
ऑनलाईन निविदा खोलने की तिथी	17.10.2025 को प्रातः 11:00 बजे

विस्तृत विवरण वेबसाईट urban.rajasthan.gov.in/uitudaipur, www.eproc.rajasthan.gov.in व www.sppp.rajasthan.gov.in पर देखा जा सकता है।

UBN No. : ITU2526SLOB00288 To ITU2526SLOB00291

अधिशाषी अभियन्ता - विद्युत
उदयपुर विकास प्राधिकरण

राज.संवाद/सी/25/11372

कार्यालय अधिशाषी अभियन्ता, सार्वजनिक निर्माण विभाग, खण्ड जालौर

क्रमांक-अअ/जा/2025-26/1960 दिनांक-23.09.2025

अल्पकालीन सूचना संख्या-14 वर्ष 2025-26

NIB NO. PWD2526A3473

राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से अटल प्रगति पथ व भवन निर्माण कार्य हेतु उपयुक्त श्रेणी में सार्वजनिक निर्माण विभाग राजस्थान में पंजीकृत संवेदकों एवं राज्य सरकार/केन्द्र सरकार के अधिकृत संगठनों/केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग/डाक एवं दूर संचार विभाग/रेल्वे इत्यादि में पंजीकृत संवेदकों, जो कि राजस्थान सरकार के उपयुक्त श्रेणी के संवेदकों के समकक्ष हो, से निर्धारित प्रपत्र में कुल 03 कार्य जिनकी लागत राशि रू. 225.57 लाख है अत उक्त कार्यो के लिए ईटेण्डरिंग प्रक्रिया हेतु ऑनलाईन निविदायें आमंत्रित की जाती है।

ऑनलाईन निविदा आवेदन डाउनलोड एवं अपलोड करने की तारीख	26 सितम्बर 2025 प्रात 10.00 बजे से 14 अक्टूबर 2025 सायं 6.00 बजे तक

निविदा से सम्बन्धित विवरण वेबसाईट http://dipr.rajasthan.gov.in व http://sppp.rajathan.gov.in व http://व eproc.rajasthan.gov.in पर देखा जा सकता है। सम्पूर्ण निविदा प्रक्रिया http://eproc.rajasthan.gov.in पर ऑनलाईन सम्पादित की जायेगी। इच्छुक संवेदकों को अपने डिजिटल हस्ताक्षर के माध्यम से वेबसाईट पर http://eproc.rajasthan.gov.in पर रजिस्टर्ड करवाना आवश्यक है।

NIB NO. PWD2526A3473, UBN NO. 1. PWD2526WSOB13019, 2. PWD2526WSOB13020, 3. PWD2526WSOB13021

(शंकरलाल) अधिशाषी अभियन्ता
सा.नि.वि. खण्ड, जालोर
मोबाईल- 9983975907

DIPR/C/14294/2025

कार्यालय अधिशाषी अभियन्ता, सार्वजनिक निर्माण विभाग, खण्ड भीनमाल

क्रमांक-अअ/भीनमाल/2025-26/587 दिनांक-23.09.2025

अल्पकालीन निविदा सूचना संख्या - 08 वर्ष 2025-2026

NIB NO. PWD2526A3472

राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से विभिन्न कार्यो हेतु वार्षिक दर अनुबंध (Rate Contract) के आधार पर उपयुक्त श्रेणी में सार्वजनिक निर्माण विभाग राजस्थान में पंजीकृत संवेदकों एवं राज्य सरकार/केन्द्र सरकार के अधिकृत संगठनों/केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग/डाक एवं दूर संचार विभाग/रेल्वे इत्यादि में पंजीकृत संवेदकों, जो कि राजस्थान सरकार के उपयुक्त श्रेणी के संवेदकों के समकक्ष हो, से निर्धारित प्रपत्र में कुल 18 कार्य जिनकी लागत राशि रू. 464.05 लाख है के लिए ईटेण्डरिंग प्रक्रिया हेतु ऑनलाईन वार्षिक दर अनुबंध निविदायें आमंत्रित की जाती है।

ऑनलाईन निविदा आवेदन डाउनलोड एवं अपलोड करने की तारीख	26 सितम्बर 2025 प्रात 9.30 बजे से 05 अक्टूबर 2025 सायं 6.00 बजे तक

निविदा से सम्बन्धित विवरण वेबसाईट http://dipr.rajasthan.gov.in व http://sppp.rajathan.gov.inOhttp://eproc.rajasthan.gov.in पर देखा जा सकता है। सम्पूर्ण निविदा प्रक्रिया http://eproc.rajasthan.gov.in पर ऑनलाईन सम्पादित की जायेगी। इच्छुक संवेदकों को अपने डिजिटल हस्ताक्षर के माध्यम से वेबसाईट पर http://eproc.rajasthan.gov.in पर रजिस्टर्ड करवाना आवश्यक है। कार्यवार यू.बी.एन. संख्या निम्नानुसार है।

1. UBN NO. PWD2526WSRC13000, 2. UBN NO. PWD2526WSRC13001,
3. UBN NO. PWD2526WSRC13002, 4. UBN NO. PWD2526WSRC13003,
5. UBN NO. PWD2526WSRC13004, 6. UBN NO. PWD2526WSRC13005,
7. UBN NO. PWD2526WSRC13006, 8. UBN NO. PWD2526WSRC13007,
9. UBN NO. PWD2526WSRC13008, 10. UBN NO. PWD2526WSRC13009,
11. UBN NO. PWD2526WSRC13010, 12. UBN NO. PWD2526WSRC13011,
13. UBN NO. PWD2526WSRC13012, 14. UBN NO. PWD2526WSRC13013,
15. UBN NO. PWD2526WSRC13014, 16. UBN NO. PWD2526WSRC13015,
17. UBN NO. PWD2526WSRC13016, 18. UBN NO. PWD2526WSRC13017

(ओम प्रकाश)
अधिशाषी अभियन्ता,
सा.नि.वि. खण्ड भीनमाल

DIPR/C/14288/2025

'परिवार में संस्कार स्थापित करना समय की आवश्यकता'

राव वीरवर जयमल राठौड़ जयंती समारोह में केंद्रीय संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री रहे उपस्थित

मेड़ता सिटी। केंद्रीय संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने अपने जन्मदिवस पर मेड़ता सिटी स्थित श्री चारभुजा नाथ जी मंदिर में धोक लगाई और आशीर्वाद प्राप्त किया। इसके उपरांत राव वीरवर जयमल राठौड़ जयंती समारोह को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि आज समाज और परिवार में संस्कारों को स्थापित करने पर गहन चिंतन और मंथन की आवश्यकता है। शेखावत ने कहा कि विजयादशमी का पर्व सत्य की जीत का प्रतीक है। भगवान श्रीराम की कथा आज भी उतनी ही प्रासंगिक है, क्योंकि असत्य कितना भी शक्तिशाली क्यों न हो, अंततः विजय सत्य की ही होती है। उन्होंने राजपूत समाज से राजनीतिक व्यवस्था में सक्रिय भागीदारी का आा न किया और कहा कि शिक्षा में राजपूती भाव होना चाहिए ताकि आने वाली पीढ़ियों में संस्कारों के बीज रोपे जा सकें। समारोह में शेखावत ने समाज की प्रतिभाओं का सम्मान किया और राव जयमल राठौड़ जयंती समारोह समिति के संरक्षक एवं पूर्व राज्यपाल वी.पी. सिंह बदनौर द्वारा लिखित पुस्तक 'जयमल वंश प्रकाश' का विमोचन किया। यह पुस्तक राव जयमल राठौड़ के जीवन, स्मरणीय प्रसंगों और उनके व्यक्तित्व के विविध पहलुओं पर प्रकाश डालती है। अपने प्रवास के दौरान शेखावत ने भक्त शिरोमणि मीराबाई की धरा पर पूजा-अर्चना की और राव जयमल राठौड़ की प्रतिमा के समक्ष नमन किया। उन्होंने बुटाटी धाम में संत चतुर दास महाराज की तपोभूमि पर धोक लगाई, ज्योत के दर्शन किए और संतों का आशीर्वाद प्राप्त किया। दादूराम सतराम जी की पवित्र स्थली तथा पौधाम स्थित सिद्धपीठ में संत सुखराम दास जी महाराज के दर्शन किए। दादू सम्प्रदाय के पीठाधीश्वर ओम प्रकाश दास जी महाराज से भी आशीर्वाद प्राप्त किया। जोधपुर प्रवास के दौरान उन्होंने रोहिचा कलां के वीर तेजाजी मंदिर में भी दर्शन किए। राव जयमल राठौड़ जयंती समारोह के अध्यक्ष कर्नल प्रताप सिंह राठौड़, पूर्व सांसद गोपाल सिंह ईड़वा, मेड़ता विधायक लक्ष्मण राम, पाली जिला सहकारी समिति अध्यक्ष पुष्पेंद्र सिंह कुड़की, मेड़ता नगर पालिका अध्यक्ष शोभा लाहोटी, संभागीय आयुक्त अजमेर शक्ति सिंह राठौड़, अजमेर कलेक्टर अरुण कुमार पुरोहित सहित समाज के अनेक गणमान्य लोग उपस्थित रहे। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा स्थापना व विजयादशमी पर्व नगरीय क्षेत्रों में सम्पन्न होने केपश्चात मंडल केन्द्रों में प्रारम्भ हुए हैं।इसी कड़ी में अलाय मंडल का विजयदशमी उत्सव संपन्न हुआ। विजयदशमी उत्सव के मुख्य अतिथि डॉक्टर निर्मला (चिकित्सा अधिकारी रोहिणी), अमनाराम (सेवानिवृत्ति रेलवे कर्मचारी), नागौर ग्रामीण खंड संघचालक मोहन राम सुथार के आतिथ्य में हुआ। गिरधारी लाल , विभाग प्रचारक ने मुख्य वक्ता के रूप में मार्ग दर्शन किया।

गिरधारी लाल राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ शताब्दी वर्ष के अवसर पर गांव अलाय में विजयदशमी उत्सव में मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए विभाग प्रचारक ने कहा कि संघ शताब्दी वर्ष मना रहा है। संघ का कार्य सर्वव्यापी बनाने के लिए सभी स्वयंसेवक अपना सर्वस्व खपाने के लिए तैयार हो जाए। उन्होंने कहा कि हमारा देश आज सर्वव्यापी विकास कर रहा है।

गुरुद्वारे पर कब्जे का विवाद, हिंसक झड़प

■ बच्चों समेत 8 घायल, बाहरी लोग जबरन घुसे; स्कूल बंद, 15 थानों की पुलिस तैनात

हनुमानगढ़। गोलूवाला कस्बे में गुरुद्वारा मेहताबगढ़ साहिब में प्रबंधन कमेटी को लेकर लंबे समय से चल रहे विवाद ने शुक्रवार को हिंसक रूप ले लिया।

सुबह करीब 3 बजे एक पक्ष के 50 से ज्यादा लोगों ने गुरुद्वारे में जबरन घुसकर कब्जा करने की कोशिश की। इस दौरान वहां मौजूद दूसरे पक्ष के साथ कहासुनी के बाद झड़प हो गई। इसमें बच्चों समेत करीब 8 लोग घायल हो गए। इनके हाथ, पैर और सिर में चोट आई है। कई घायलों को स्थानीय अस्पताल में प्राथमिक इलाज के बाद श्रीगंगानगर जिला हॉस्पिटल रेफर किया गया। सूचना पर गोलूवाला थाना पुलिस फौरन मौके पर पहुंची। हालात बिगड़ते देख प्रशासन ने 15 थानों की पुलिस और आरएसी के जवानों को तैनात किया है। पुलिस लाइन से अतिरिक्त जाब्ता भी बुलाया गया है। एहतियात के तौर पर कस्बे में स्कूलों की छुटटी कर दी गई। प्रशासन ने गोलूवाला में धारा 163 लागू कर दी है। चार या ज्यादा लोगों के इकट्ठा होने पर रोक रहेगी।

एसपी हरि शंकर ने बताया- गुरुद्वारा में मुख्य ग्रंथी (प्रबंधक) को हटाने की मांग को लेकर दो पक्ष लंबे समय से आमने-सामने हैं। गोलूवाला कस्बा सिख संगत और मुख्य प्रबंधक बीबी हरमीत कौर पक्ष में गुरुद्वारा प्रबंधन कमेटी की जिम्मेदारी को लेकर विवाद है। 2009 में संत बाबा अमृतपाल सिंह गोलूवाला के गुरुद्वारा मेहताबगढ़ साहिब के मुख्य प्रबंधक थे। वे करीब 7 साल तक मुख्य प्रबंधक रहे। 2016 में पंजाब में संत बाबा अमृतपाल सिंह की हत्या हो गई।

साल 2016 में अमृतपाल सिंह की पत्नी बीबी हरमीत कौर को गुरुद्वारा प्रबंधन कमेटी का पदभार सौंपा गया। पिछले दो महीने से दोनों पक्ष आमने-सामने हैं। गोलूवाला कस्बा सिख संगत बीबी हरमीत कौर को हटाकर नई कमेटी बनाना चाहती है। किसी नए व्यक्ति को गुरुद्वारा का मुख्य प्रबंधक नियुक्त करना चाहती है। एसआई हरि शंकर ने बताया- गुरुद्वारा मेहताब सिंह साहिब में शुक्रवार सुबह बाहरी लोगों के जबरदस्ती घुसने से विवाद की स्थिति बन गई। मामले की जानकारी मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची। स्थिति को नियंत्रण में लिया। पुलिस ने इस संबंध में मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

कार्यालय नगर पालिका निवाई

क्रमांकः-न.पा.नि. / निर्माण / 2025-26 / 9526 दिनांकः- 29.09.2025

ई. बोली सूचना संख्या :- 30/2025-2026

राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से निम्न कार्य के लिए उपयुक्त श्रेणी में नगर पालिका निवाई में पंजीकृत उपयुक्त श्रेणी के संवेदकों एवं विभिन्न अभियान्त्रिकी विभागो के संबंधित श्रेणी में "A" "AA" श्रेणी में पंजीकृत संवेदको एवं स्वायत्त शासन विभाग में पंजीकृत उपयुक्त श्रेणी के संवेदको से, जो कि राजस्थान सरकार के उपयुक्त श्रेणी के संवेदकों के समकक्ष हो, हेतु ई-टेण्डरिंग के माध्यम से निर्धारित प्रपत्र में निविदाएं आमन्त्रित की जाती है। निविदा फार्म ऑनलाईन वेबसाईट www.sppp.rajasthan.gov.in व 'http://www.eproc.rajsthan.gov.in पर देखा जा सकता है :-

बोली का कार्य	NIB Code:- DLB2526A6654 (कुल 1 कार्य)
Unique Bid Number	DLB2526WSOB20378
बोली की कुल लागत	Rs 419.33 लाख (सभी कार्यो की अनुमानित लागत)
बोली जारी करने की दिनाक	दिनांक 01.10.2025 को 13:00 बजे से
बोली दस्तावेजो को डाउनलोड करने की शुरूआती दिनांक व समय	दिनांक 01.10.2025 को 13:00 बजे से
प्री बिड मिटिंग	दिनांक 14.10.2025 को अपराह 01:00 बजे नगर पालिका निवाई कार्यालय में
ऑन लाईन बोली जमा कराने की अन्तिम दिनांक	दिनांक 24.10.2025 सायं 18.00 बजे तक
ऑनलाईन तकनीकी बिड खोलने की दिनांक	दिनांक 27.10.2025 को अपराह 12:00 बजे
वित्तीय बिड खोलने की दिनांक व समय	Will be Intimated latter to the Technically qualified Bidders
बिड की वैधता समयावधि	120 Day

अध्यक्ष, नगर पालिका निवाई — अधिशाषी अधिकारी, नगर पालिका निवाई

राज.संवाद / सी / 25 / 11414

हेड कांस्टेबल रिश्वत लेते पकड़ा

सीकर (निसं)। भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो (एसीबी) की झुंझुनूं टीम ने शुक्रवार को कार्रवाई करते हुए पुलिस थाना रानोली जिला सीकर पुलिस हेड कांस्टेबल रामनिवास को पन्द्रह हजार रुपये की रिश्वत पकड़ा गया है।?

विदेश में नौकरी के नाम पर लाखों रुपए हड़पे

■ दो साल से फरार चल रहा था, अनूपगढ़ पुलिस ने पकड़ा

सीकर (निसं)। सीकर में विदेश में नौकरी के नाम पर लाखों रुपए हड़पने का मामला सामने आया है। एजेंट ने पैसे लेकर विदेश नहीं भेजा। न ही युवक को पैसे वापस लौटाए। युवक को जान से मारने की धमकी भी दी गई। अब पुलिस मामले की जांच कर रही है।

सीकर के उद्योग नगर थाने में विजय कुमार ने मुकदमा दर्ज करवाया है। रिपोर्ट में बताया- वह पिछले 10 साल से सीकर में रहता है। उनकी पहचान मोहम्मद रफीक निवासी सुल्ताना से सीकर में हुई। मोहम्मद रफीक ने कहा था कि वह लोगों को यूरोपीय देश में भेजने का काम करता है। पिछले 5 साल से यही काम करता है।

जर्मनी भेजने का झांसा दिया : मोहम्मद रफीक ने विजय कुमार को कहा कि वह उसे जर्मनी भेज देगा। जर्मनी जाने के लिए 18 लाख रुपए लगेंगे। वीजा लगने में 6 महीने का समय लगेगा। लेकिन तब तक मैं तुम्हें नौकरी पर रख लूंगा और तुम्हें मेरा काम देखना होगा। 20 हजार रुपए हर महीने सैलरी दूंगा। मोहम्मद रफीक की यह बातें सुनकर विजय कुमार ने विश्वास कर लिया। विजय कुमार ने अपने पासपोर्ट और अन्य डॉक्यूमेंट मोहम्मद रफीक को दे दिए। इसके बाद विजय कुमार ने 16.13 लाख रुपए मोहम्मद रकीफ को दे दिए। मोहम्मद रफीक ने विजय कुमार को कहा कि वह उसे जर्मनी भेज देगा। जर्मनी में हर महीने ढ ाई लाख रुपए सैलरी होगी।

जान से मारने की धमकी दी:- मोहम्मद रफीक ने विजय कुमार को विदेश नहीं भेजा और उसका फोन उठाना भी बंद कर दिया। पैसे भी वापस नहीं लौटाए और जान से मारने की धमकी दी है। फिलहाल अब पुलिस मामले की जांच कर रही है।

कार्यालय अधिशाषी अभियंता, जन स्वा. अभि. विभाग, जिला ग्रामीण खण्ड द्वितीय, बीकानेर

पी.एच.ई.डी. कैम्पस, इण्डस्ट्रीयल एरिया, के.जी. कॉम्पलेक्स के पास, रानीबाजार, बीकानेर (334001)
फोन-0151-2226475 ई-मेल-phedribkn@gmail.com, eediv2.bik.phed@rajasthan.gov.in, Latitude 28.0005250 Longitude 73.3249120

क्रमांक-3187-99 दिनांक-25.09.2025

Notice Inviting Bid: 87 to 93/2025-26

Bid for various works are invited to registered interested bidder upto 06.10.2025 at 16.00 hours. Other particulars of bid may be visited on the procurement portal www.sppp.rajasthan.nic.in & "https://eproc.rajasthan.gov.in" of the state, The approximate value of the procurement of Rs. 209.21 Lacs.

NIT NO.	87	88	89	90	91	92	93
UBN NO.	PHE2526 WSOB07109	PHE2526 WSOB07110	PHE2526 WSOB07112	PHE2526 WSOB07113	PHE2526 WSOB07114	PHE2526 WSOB07115	PHE2526 WSOB07116

(नरेश कुमार रैगर)
अधिशाषी अभियंता
जन स्वास्थ्य अभियांत्रिक विभाग,
जिला ग्रामीण खण्ड-II बीकानेर

DIPR/C/14398/2025

कार्यालय नगर निगम, अजमेर

पृथ्वीराज मार्ग अजमेर (राज.) फोन न. 0145-2429953,2433813
Email- ajmermc@gmail.com

क्रमांक F.10/50/M/LIGHT/AMC/2025-26/648 दिनांक : 12.09.2025

निविदा-सूचना

नगर निगम अजमेर द्वारा केंद्र एवं राज्य सरकार में उपयुक्त श्रेणी के निविदादाताओं से संबंधित निम्न ई-निविदा आमंत्रित की जाती है कार्यो की अनुमानित लागत टेंडर भरे जाने तथा प्राप्त करने की तारीख एव टेंडर शर्ते आदि संपूर्ण www.sppp.rajasthan.gov.in & www.eproc.rajasthan.gov.in वेबसाइट पर देखी एवं डाउनलोड की जा सकते हैं

NIB CODE-ANN2526A0115
UBN :-ANN2526WSOB00156

राज.संवाद / सी / 25 / 11296

कार्यालय जोधपुर विकास प्राधिकरण, जोधपुर

क्रमांक :- जो.वि.प्रा./जोधपुर/जोन MP-MLALAD/2025-26/राजकाज 18073368 दिनांक :- 01/10/2025

ई-निविदा सूचना संख्या :- 03 जोन-MLALAD/2025-26

जोधपुर विकास प्राधिकरण, जोधपुर की ओर से प्राधिकरण एवं राजकीय विभाग मे नियमानुसार उपयुक्त श्रेणी मे पंजीकृत ठेकेदार से सिविल कार्य हेतु मुहरबंद एवं ई निविदाएं आमंत्रित की जाती है। इन कार्यो की अनुमानित लागत, निविदा बेचे जाने तथा प्राप्त करने की दिनांक, निविदा, शर्ते आदि सम्पूर्ण विवरण वेबसाईट www.jodhpurjda.org, www.eproc.rajasthan.gov.in एवं https://sppp.rajasthan.gov.in पर देखी जा सकती है। NIB CODE :- JOD2526A0154

UBN No. :- JOD2526WSOB00322, 00324, 00325, 00326, 00327

राज.संवाद/सी/25/11324 अधिशाषी अभियंता (MP-MLALAD)

अजमेर विकास प्राधिकरण, अजमेर

अविप्रा

टोडरमल लेन, सिविल लाईन्स, अजमेर, Email :- ajmerada@gmail.com, Website :- www.rajasthan.gov.in/ada, Tel.No. :- 0145-2627748-2627749

क्रमांक :- अविप्रा/प.2/तकनीकी/2025-26/राजकाज 17965676 दिनांक :- 27/09/2025

ई-निविदा सूचना संख्या 35/2025-26

अजमेर विकास प्राधिकरण, अजमेर की ओर से विभिन्न कार्यो की अनुमानित लागत राशि रु. 151.45 लाख की ई-निविदा दिनांक 09.10.2025 सांय 06:00 बजे तक आमंत्रित की जाती है। निविदा से संबंधित समस्त विवरण वेबसाईट (http://eproc.rajasthan.gov.in) एवं (http://sppp.raj.nic.in) http://www.urban.rajasthan.gov.in/ada पर देखा जा सकता है।

UBN No. :- AJD2526WSOB00150 - 00156

अधिशाषी अभियन्ता
अजमेर विकास प्राधिकरण

राज.संवाद/सी/25/11370

कार्यालय अधिशाषी अभियन्ता सार्वजनिक निर्माण विभाग विद्युत खण्ड उदयपुर

क्रमांक-टीएस/डी-12 दिनांक-23.09.2025

निविदा सूचना संख्या- 12/2025-26

राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से विद्युत कार्य (5) अनुमानित राशि 159.15 लाख में दोष निवारण एवं उनके सुधार (मय डी.एल.पी. अवधि) शर्त सहित सार्वजनिक निर्माण विभाग में उपर्युक्त श्रेणी एवं उप श्रेणी में पंजीकृत संवेदकों से ई-टेण्डरिंग प्रक्रिया में ऑन लाईन निर्धारित प्रपत्र में निविदा दिनांक 08.10.2025 को सायं 6.00 बजे तक आमंत्रित की जाती है। निविदा से संबंधित समस्त विवरण वेबसाईट http://dipr.rajasthan.gov.in/tender.asp व www.eproc.rajasthan.gov.in तथा http://sppp.raj.nic.in पर देखा जा सकता है। शुद्धि पत्र केवल http://sppp.raj.nic.in व www.eproc.rajasthan.gov.in वेबसाईट पर अपलोड किये जायेंगे।

NIB CODE: PWD2526A3463, UBN NO.: PWD2526WSOB12978, 79, 80, 81, 86

अधिशाषी अभियन्ता
सा.नि.वि. विद्युत खण्ड उदयपुर

DIPR/C/14246/2025

बीकानेर नगर निगम

नगर निगम मार्ग, बीकानेर (राजस्थान) फैक्स :- 2226906, फोन :- 0151-2226902, 0151-2226905
E-mail :- nagarnigambikaner@gmail.com, Web Site :- www.bikanermc.org

क्रमांक / विद्युत / 2025-26 / 16473 दिनांक : 24.09.2025

ई-निविदा सूचना संख्या 15/विद्युत/2025-26

नगर निगम कार्यालय, बीकानेर द्वारा विद्युत सम्बन्धित कार्य (राशि रूपये 18.00 लाख) हेतु इच्छुक सम्भरणकर्ता जो कार्य करने/सामग्री संभरण करने के लिए अनुभवी हो, से निर्धारित प्रपत्र में ई-प्रोक्योरमेंट प्रक्रिया से ऑनलाईन निविदाएँ आंमत्रित की जाती हैं। निविदा कार्य से सम्बन्धित सम्पूर्ण विवरण एवं तिथि राज्य सरकार की ई-प्रोक्योरमेंट पोर्टल http://eproc.rajasthan.gov.in, www.sppp.rajasthan.gov.in तथा नगर निगम बीकानेर की वेबसाईट www.bikanermc.org पर देखी व डाउनलोड की जा सकती है तथा निर्धारित अवधि तक ई-प्रोक्योरमेंट पोर्टल http://eproc.rajasthan.gov.in पर अपलोड की जा सकती है।

1. UBN Code :- DLB2526WSOB19785

आयुक्त
नगर निगम, बीकानेर

राज.संवाद / सी / 25 / 11290

कार्यालय कृषि उपज मंडी समिति, बारां

क्रमांक :- 3235-47 दिनांक :- 01/10/2025

ई-निविदा आमंत्रण सूचना

कृषि उपज मण्डी समिति, बारां द्वारा आई.टी. उपकरण हेतु रजिस्टर्ड प्रतिष्ठित फर्मों / अधिकृत डीलरों / विक्रेताओं से निर्धारित प्रपत्र मे ई-प्रोक्योरमेंट (www.eproc.rajasthan.gov.in) के माध्यम से ऑनलाईन ई-निविदाएं दिनांक 15.10.2025 को सायं 5:00 बजे तक आमंत्रित की जाती है। निविदा से सम्बन्धित विस्तृत विवरण www.sppp.rajasthan.gov.in, www.eproc.rajasthan.gov.in व विभागीय पोर्टल agriculture.rajasthan.gov.in/mandi पर भी देखी जा सकता है। निविदा की अनुमानित कुल लागत 9.00 लाख रु० है।

NIB Code : DAM2526A0478
UBN No. : DAM2526WSOB00867

सचिव
कृषि उपज मंडी समिति, बारां

राज.संवाद/सी/25/11380

कार्यालय नगर परिषद बून्दी

क्रमांकः- 7070-73 दिनांकः- 29.09.2025

-:: निविदा सूचना ::-

नगर परिषद बून्दी द्वारा जारी निविदा सं० न०प०बू० / निर्माण / 2025-26 / 7046 दिनांक 27 / 09 / 2025 की निविदा दिनांक 29 / 09 / 2025 से दिनांक 10 / 10 / 2025 18.00 बजे तक ऑनलाईन विक्रय की जावेगी। निविदा दिनांक 13 / 10 / 2025 को 15.00 बजे तक प्राप्त की जावेगी तथा निविदा दिनांक 13 / 10 / 2025 को 16.00 बजे ऑनलाईन खोली जावेगी। विस्तृत शर्ते व विवरण निविदा sppp.rajasthan.gov.in/eproc.rajasthan.gov.in पर DLB2526WSOB20064, DLB2526WSOB20065, DLB2526WSOB20066, DLB2526WSOB20067, DLB2526WSOB20068, DLB2526WSOB20069, DLB2526WSOB20070, DLB2526WSOB20071, DLB2526WSOB20072, DLB2526WSOB20073, DLB2526WSOB20074, DLB2526WSOB20075, DLB2526WSOB20076, DLB2526WSOB20077, DLB2526WSOB20078, DLB2526WSOB20079, DLB2526WSOB20039, DLB2526WSOB20041, DLB2526WSOB20042, DLB2526WSOB20043, DLB2526WSOB20044, DLB2526WSOB20045, DLB2526WSOB20046, DLB2526WSOB20047, DLB2526WSOB20048, DLB2526WSOB20049, DLB2526WSOB20050, DLB2526WSOB20051, DLB2526WSOB20052, DLB2526WSOB20053, DLB2526WSOB20054, DLB2526WSOB20055, DLB2526WSOB20056, DLB2526WSOB20057, DLB2526WSOB20058, DLB2526WSOB20060, DLB2526WSOB20061, DLB2526WSOB20062 तथा कार्यालय समय मे किसी भी कार्यदिवस को नगर परिषद मे देखा जा सकता है।

आयुक्त
नगर परिषद, बून्दी

राज.संवाद / सी / 25 / 11339

कार्यालय नगर पालिका छबडा जिला बारां (राज0)

E Mail ID-npchhabra5@gmail.com Phone No-07452-222025

क्रमांक ::- न0पा0छ0 / 2025 / 4760 दिनांक ::- 29.09.2025

-: निविदा सूचना :-

NIB NO-DLB2526A6587

Municipal Board Chhabra invites online E-Tender Amount 67.32 Lacs by e-procument in prescribed format from registered contractor in appropriate category in Engineering department of Rajasthan Govt. Or eligible contractor as per PWFAR rules for following Works. Technical and financial bids/proposals from experienced, technicailly sound reputed bidders fulfilling eligibility criteria as described in the bid document. NIT can also seen on web portal at www.sppp.rajasthan.gov.in & www.eprocument.rajasthan.gov.in

Publishing date and time	26.09.2025 at 6.00 P.M.
Bid Document download start	26.09.2025 from 6.00 P.M.
Bid Document submission end date	07.10.2025 upto 6.00 P.M.
Technical Bid Opening date and time	08.10.2025 at
Financial bid opening date and time	To be announced later on
Portal website	www.sppp.rajasthan.gov.in

S.No	UBN No	S.No	UBN No
1	DLB2526WSOB20148	2	DLB2526WSOB20149
3	DLB2526WSOB20162	4	DLB2526WSOB20166

अधिशाषी अधिकारी
नगरपालिका छबडा

राज.संवाद / सी / 25 / 11403

RIICO GROW WITH RAJASTHAN — राजस्थान सरकार का उपक्रम — RISING RAJASTHAN REPLETE • RESPONSIBLE • READY

औद्योगिक विकास के खुल रहे नये द्वार आप भी बनें भागीदार

सरल ई-नीलामी के माध्यम से

आधारभूत सुविधाओं युक्त औद्योगिक क्षेत्रों में करें उद्यम की स्थापना

66 कुल औद्योगिक क्षेत्र | 337 कुल भूखण्ड | 324 औद्योगिक भूखण्ड | 13 लॉजिस्टिक भूखण्ड

अन्तिम 4 दिन शेष

उपरोक्त औद्योगिक क्षेत्रों पर प्रत्यक्ष आवंटन योजना-2025 लागू नहीं है

ईएमडी — अंतिम तिथि: 07 अक्टूबर, 2025 (सायं 06:00 बजे)
ऑनलाईन बिड — प्रारम्भ तिथि: 08 अक्टूबर, 2025 (प्रात: 10:00 बजे); अंतिम तिथि: 10 अक्टूबर, 2025 (सायं 05:00 बजे)

36	आबू रोड़	02	चूरू
23	अजमेर	11	बीकानेर
04	अलवर	06	भरतपुर
07	भिवाड़ी-I	25	किशनगढ़
21	भिवाड़ी-II	18	भीलवाड़ा
08	बोरानाडा	03	नीमराना
11	घिलोठ		

ईएमडी — अंतिम तिथि: 08 अक्टूबर, 2025 (सायं 06:00 बजे)
ऑनलाईन बिड — प्रारम्भ तिथि: 09 अक्टूबर, 2025 (प्रात: 10:00 बजे); अंतिम तिथि: 13 अक्टूबर, 2025 (सायं 05:00 बजे)

35	नागौर	11	उदयपुर
12	पाली	03	जयपुर (दक्षिण)
30	झालावाड़	02	जयपुर (उत्तर)
02	जालोर	30	ईपीआईपी सीतापुरा, जयपुर
10	राजसमंद	01	जोधपुर
22	कोटा	04	सवाई माधोपुर

*25% भुगतान के बाद, शेष 75% भुगतान 11 किश्तों में 8.5% ब्याज के साथ या 120 दिनों के भीतर ब्याज रहित भुगतान
या
रीको की टर्म लोन स्कीम के तहत भूमि की लागत का 75% तक का ऋण 5 साल की पुनर्भुगतान अवधि एवं 8.5% ब्याज के साथ
*केवल औद्योगिक भूखण्डों के लिए

आवेदन के लिए QR कोड स्कैन करें

राज.संवाद / सी / 25 / 11388

राजस्थान स्टेट इण्डस्ट्रियल डवलपमेन्ट एण्ड इन्वेस्टमेन्ट कॉर्पोरेशन लिमिटेड
उद्योग भवन, तिलक मार्ग, सी-स्कीम, जयपुर-302005
ई-नीलामी हैल्पलाइन नं. 0141-4593250, 4593237, व्हाट्सएपः +91 9001306515, ई-मेल: riico@riico.co.in
आवंटन से सम्बंधित नियमों एवं शर्तें, ईएमडी विवरण, रजिस्ट्रेशन एवं भूखण्ड से सम्बंधित जानकारी के लिए देखें
https://riico. rajasthan.gov.in या https://www.riico.co.in

सार-समाचार

जिला कलक्टर ने किया शहरी सेवा शिविर का निरीक्षण

प्रतापगढ़,(निसं)। जिला कलक्टर डॉ अंजलि राजोरिया ने शुक्रवार को धरियावद में शहरी सेवा शिविर का निरीक्षण किया तथा कार्मिकों को राज्य सरकार की मंशा के अनुरूप सेवा की भावना से कार्य करते हुए आमजन को त्वरित राहत पहुंचाने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा क विभागीय अधिकारी एवं कर्मचारी आमजन को सभी योजनाओं से पात्रतानुसार लाभांवित करें। शिविरों में आने वाले प्रत्येक व्यक्ति की समस्या को गंभीरता से लेकर उसका प्राथमिकता से निस्तारण करें। प्री कैंप में चिन्हित की गई रोशनी, सफाई सहित मूलभूत आवश्यकताओं को शिविरों के माध्यम से निस्तारित करें एवं अधिकाधिक प्रचार प्रसार करें। उन्होंने आमजन से जागरूक होकर शिविरों में पहुंचकर अपनी समस्याओं का समाधान करवाने एवं जन कल्याणकारी योजनाओं से लाभांवित होने की अपील की। उन्होंने विभागीय स्टॉल वार निरीक्षण कर दी जा रही सुविधा के बारे में जानकारी ली और लाभार्थियों से संवाद भी किया।

चाइल्ड हेल्पलाइन ने दी बाल विवाह की जानकारी

डूंगरपुर(निसं)। डूंगरपुर शहर में बाल अधिकारिता विभाग द्वारा संचालित चाइल्ड हेल्पलाइन ने 3 अक्टूबर 2०25 वार शुक्रवार को ब्लॉक डूंगरपुर ग्राम पंचायत सतीरामपुर राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में बच्चों को बाल विवाह के बारे में जानकारी एवं शपथ दिलाई गई। बाल अधिकारिता विभाग के सहायक निदेशक कल्पित शर्मा ने बताया कि चाइल्ड हेल्पलाइन समन्वयक मेहुल शर्मा के निर्देशन में केश सुपरवाईजर नारायण लाल बरण्डा, महेंद्र कलाल ने राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय सती रामपुर में जाकर बच्चो को बाल विवाह एवं बाल विवाह से होने वाले दुष्परिणामों के बारे में समझाते हुए कहॉ की बाल विवाह करना एवं करवाना जुर्म है एवं बताया कि करने और करने में शामिल होने वाले जैसे रिश्तेदारों, बारातियों तथा सहयोग करने वाले – हलवाइयों, टैण्ट, शामियाना, बैण्ड बाजे, साउण्ड, फोटोग्राफर, पण्डित व अन्य के लिए सजा एवं बाल विवाह प्रतिषेध अधिनियम 2००6 के अनुसार 2 वर्ष की सजा और जुर्माने का प्रावधान एवं किशोर न्याय अधिनियम 2०15 के अनुसार 3 वर्ष की सजा 1 लाख तक के जुर्माने या दोनों का प्रावधान के बारे में बताया एवं बाल विवाह न करवाने हेतु शपथ दिलाई गई। चाइल्ड हेल्पलाइन ने आमजन एवं बच्चों से अपील की आपको इस प्रकार से बाल विवाह होते हुए दिखे या इसकी सूचना मिले तो आप तुरन्त इसकी सुचना चाइल्ड हेल्पलाइन 1०98 पर कॉल कर बताए। चाइल्ड हेल्पलाइन ऐसे बच्चों की मदद के लिए दिन रात (24 घंटा) तत्पर रहती है। यह एक टॉल फ्री नम्बर है। इस पर कॉल करने का कोई पैसा नही लगता है व इस पर कॉल करने वाले का नाम गोपनीय रखा जाता है। बैठक में स्कूल से ओजस्वी परमार प्रधानाचार्य, जिज्ञासा भगोरा उप प्रधानाचार्य, निजामुद्दीन मलिक एवं संजय कुमार प्रजापत माय स्टाफ उपस्थित रहे।

महेंद्र मीणा को मिला ब्रॉन्ज मेडल

प्रतापगढ़(निसं)। 69 वे राज्य स्तरीय विद्यालय 14 वर्षीय तीरंदाजी प्रतियोगिता 2025-26 में आयोजित विद्यालय सरस्वती विद्या निकेतन माध्यमिक विद्यालय रोहिडा सिरोही में तीरंदाजी में प्रतापगढ़ जिले का छात्र महेंद्र मीणा पिता बलवंत मीणा ने प्रथम 30 मीटर में 328 अंक और द्वितीय 30 मीटर में 320 अंक प्राप्त किया। दोनों दूरियों के अंक मिलकर 648 अंक प्राप्त हुए जिसमें महेंद्र मीणा को ब्रॉन्ज मेडल प्राप्त कर लिया और एलिमिनेशन राउंड में भी महेंद्र मीणा ने ब्रोंज मेडल प्राप्त किया।

पिंक टॉयलेट का किया उद्घाटन

बांसवाड़ा(निसं)। स्वच्छता ही सेवा 2025 अभियान के तहत महात्मा गांधी जयंती स्वच्छ भारत दिवस के रूप में मनाते हुए स्वच्छ भारत दिवस पर परिषद क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले सफाई कर्मचारी, स्वयं सहायता समूह एवं स्कूलों में प्रतिभागी रहे छात्र-छात्राओं को सम्मानित किया गया। नगर परिषद आयुक्त दुर्गेश रावल ने बताया कि रोडवेज बस स्टैंड स्थित पिंक टॉयलेट का वर्चुअल लोकार्पण राज्यपाल हरिभाऊ बागडे एवं विशिष्ट अतिथि राज्यमंत्री जाबर सिंह खर्रा ने किया। इस अवसर पर जनप्रतिनिधि, परिषद के प्रशासक, प्रकाश चंद्र रेगर एवं परिषद के अधिकारी एवं कर्मचारी मौजूद रहे।

प्रकृति पूजक सेना की बैठक रविवार को

डूंगरपुर(निसं)। प्रकृति पूजक सेना की बैठक 5 अक्टूबर को पावडिया हनुमान जी मंदिर पावडा घाटी बिछीवाडा में रखी गई है। प्रकृति पूजक सेना के प्रदेशाध्यक्ष एडवोकेट चंदूलाल बरंडा ने बताया कि 5 अक्टूबर रविवार को समय प्रात:1० बजे प्रकृति पुजक सेना की बैठक आयोजित की गई है। बैठक में संगठन को मजबूत करने एवम् आमजन की विभिन्न समस्याओं के कई मुद्दों पर चर्चा की जाएगी। बैठक में आदिवासी महासमिति के पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता भाग लेंगे आमजन एवम् युवाओं से अपील है की अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित होकर प्रकृति पुजक सेना के सदस्य बनकर संगठन को मजबूत बनाएं।

पूर्व सरपंच रायका भाजपा जिला उपाध्यक्ष नियुक्त

मंडफिया(निसं)। आसावरा माता पूर्व सरपंच अशोक रायका भाजपा जिला उपाध्यक्ष नियुक्त हुए। जानकारी के अनुसार भाजपा प्रदेशाध्यक्ष मदन राठौड के निर्देशानुसार चित्तौडगढ़ भाजपा जिलाध्यक्ष रतन लाल गाडरी ने जिले की नवीन कार्यकारिणी का गठन किया है जिसमें भदेसर उपखंड क्षेत्र की ठााम पंचायत आसावरा माता के पूर्व सरपंच अशोक रायका को भाजपा जिला उपाध्यक्ष पद पर नियुक्त किया है। पूर्व सरपंच रायका के भाजपा जिला उपाध्यक्ष पद पर नियुक्त होने की सूचना क्षेत्र के ठाामीणों को मिलने पर खुशी जाहिर करते हुए रायका का स्वागत व सम्मान कर बधाइयां प्रेषित की।

मयूर नगर लोधा में किया रावण दहन

बांसवाड़ा (निसं)। मयूर नगर लोधा में एलएनजे परिवार के लिए दशहरा पर्व पर 40 फीट रावण दहन कार्यक्रम व मेले का आयोजन किया गया। मेले का शुभारंभ मुख्य अतिथि मुख्य संचालन अधिकारी शंभू कुमार शर्मा और विशिष्ट अतिथि डेनिम प्लांट के सतपाल महादेव, अरबिंद मिश्रा, दुष्यंत पवार, बीएमडी प्लांट के नवदीप ने दीप प्रज्वलित कर किया। अतिथियों ने मेले में विभिन्न स्टॉलों का अवलोकन भी किया। मेले में एलएनजे परिवार की महिला क्लब अध्यक्ष निशी शर्मा के नेतृत्व में महिला क्लब सदस्यायों ने विभिन्न चाट-पकौड़े के स्टॉल और क्लब सचिव ममतेश जैन के नेतृत्व में फन गेम्स का आयोजन किया गया। महा प्रबंधक लीगल एवं पीआर मनोज शाह ने बताया कि रावण दहन के लिये रामरथ सवारी महिला क्लब सदस्या छाया घोष, जानवी वाडकर व शशि कला विश्वकर्मा के नेतृत्व में एलएनजे परिवार के बच्चों ने राम दरबार बनाकर 40 फीट ऊंचे रावण का दहन कर असत्य पर सत्य की जीत का संदेश दिया। इस दौरान सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हुए। आभार क्लब उपाध्यक्ष गोपाल लाल काबरा ने माना। इस अवसर पर संयुक्त प्रबंध निदेशक राजीव गुप्ता और बिजनैस हेड नरेश कुमार बहेडिया ने एलएनजे परिवार एवं वागडवासियों को दशहरा पर्व की शुभकामनाएं दीं।

राष्ट्रीय समूह गान प्रतियोगिता सम्पन्न

डूंगरपुर(निसं)। विद्यनिकेतन माध्यमिक विद्यालय नई बस्ती में भारत विकास परिषद मुख्य शाखा डूंगरपूर के द्वारा राष्ट्रीय समुह गान प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। जिसमे अतिथियो द्वारा मा सरस्वती के समक्ष दीप प्रवजलन व वन्देमातरम कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। मंचासीन अतिथि शाखा अध्यक्ष मांगीलाल कुमार, प्रांतीय संरक्षक गिरीश पानेरी, उपाध्यक्ष हरिराम मीणा, नरेश जोशी, ओम प्रकाश चौबीसा, राजेश चौबीसा, जगदीश वैष्णण, स्थानीय विद्यालय के प्रधानाचार्य विकास व्यास रहे। मुख्य वक्ता गिरीश पानेरी ने प्रतियोगिता की जानकारी एवं समूह गान के महत्व के बारे में प्रकाश डाला। कार्यक्रम में निर्णायक दिनेश गोजाएविपुल जैनएबद्री प्रसाद सुथार थे।जिसमें डूंगरपुर शहर के उच्च माध्यमिक विद्यालयो से बालक बालिकाओं ने भाग लिया कार्यक्रम में प्रथम स्थान पर देवेंद्र गर्ल्स उच्च माध्यमिक विद्यालय द्वितीय स्थान पर बालिका विद्यालय शास्त्री कॉलोनीए तृतीय स्थान विद्या निकेतन माध्यमिक विद्यालय नई बस्ती व चतुर्थ स्थान गौरी शंकर उपाध्याय नंबर 6 विद्यालय ने प्राप्त किया। कार्यक्रम में प्रथम द्वितीय आने पर बालिकाओं को शिल्ड एवं प्रमाण पत्र प्रदान किए।

अखिल राजस्थान राज्य कर्मचारी संयुक्त महासंघ आंदोलन की राह पर

■ 11 सूत्री मांग पत्र की मांगों को लेकर 6 अक्टूबर को सौपेगे ज्ञापन

डूंगरपुर(निसं)। अखिल राजस्थान राज्य कर्मचारी संयुक्त महासंघ के 11 सूत्री मांग पत्र कि मांगो पर सकारात्मक कार्यवाही नहीं करने एवं संवादहीनता के विरोध में अखिल राजस्थान राज्य कर्मचारी संयुक्त महासंघ ने आंदोलन का निर्णय किया है।

महासंघ के प्रदेशाध्यक्ष महावीर शर्मा ने बताया कि सरकार के द्वारा अधीनस्थ सेवाओं के कर्मचारियों के साथ दोहरे मापदंड अपनाए जा रहे हैं। अधीनस्थ सेवाओं के कर्मचारियों कि खेमराज समिति की रिपोर्ट के आधार पर ना हीं तो वेतन विसंगतियां दूर की गई है एवं ना ही पदोन्नति विसंगतियां दूर की जा रही है। अधीनस्थ सेवाओं के कर्मचारियों को पूरी सेवा काल में एक भी पदोन्नति का अवसर नहीं मिल रहा है। महासंघ से सम्बद्ध एएनएम एलएचवी, पशुधन निरीक्षक, शारीरिक शिक्षा अध्यापक ग्रेड तृतीया, नर्सिंग ऑफिसर, ग्राम विकास अधिकारी, तृतीय श्रेणी अध्यापक, पटवारी, कनिष्ठ नर्सिंग कंपाउंडर आयुर्वेद, कांस्टेबल, सूचना सहायक,कृषि पर्यवेक्षक, वनरक्षक, संगणक, वर्क चार्ज कर्मचारी एवं सहायक कर्मचारी आदि संवर्गो के मात्र 1० से 2० प्रतिशत पदोन्नति के पद है जिससे इनकी प्रथम पदोन्नति भी 15 से 2० वर्ष में होती है तथा द्वितीय पदोन्नति तो बहुत ही कम कर्मचारियों की होती है।

यह बहुत बडी पदोन्नति विसंगति है:-प्रत्येक संवर्ग के कर्मचारियों को पदोन्नति के पांच अवसर उपलब्ध करवाये जाए या सहायक कर्मचारी सहित प्रत्येक कर्मचारी को पदोन्नति के पांच अवसर नहीं होने की स्थिति में 7, 14, 21, 28 एवं 32 वर्ष की सेवा पर पदोन्नति पद का वेतनमान स्वीकृत किया जावे। इसके अतिरिक्त विभिन्न विभागों के उच्च अधिकारियों कि उदसीनता के कारण वर्षो से पदोन्नतियां भी लंबित है। शिक्षा विभाग में तृतीय श्रेणी शिक्षकों एवं शारीरिक शिक्षकों ए पशु पालन विभागए पंचायती राज विभाग,वन विभागए स्वास्थ्य एवं चिकित्सा विभाग, राजस्व विभाग, कृषि विभाग, आयुर्वेदिक चिकित्सा विभाग आदि में 4 से 5 पदोन्नति वर्षो की पदोन्नतियां लंबित है। विभिन्न संवर्गो की पदनाम परिवर्तन की मांग पर सरकार द्वारा पिक एंड चूज की पॉलिसी अपनाई जा रही है जो न्यायोचित नहीं है, प्रत्येक संवर्ग की मांग पर व्यावहारिक एवं सम्मानजनक पदनाम परिवर्तन किये जाये।

प्रदेश में पुरानी पेंशन योजना लागू हो चुकी है। एनपीएस में काटे गए 53 ह?ार करोड रुपए जीपीएफ खातों में जमा करवाये जावे। वेतन विसंगति दूर करते हुए कार्मिकों का न्यूनतम वेतनमान 26 निर्धारित करवाना एवं ग्रामीण क्षेत्र के कार्मिकों को मूल वेतन का 1० प्रतिशत ग्रामीण भत्ता स्वीकृत करवाना महासंघ कि मुख्य मांग है। संविदा एवं आउटसोर्स पर नियुक्तियां बंद की जावे तथा सभी संविदा एवं आउटसोर्स कर्मचारियों को नियमित किया जावेए समस्त विभागों एवं सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों में रिक्त पदों को नियमित नियुक्तियों से भरा जावे। समस्त विभागों के लिए पारदर्शी स्थानांतरण नीति लागू करते हुए तृतीय श्रेणी शिक्षकों के वर्षो से लंबित स्थानांतरण किये जावे। आरजीएचएस योजना में की जा रही कटौतियों को बंद किया जावे एवं योजना को मूल स्वरूप में पुनः लागू किया जावे। महासंघ के महामंत्री महावीर सिहाग ने बताया कि इन मांगों को लेकर महासंघ ने चरण पद आंदोलन का निर्णय किया है। आंदोलन के चरणानुसार प्रथम चरण में 23 सितंबर मुख्य सचिव को आंदोलन का नोटिस दिया जा चूका है। द्वितीय चरण में 6 अक्टूबर 2०25 को जिला स्तर पर ज्ञापन एवं तैयारी बैठके आयोजित कि जाएगी। तृतीय चरण में 7 अक्टूबर से 17 अक्टूबर तक कर्मचारी जागरण अभियान चतुर्थ चरण में 15 अक्टूबर को जिला स्तर पर चेतावनी धरना,पंचम चरण में 3० अक्टूबर से 2० नवंबर तक संपूर्ण प्रदेश में संघर्ष चेतना यात्रा रहेंगी।

जागरूकता रैली में दिया बाल संरक्षण का संदेश

डूंगरपुर(निसं)। राजस्थान पुलिस द्वारा राज्यव्यापी ऑपरेशन जागृति चरण-०4 के तहत रेंज के सभी जिलों में पोक्सो अधिनियम पर आयोजित जागरूकता कार्यक्रमों की श्रृंखला में शुक्रवार को डूंगरपुर जिला मुख्यालय पर जागरूकता रैली निकालकर बाल संरक्षण का संदेश दिया गया। पुलिस महानिरीक्षक गौरव श्रीवास्तव के निर्देशन में उदयपुर रेंज पुलिस और यूनिसेफ राजस्थान के सहयोग से संचालित पुलिसिंग फॉर केयर ऑफ चिल्ड्रन कार्यक्रम अंतर्गत जागरूकता सप्ताह मनाया जा रहा है।

इसके तहत डूंगरपुर में पॉक्सो अधिनियम की जानकारी देने के लिए पुलिस अधीक्षक मनीष कुमार के निर्देशन अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक राजीव परिहार ने रैली को हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया। उन्होंने इस रैली के माध्यम से बच्चों को यौन शोषण से बचाने के लिए निहित संदेश को जन-जन तक पहुंचाने की बात कही और इस सप्ताह के तहत आयोजित गतिविधियों के माध्यम से बाल सरंक्षण के प्रति हर वर्ग को जागरूक होकर भागीदारी निभाने का आ ान किया। इस अवसर पर यूनिसेफ की बाल संरक्षण सलाहकार श्रीमती सिंधु बिनुजीत ने कहा कि बालकों को यौन अपराध से बचाना हम सभी का दायित्व है और इस कार्यक्रम का उद्देश्य बच्चों के साथ होने वाले यौन दुराचार से उनको बचाने एवं आमजन को उनकी सुरक्षा के लिए बनाए पोक्सो कानून की जानकारी देकर जागरूक करना है। रैली जिला कलेक्टर कार्यालय से प्रारंभ होकर तहसील चौराहा, बस स्टेंड, मुख्य बाजार, गैप सागर की पाल होते हुए सर्किट हाउस आकर समाप्त हुई। रैली में एसआई सकाराम, एसआई अशोक कुमार के साथ पुलिस विभाग की लेडी पेट्रोलिंग टीम, कालिका टीम, पुलिस की सिग्मा, यातायात पुलिस और जिला पुलिस अधीक्षक कार्यालय के कार्मिक मौजूद रहे।

कार्यालय उदयपुर विकास प्राधिकरण, उदयपुर (राज.)

क्रमांकः उविप्र/नियमन रिकॉर्ड/2025/3156 **आम सूचना** दिनांकः– 24/9/2025

निम्न आवेदनकर्ता द्वारा अपने भूखण्ड का वारीसान/वसीयत/हक त्याग/विक्रय पत्र के आधार पर अपने नाम पर नामान्तरण किये जाने हेतु ऑनलाईन आवेदन प्रस्तुत किया गया है:–

क्र. सं.	भुखण्ड संख्या	क्षेत्रफल (वर्गफीट)	राजस्व ग्राम एवं खसरा संख्या	आवेदक का नाम / पिता का नाम	मृतक का नाम एवं स्वामित्व का आधार
1.	14 (MUT No. 4662)	2415	शोभागपुरा खसरा नं. 1239, 1240	श्रीमती पानी बाई पत्नी स्व. श्री बद्रीलाल सोनी निवासी– सोनियो की गली, भड़भूजा घाटी, उदयपुर (राज.)	श्री बद्रीलाल सोनी पिता श्री सायरा जी सोनी का स्वर्गवास दिनांक 13–11–2018 को होने पर उनके वारिसानों द्वारा किए गए पंजीकृत हक त्याग प्त्र दिनांक 08–06–2022 के आधार पर नामांतरण चाहा गया है।

अतः उपरोक्तानुसार उक्त भूखण्ड का वारिसान के आधार पर नामान्तरण पत्र जारी करने के संबंध में यदि किसी व्यक्ति/संस्था/फर्म को किसी भी प्रकार की कोई भी आपत्ति/एतराज हो तो वो अपनी आपत्ति मय आधारों सहित इस सार्वजनिक सूचना पत्र के प्रकाशन से 07 दिवस की अवधि में इस कार्यालय में संबंधित शाखा के अन्दर इस कार्यालय में स्वयं उपस्थित होकर अधोहस्ताक्षरकर्ता को प्रस्तुत कर सम्बंधित शाखा प्रभारी को लिपिक को प्रस्तुत करावें। अन्यथा बाद गुजरने मयाद आवेदक के नाम पर उक्त भूखण्ड का नामान्तरण–पत्र/लीजडीड जारी की जा सकेगा।

(डॉ. अभिनव शर्मा) तहसीलदार, उदयपुर विकास प्राधिकरण उदयपुर (राज.)

कार्यालय उदयपुर विकास प्राधिकरण, उदयपुर (राज.)

क्रमांकः उविप्र/नियमन रिकॉर्ड/2025/3314 **आम सूचना** दिनांकः– 3/10/2025

निम्न आवेदनकर्ता द्वारा अपने भूखण्ड का वारीसान के आधार पर अपने नाम पर नामान्तरण किये जाने हेतु ऑनलाईन आवेदन प्रस्तुत किया गया है:–

क्र. सं.	भुखण्ड संख्या	क्षेत्रफल	राजस्व ग्राम	आवेदक का नाम / पिता का नाम	मृतक का नाम / दस्तावेज
1.	61 (MUT No. 5242)	1950 वर्गफीट	सविना खसरा नं. 880 से 888, 4138/884	श्रीमती परवीन बानो कुरैशी पत्नी स्व. श्री शब्बीर कुरैशी, निवासी– 28, न्यू सर्राफा बाजार, मुखर्जी चौक, उदयपुर	श्री शब्बीर कुरैशी पिता स्व. श्री लाल मोहम्मद जी का मृत्यु प्रमाण पत्र दिनांक 14.01.2020 एवं पंजीकृत गिफ्ट डीड दिनांक 27.07.2021 एवं पंजीकृत हक त्याग पत्र दिनांक 12.03.2021 के आधार पर नामान्तरण चाहा गया है।
2.	62 (MUT No. 5245)	1950 वर्गफीट			श्री शब्बीर कुरैशी पिता स्व. श्री लाल मोहम्मद जी का मृत्यु प्रमाण पत्र दिनांक 14.01.2020 एवं पंजीकृत गिफ्ट डीड दिनांक 27.07.2021 एवं पंजीकृत हक त्याग पत्र दिनांक 12.03.2021 के आधार पर नामान्तरण चाहा गया है।

अतः उपरोक्तानुसार उक्त भूखण्ड का वारिसान के आधार पर नामान्तरण पत्र जारी करने के संबंध में यदि किसी व्यक्ति/संस्था/ फर्म को किसी भी प्रकार की कोई भी आपत्ति/एतराज हो तो वो अपनी आपत्ति मय आधारों सहित इस सार्वजनिक सूचना पत्र के प्रकाशन से 07 दिवस की अवधि में इस कार्यालय में संबंधित शाखा के अन्दर इस कार्यालय में स्वयं उपस्थित होकर अधोहस्ताक्षरकर्ता को प्रस्तुत कर सम्बंधित शाखा प्रभारी को लिपिक को प्रस्तुत करावें। अन्यथा बाद गुजरने मयाद आवेदक के नाम पर उक्त भूखण्ड का नामान्तरण–पत्र/लीजडीड जारी की जा सकेगा। **(रणजीत सिंह विठ्ठ) तहसीलदार, उदयपुर विकास प्राधिकरण उदयपुर (राज.)**

विभागीय योजनान्तर्गत 2 करोड 33 लाख रूपये की राशि वितरित की गई

■ आयु 18 से 60 वर्ष के मध्य तथा पिछले एक वर्ष में 90 दिवस तक श्रमिक के रूप में कार्यरत होना आवश्यक है

प्रतापगढ़(निसं)। श्रम विभाग, प्रतापगढ द्वारा राज्य सरकार निर्देशानुसार दिनांक 17.09.2025 से निरन्तर चल रहे सेवा पखवाडे के तहत रामपुरिया, रतनपुरिया, बरखेडा, बसेडा, बेडमा, झाझली, नालपाडा, रोहनिया, करमदीखेडा, बमोतर, झांझली, सेमलिया, कचोटिया, पानमोडी, गादोला आदि शहरी तथा ठाामीण स्थानों पर भाग पर लिया

सेवा पखवाडे के सम्बन्ध में श्रम कल्याण अधिकारी गोपाल मीणा प्रतापगढ़ द्वारा बताया कि इस अभियान के अन्तर्गत जिन निर्माण श्रमिकों का पंजीयन 03 वर्ष से पूर्व का है, उन्हे निर्माण श्रमिक टूलकिट सहायता योजना के अन्तर्गत औजार/टूलकिट खरीदने पर 2000/- रूपये अथवा वास्तविक क्रय मुल्य जो भी कम हो का पुनर्भरण का लाभ दिया गया। मीणा द्वारा बताया कि राज्य सरकार की टूलकिट योजना में 80 आवेदन प्राप्त हुये जिसमें से 181 आवेदन उक्त टूलकिट योजना में स्वीकृत करते हुये, राशि 362000/- श्रमिकों को वितरित की गई।

इसी क्रम में को माननीय मुख्यमंत्री, श्रम विभाग, राजस्थान सरकार द्वारा दिनांक 30.09.2025 को जैतारण, ब्यावर (राजस्थान) में लाभार्थियों को निर्माण श्रमिक शिक्षा व कौशल योजना, प्रसूति सहायता योजना, पंजीकृत हिताधिकारी की सामान्य अथवा दुर्घटना अथवा मृत्यु या घायल होने की दशा में सहायता योजना आदि विभागीय योजनाओं का लाभ देते हुये सम्पूर्ण राजस्थान में कुल 209 करोड़ रूपये की राशि डीबीटी (डायरेक्ट बेनेफिट ट्रांसफर) के माध्यम से वितरित की, जिसमें से प्रतापगढ़ के लाभार्थियों को 2 करोड 33 लाख रूपये की राशि वितरित की गई।

श्रम अधिकारी द्वारा बताया कि श्रम विभाग की योजनाओं का लाभ प्राप्त किये जाने हेतु श्रमिक कार्ड का पंजीकृत होना आवश्यक है तथा पंजीकरण करवाये जाने हेतु निर्माण श्रमिक की आयु 18 से 60 वर्ष के मध्य तथा पिछले एक वर्ष में 90 दिवस तक श्रमिक के रूप में कार्यरत होना आवश्यक है। श्रम विभाग द्वारा विभाग की अन्य सभी योजनाओं का केम्प के दौरान प्रचार प्रसार किया जा रहा है तथा जागरूकता फैलाई जा रही है ताकि अधिक से अधिक श्रमिकों को लाभान्वित किया जा सके।

धूमधाम से मनाया दशहरा उत्सव, बच्चों की प्रस्तुतियों ने मोहा मन

उदयपुर(निसं)। शहर के चित्रकूट नगर स्थित गोकुल पार्क में नवरात्रि समापन पर दशहरा उत्सव बड़े ही उत्साह और धूमधाम के साथ मनाया गया। इस कार्यक्रम में स्थानीय निवासियों सहित बच्चों और युवाओं ने बढ़-चढक़र हिस्सा लिया। बच्चों ने विभिन्न सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दीं, जिससे दर्शक मंत्रमुग्ध हो गए। वहीं, आकर्षक झांकियों ने वातावरण को और अधिक उल्लासमय बना दिया। चित्रकूट युवा संगठन के अर्जयैं दवे ने बताया कि इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में समाजसेवी एवं भाजपा नेता अतुल चंडालिया, वरिष्ठ पत्रकार मनु राव, युवा पत्रकार सुनील पंडित, युवा नेता अभिषेक व्यास, समाजसेवी मांगी लाल सुथार और तरूण डांगी सहित कई उपस्थित रहे।

जिला स्तरीय इंसपायर अवार्ड प्रदर्शनी

डूंगरपुर(निसं)। विद्या निकेतन उच्च माध्यमिक विद्यालय गोकुलपुरा में जिला स्तरीय इंसपायर अवार्ड प्रदर्शनी सत्र 2०24-25 का आयोजन हुआ जिसमें जिले के विद्यार्थियों ने अपने उत्कृष्ट आइडिया के अनुरूप मॉडल प्रस्तुत कियें।

उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि भाजपा जिलाध्यक्ष अशोक रणोली थे जिन्होंने मॉडल की प्रशंसा करते हुए अधिकतम विद्यार्थियों को भाग लेने का आव्हान किया तथा दैनिक जीवन में विज्ञान का अधिकतम उपयोग करने पर जोर दिया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता नगर परिषद् डूंगरपुर के अध्यक्ष अमृत लाल कलासुआ ने की जबकि विशिष्ट अतिथि उपसभापति सुदर्शन जैन,भाजपा उपाध्यक्ष हंसमुख पंड्या, भाजपा जिला मंत्री पंकज जैन, जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक नीरज जोशी, अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी दिपक उपाध्याय, अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी अमृत यादव, डॉ. प्रकाश शर्मा, जयप्रकाश चौबीसा, कांतिलाल खराडी, हिम्मत सिंह पंवार अतिरिक्त प्रशासनिक अधिकारी रहें।

एनएच-927 ए के नियमों की उडाई जा रही सरेआम धज्जियां

■ विरोध के बावजूद जिम्मेदारों ने की अनदेखी, और 23 दूकानों का निर्माण एक भू-माफिया द्वारा करवाया जा रहा है

डूंगरपुर(निसं)। जिला मुख्यालय को उदयपुर मार्ग से जोडने वाली डूंगरपुर-खेरवाडा सडक जो कि एनएच-927 ए के रूप में पंजीकृत है तथा उस मार्ग पर किसी भी प्रकार के निर्माण के लिए निर्धारित दूरी बनाकर किसी भी निर्माण कार्य को स्वीकृति देने के नियमो की राजस्व विभाग एवं जिला प्रशासन की अनदेखी व मिलीभगत के चलते सरेआम धज्जियां उडाई जा रही है और नियमानुसार दूरी की आधी दूरी पर ही 23 दूकानों का निर्माण एक भू-माफिया द्वारा करवाया जा रहा है और इस संबंध में ग्राम पंचायत पालवडा के सरपंच सहित ग्रामीणों ने जिला कलक्टर को ज्ञापन देकर तत्काल रूकवाने की मांग की,लेकिन इसके बावजूद न तो उक्त कार्य रूका और वर्तमान में इस निर्माण के चलते एनिकट का अस्तित्व भी खतरे में आ गया है। ग्राम पंचायत पालवडा माताजी फला में मुख्य सडक से कोई 65-7० फीट की दूरी पर एक भू-माफिया द्वारा तत्कालीन पटवारी व सरपंच की मिलीभगत से भूमि को अपने नाम न केवल आवंटन कराकर अपितु एनएच के नियमो की धज्जियां उडाते हुए 23 दूकानों का निर्माण कार्य बिना किसी रोकटोक के शुरू कर दिया जब कि रेवेन्यू रिकोर्ड के अनुसार वर्ष 1984-85 में क्षेत्र के भू-जल स्तर को बढाने एवं खेती को बढावा देने के उदेश्य से लाखों रूपया खर्च कर एनिकट का निर्माण करवाया गया था, लेकिन उक्त निर्माण से उस एनिकट का अस्तित्व भी खतरे में आ गया है और उसे पाटने की साजिश भी की जा रही है जिसको लेकर ग्रामीणो ने जिला कलक्टर को ज्ञापन दिया।

लेकिन उस निर्माण कार्य के खिलाफ कोई कार्यवाही नहीं हुई उलटे सदर थाना पुलिस के द्वारा ग्रामीणो को धमकाया गया और उनके खिलाफ कार्यवाही करने की बात कही गई। जबकि इस दौरान कोई ऐसा घटनाक्रम नही हुआ था जिसे कानून व्यवस्था बिगडे । वर्तमान सरपंच रमेश मीणा से बात की तो उन्होने कहा कि इस संबंध में उन्होने ग्रामीणों के साथ विरोध भी किया था, लेकिन पूर्व सरपंच तथा तत्कालीन पटवारी ने अपने निजी स्वार्थ एवं जिला प्रशासन के राजस्व विभाग के जुडे अधिकारियों की मिलीभगत से नियमों की धज्जिया उडाई जा रही है।

कार्यालय ग्राम पंचायत भूताला, पंचायत समिति बड़गांव, जिला उदयपुर (राज.)

क्रमांकः-ग्रा.प.भू./25-26/116 दिनांक-1/9/2025

-:ई निविदा सूचना वर्ष 2025-26:-

ग्राम पंचायत भूताला में विभिन्न निर्माण कार्यो हेतु इच्छुक एवं सक्षम श्रेणी में पंजीकृत संवेदकों ई निविदा द्वारा निविदाएं दिनांक 06.10.2025 तक आमंत्रित की जाती है। विस्तृत विवरण/ जानकारी sppp.rajasthan.gov.in एवं eproc.rajasthan.gov.in पर देखी जा सकती है।

UBN N0 ZUD2526WSOB02023
ZUD2526WSOB02024

प्रशासक — ग्राम पंचायत भूताला, पं.स.बड़गांव (उदयपुर)

ग्राम विकास अधिकारी — ग्राम पंचायत भूताला, पं.स.बड़गांव (उदयपुर)

कार्यालय ग्राम पंचायत भूताला, पंचायत समिति बड़गांव, जिला उदयपुर (राज.)

क्रमांकः-117 दिनांक-1/9/2025

-:ई निविदा सूचना -01/2025-26:-

ग्राम पंचायत भूताला में महानरेगा व अन्य योजनाओं के करवाये जा रहे कार्यो हेतु निर्माण सामग्री उपापन की निविदाएं दिनांक 6.10.2025 सायं 6.00 बजे तक आमंत्रित की जाती है। विस्तृत विवरण/ जानकारी sppp.rajasthan.gov.in व eproc.rajasthan.gov.in पर देखी जा सकती है।

UBN N0 ZUD2526GLOB02019

प्रशासक — ग्राम पंचायत भूताला, पं.स.बड़गांव (उदयपुर)

ग्राम विकास अधिकारी — ग्राम पंचायत भूताला, पं.स.बड़गांव (उदयपुर)

हजारों लोगों की मौजूदगी में धूमधाम से हुआ रावण, कुंभकर्ण और मेघनाद का दहन

निंबाहेड़ा(निसं)। नगर परिषद निंबाहेड़ा द्वारा आयोजित ग्यारह दिवसीय राष्ट्रीय दशहरा मेले का समापन गुरुवार को विजयादशमी के अवसर पर रावण दहन के साथ हुआ। राष्ट्रीय दशहरा मेला प्रांगण में हज़ारों मेलार्थियों की उपस्थिति में बुराई पर अच्छाई की विजय के प्रतीक स्वरूप रावण, कुंभकर्ण और मेघनाद के विशाल पुतलों का रात्री 8.20 बजे दहन किया गया।

दशहरा मेले के इस भव्य आयोजन में मुख्य अतिथि के रूप में मेला आयोजन समिति संरक्षक, पूर्व यूडीएच मंत्री एवं विधायक श्रीचंद कृपलानी उपस्थित रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता भाजपा जिलाध्यक्ष रतन लाल गाडरी ने की। इस अवसर पर पूर्व विधायक अशोक नवलखा, जिला प्रमुख गब्बर सिंह अहीर, श्री सांवलिया जी मंदिर मण्डल ट्रस्ट अध्यक्ष जानकीदास वैष्णव, पूर्व नगर अध्यक्ष नितिन चतुर्वेदी, नगर अध्यक्ष कपिल चौधरी, पूर्वी मंडल अध्यक्ष अशोक जाट कनेरा मण्डल अध्यक्ष जुगलकिशोर धाकड सहित अनेक गणमान्य अतिथि उपस्थित रहे। प्रशासनिक स्तर पर भी अधिकारियों की विशेष मौजूदगी रही। उपखंड अधिकारी एवं नगर परिषद प्रशासक विकास पंचौली, एडिशनल एसपी मुकेश सांखला, पुलिस उप अधीक्षक बद्रीलाल राव, नगर परिषद आयुक्त कौशल कुमार खटूमरा, तहसीलदार घनश्याम झरवार ने कार्यक्रम को सफल बनाने में अहम भूमिका निभाई।

रावण दहन से पूर्व रामलीला मंचन में कलाकारों ने मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम की जीवन लीला का सजीव चित्रण प्रस्तुत कर दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। उपस्थित दर्शकों ने कलाकारों के संवाद और प्रस्तुति की सराहना की। रामलीला के समापन के बाद जब रावण, कुंभकर्ण और मेघनाद के पुतलों में अग्नि प्रज्वलित की गई तो आसमान आतिशबाजी से जगमगा उठा और पूरा मैदान जय श्रीराम के जयघोष से गूंज उठा। इस अवसर पर वरिष्ठ नेता चंद्रमोहन गुप्ता, डॉ. जे।एम. जैन, प्रदीप मोदी, विरेश चपलोत, भाजपा नगर महामंत्री देवकरण समदानी, कमलेश बनवार, कमलेश बुनकर, उपाध्यक्ष गोपाल पंचौली, पुष्कर सोनी, लक्की आहूजा, नगर मंत्री कैलाश सेन, आशीष बोड़ाना, रतन वैष्णव, भाजयुमो नगर महामंत्री डॉ. आशीष टांक, चिराग मंत्री, ठाामीण महामंत्री सोनू झंवर सहित अनेक जनप्रतिनिधि और गणमान्य नागरिक मौजूद रहे। रावण दहन कार्यक्रम में विधायक एवं मेला आयोजन समिति संरक्षक श्रीचंद कृपलानी ने अपने संबोधन में कहा कि दशहरा केवल एक पर्व नहीं, बल्कि बुराई पर अच्छाई की विजय का प्रतीक है। रावण, कुंभकर्ण और मेघनाद का दहन हमें यह संदेश देता है कि अन्याय, अहंकार और अधर्म चाहे कितना भी बड़ा क्यों न हो, उसका अंत निश्चित है। उन्होंने कहा कि निंबाहेड़ा का राष्ट्रीय दशहरा मेला वर्षों से सांस्कृतिक, धार्मिक और सामाजिक समरसता का प्रतीक रहा है। यह मेला नगर की पहचान बन चुका है और इसमें सभी वर्गों की सक्रिय भागीदारी इसकी भव्यता को और बढ़ाती है।

कार्यालय नगर पालिका देवगढ जिला राजसमन्द (राज0)

क्रमांक/न.पा.दे./स्टेट ग्रांट/2025–26/1630 **आपत्ति आमंत्रण पत्र** दिनांकः– 29.09.2025

एतद् द्वारा सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि निम्नांकित प्रार्थी ने प्रार्थना पत्र प्रस्तुत कर नगर पालिका क्षेत्र में स्थित स्वंय के "पुस्तैनी" मकान का राज0 स्टेट ग्रान्ट एक्ट 1961 आबादी नियमन के तहत पट्टा आवासीय चाहा है। इस बाबत इनके मालिकाना हक संबंधी अगर किसी को कोई आपत्ति हो तो इस सार्वजनिक सूचना प्रकाशन के 07 दिवस में अपनी आपत्ति मय दस्तावेजो के साथ नगर पालिका कार्यालय में अधोहस्ताक्षरकर्ता के समक्ष दर्ज करा सकते है। बाद मियाद कोई आपत्ति स्वीकार नही होगी, तथा स्टेटग्रान्ट एक्ट 1961 आबादी नियमन के तहत पट्टा संबंधी अग्रिम कार्यवाही की जावेगी।

क्र.सं.	आवेदक का नाम	पूर्व	पश्चिम	उत्तर	दक्षिण
1	डालचन्द्र/केशु खटीक	आम रास्ता	चामुण्डा माता का मन्दिर	शंकर खटीक का मकान	चामुण्डा माता का मन्दिर
2	जमना देवी/कन्हैया लाल वेद	मुस्ताक का मकान	मोहन वेद का मकान	आम चौक	हीरालाल सेन का मकान
3	वरदीचंद्र/हजारी लाल मोहनी बाई/ वरदीचंद्र	मीठा लाल का मकान	मनोहर का मकान	आम रास्ता	देवनारयण मन्दिर

अतः इस संबंध में किसी को कोई आपत्ति हो तो 07 दिवस में मयप्रमाण के अद्योहस्ताक्षर के समक्ष प्रस्तुत करें। अन्दर अवधि आपत्ति मय प्रकरण के लिखित में प्रस्तुत नही होने पर वर्णित मकान के दर्शाए पड़ौस के बीच का पट्टा दे दिया जाएगा।

अतः यह आपत्ति आमंत्रण पत्र आज दिनांक .... को मेरें हस्ताक्षर एवं कार्यालय मोहर से जारी किया गया।

राज.संवाद/सी/25/11361 **अधिशाषी अधिकारी**

मैं संन्यास के बारे में नहीं सोच रही, मेरा ध्यान मानसिक मजबूती पर। मौजूदा ट्रेनिंग में मानसिक और तकनीकी दोनों पहलुओं को बेहतर करने पर काम हो रहा है। - **दीपिका कुमारी**

भारतीय तीरंदाज, अपने संन्यास के बारे में बोलते हुए।

खेल जगत

आज का खिलाड़ी

मीराबाई चानू

भारत की स्टार महिला वेटलिफ्टर मीराबाई चानू ने नार्वे के फोर्डे में जारी वर्ल्ड चैंपियनशिप में इतिहास रच दिया है। उन्होंने इस प्रतियोगिता में 199 किग्रा का वजन उठाकर सिल्वर मेडल अपने नाम किया है। अब आखिरकार इस प्रतियोगिता में उनका ये तीसरा मेडल है। वह कुंजारानी देवी और कर्णम मल्लेश्वरी के बाद दो से ज्यादा वर्ल्ड चैंपियनशिप मेडल जीतने वाली तीसरी भारतीय वेटलिफ्टर बन गई हैं। मीराबाई पिछले कुछ सालों में मानसिक और शारीरिक तना से काफी जूझ रही थीं। पेरिस ओलंपिक और उससे पहले एशियन गेम्स 2023 में चौथे स्थान पर रहते हुए निराशा उनके हाथ लगी थी।

क्या आप जानते हैं ?... कपिल देव 1983 विश्व कप जीतने वाली भारतीय क्रिकेट टीम के कप्तान थे। उन्होंने टूर्नामेंट में कुल 303 रन बनाए, जो किसी भी भारतीय खिलाड़ी द्वारा बनाए गए सर्वाधिक रन थे।

केएल राहुल, ध्रुव जुरेल और रवीन्द्र जडेजा के शतक से भारत का विशाल स्कोर

अहमदाबाद, 3 अक्टूबर। ध्रुव जुरेल (125), केएल राहुल (100) और रवींद्र जडेजा (नाबाद 104) की शतकीय पारियों के दम पर भारत ने शुक्रवार को पहले टेस्ट मैच के दूसरे दिन स्टंप के समय पांच विकेट पर 448 रन बनाकर अपनी स्थिति मजबूत कर ली हैं और उसकी बढ़त 286 रनों की हो गई है।

मेजबान टीम ने कल के दो विकेट पर 121 रन से आगे खेलना शुरू किया और इस सत्र में 97 रन जोड़े। राहुल ने 197 गेंदों में 12 चौकों की मदद से 100 रन बनाये। राहुल ने रोस्टन चेज की गेंद पर सिंगल लेकर अपना 11वां टेस्ट शतक पूरा किया। केएल राहुल ने नौ साल के इंतजार के बाद आखिरकार घरेलू जमीन पर टेस्ट शतक जड़ा, जबकि शुभमन गिल ने कप्तान के रूप में अपने पहले घरेलू टेस्ट में संयमित अर्धशतक के साथ अपनी छाप छोड़ी। भारत ने सुबह के पहले सत्र में 67 ओवर में तीन विकेट पर 218 रन बनाये। जिसमें राहुल 100 रन शतक भी शामिल है। गिल ने 100 गेंदों में पांच चौके लगाते हुए 50 रन बनाये है। उन्हें रॉस्टन चेज ने आउट किया। राहुल और गिल ने मिलकर तीसरे विकेट के लिए 97 रन जोड़े। गिल के आउट होने के बाद, बल्लेबाजी करने आये ध्रुव जुरेल ने एक शानदार चौका लगाकर सत्र का अंत शानदार तरीके से किया।

ध्रुव जुरेल और रवींद्र जडेजा के बीच पांचवे विकेट के लिए 206 रनों की साझेदारी हुई। विकेटकीपर-बल्लेबाज ध्रुव जुरेल ने शानदार बल्लेबाजी का प्रदर्शन करते हुए आज अपना पहला टेस्ट शतक बनाया। ध्रुव ने 116वें ओवर की आखिरी गेंद पर चौका लगाकर अपना पहला टेस्ट शतक पूरा किया। उन्होंने 190 गेंदों में 12 चौके और दो छक्कों की मदद से 103 रन बनाकर अपना शतक पूरा किया। 123वें ओवर में खैरी पियरे ने ध्रुव जुरेल को आउट कर वेस्टइंडीज को पांचवी सफलता दिलाई। ध्रुव ने 210 गेंदों में 15 चौके और तीन छक्के लगाते हुए 125 रन बनाये। इसके बाद रवींद्र जडेजा ने अपना छठा शतक पूरा किया। दिन का खेल समाप्त होने के समय भारत ने पांच विकेट पर 448 रन बना लिये हैं और रवींद्र जडेजा (नाबाद 104) और वाशिंगटन सुंदर (नाबाद नौ) क्रीज पर मौजूद हैं। भारत की कुल बढ़त 286 रनों की हो गई है। वेस्टइंडीज के लिए रॉस्टन चेज ने दो विकेट लिये। जेडेन सील्स, खैरी पियरे और जोमेल वारिकन ने एक- एक बल्लेबाज को आउट किया।

इस वर्ष टेस्ट मैच में तीसरी बार भारत के तीन बल्लेबाजों ने एक ही पारी में बनाये शतक

अहमदाबाद, 3 अक्टूबर। नरेंद्र मोदी स्टेडियम में शुक्रवार को भारत और वेस्टइंडीज के बीच खेले जा रहे पहले टेस्ट मैच के दूसरे दिन भारत ने एक नई उपलब्धि उस समय हासिल की जब उसके तीन बल्लेबाजों 'केएल राहुल, ध्रुव जुरेल और रवींद्र जडेजा' ने एक ही पारी में शतक जड़े। इस वर्ष में तीसरी बार है जब भारतीय बल्लेबाजों ने यह कारनाम किया है।

घरेलू धरती पर वर्षों की निराशा के बाद राहुल को आखिरकार राहत मिली। 64.5वें ओवर में जब उन्होंने रोस्टन चेज की गेंद पर झुककर उसे मिड-विकेट के ऊपर से खेला और राहत और खुशी के मिश्रण के साथ अपना बल्ला उठाया। यह उनका 11वां टेस्ट शतक था, लेकिन घरेलू मैदान पर उनका केवल दूसरा शतक था - पिछला शतक 2016 में लगा था। हेलमेट उतारकर, बैज चूमकर, राहुल के जश्न ने लगभग एक दशक के इंतजार के बाद बोझ हल्का होने का संकेत दिया। उसके बाद जुरेल ध्रुव का शतक के शतक ने भारत को दूसरी खुशी दी। इस साल की शुरुआत में इंग्लैंड के खिलाफ मैच में चूकने के बाद, इस युवा विकेटकीपर को आखिरकार अपना पल मिल ही गया। 116वें ओवर में, उन्होंने चेज की गेंद पर मिड-ऑन पर चौका जड़कर अपना पहला टेस्ट शतक पूरा किया।

भारत के लिए, यह इस साल किसी नामित विकेटकीपर द्वारा लगाया गया तीसरा शतक भी था 'ऋषभ पंत के दो और अब जुरेल का एक शतक' जो उनके लिए एक कैलेंडर वर्ष में सबसे अधिक है। 125वें ओवर में जडेजा ने जोमेल वारिकन की गेंद पर कवर के बाहर से पंच मारकर अपना छठा टेस्ट शतक पूरा किया। और बल्ले से तलवारबाजी कर जश्न मनाया। चालू कैलेंडर वर्ष में यह तीसरी बार था जब भारत के तीन बल्लेबाजों ने एक ही पारी में तीन शतक बनाए। इससे पहले इंग्लैंड के खिलाफ लीड्स में यशस्वी जायसवाल, शुभमन गिल और पंत, और मैनचेस्टर में गिल, जडेजा और सुंदर ने शतक बनाए थे। भारत ने एक ही कैलेंडर वर्ष में एक पारी में तीन या अधिक बल्लेबाजों द्वारा शतक बनाने की यह दुर्लभ उपलब्धि चार बार हासिल की है, इससे पहले 1979, 1986 और 2007 में ऐसा हुआ था।

भारत-ऑस्ट्रेलिया वनडे सीरीज : बुमराह-गिल के कार्यभार पर होगी चर्चा

अभिषेक और जायसवाल में से किसे मिलेगा मौका!

नई दिल्ली, 3 अक्टूबर। रोहित शर्मा और विराट कोहली के वनडे क्रिकेट में भविष्य को लेकर चर्चा होगी लेकिन आस्ट्रेलिया के खिलाफ 19 अक्टूबर से पर्थ में शुरू हो रही तीन मैचों की वनडे सीरीज के लिये उनका चयन तय है हालांकि कार्यभार प्रबंधन को देखते हुए भारतीय टीम में कुछ बदलाव करने होंगे। चयनकर्ता वेस्टइंडीज के खिलाफ चल रहे टेस्ट के दौरान वनडे टीम का चयन करेंगे लेकिन घोषणा मैच के बाद हो सकती है। हार्दिक पंड्या और ऋषभ पंत चोटों के कारण उपलब्ध नहीं होंगे जबकि एशिया कप और उसके तीन दिन के भीतर दो टेस्ट की सीरीज खेलने वाले टेस्ट कप्तान शुभमन गिल को भी ब्रेक की जरूरत है। ऐसे में उन्हें वनडे या टी20 या दोनों से आराम दिया जा सकता है। रोहित और कोहली मार्च में चैम्पियंस ट्रॉफी के बाद से अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट नहीं खेले हैं और उन्होंने पिछले सात महीने में काफी मेहनत की है। कोहली ने पाकिस्तान के खिलाफ शतक के अलावा आस्ट्रेलिया के खिलाफ सेमीफाइनल में सर्वाधिक रन बनाये थे। वहीं रोहित ने फाइनल में न्यूजीलैंड के खिलाफ विजयी पारी खेली। रोहित को कप्तानी से हटाने का भी कोई कारण नहीं है क्योंकि इस प्रारूप में वह काफी सफल रहे हैं। वह खुद बल्लेबाजी पर फोकस करने के लिये कप्तानी छोड़ना चाहें तो बात अलग है।

दोनों टेस्ट और वनडे से रिटायर हो चुके हैं और सिर्फ वनडे क्रिकेट खेलते हैं। दक्षिण अफ्रीका में 2027 में होने वाले वनडे विश्व कप को देखते हुए उनके भविष्य पर भी बात होगी। बीसीसीआई सूत्रों के अनुसार इस सत्र में सिर्फ छह वनडे खेले जाने हैं जिनमें तीन आस्ट्रेलिया में और तीन न्यूजीलैंड के खिलाफ भारत में होंगे लिहाजा ग्रेस फैसला हड़बड़ी में नहीं लिया जा सकता।

इस समय प्राथमिकता अगले साल भारत में होने वाला टी20 विश्व कप और 2025 में घरेलू टेस्ट से विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप के अधिकतम अंक लेना होगा। टीम में कोहली और रोहित के रहने का संकेत वनडे श्रृंखला के लिये प्रसारक जियो हॉटस्टार के प्रोमो से भी मिला है जिसमें इन दोनों के पोट्रेट दिखाये गए हैं। बुमराह की बात करें तो उनकी विश्व चैम्पियन दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ दोनों टेस्ट में जरूरत है भले ही मेडिकल टीम या खुद बुमराह वेस्टइंडीज के खिलाफ दिल्ली टेस्ट नहीं खेलने का फैसला लें, जो कि अभी अस्पष्ट है। चयन समिति के प्रमुख अजित अगरकर ने कहा था कि बुमराह ने खुद वेस्टइंडीज के खिलाफ दोनों टेस्ट खेलने की इच्छा जताई है।

एशिया कप और अब दो टेस्ट खेलने के बाद अगली टेस्ट सीरीजतीन सप्ताह बाद है और फिर टी20 विश्व कप से पहले टी20 सीरीज। ऐसे में बुमराह को अत्यधिक यात्रा से बचाने के लिये आस्ट्रेलिया दौरे से ब्रेक दिया जा सकता है। पंड्या वनडे सीरीजतक फिट नहीं होंगे और ऐसे में नितीश कुमार रेड्डी को मौका मिल सकता है। दूसरा विकल्प शिवम दुबे है लेकिन आस्ट्रेलियाई हालात में उनकी गेंदबाजी की परीक्षा नहीं हुई है।

यश ठाकुर की अगुवाई में गेंदबाजों ने दिलाई विदर्भ को बड़ी बढ़त

नागपुर, 3 अक्टूबर। यश ठाकुर (चार विकेट), पार्थ रेखड़े और हर्ष दुबे (दो-दो विकेट) की बेहतरीन गेंदबाजी के दम पर विदर्भ ने शुक्रवार को ईरानी ट्रॉफी के तीसरे दिन शेष भारत को 214 के स्कोर पर ढ़ेर करने के बाद दूसरी पारी में स्टंप के समय दो विकेट पर 96 रन बना लिये है और उसकी बढ़त 224 रनों की हो गई है। शेष भारत ने कल के पांच विकेट पर 142 रन से आगे खेलना शुरु किया।

इंग्लैंड की महिला टीम ने दक्षिण अफ्रीका को 10 विकेट से हराया

गुवाहाटी, 3 अक्टूबर। लिंसी स्मिथ (तीन विकेट) तथा सोफी एकल्सटन, नेट साइवर-ब्रंट और शार्लेट डीन (दो-दो विकेट) की बेहतरीन गेंदबाजी के बाद एमी जोंस (नाबाद 40) और टैमी बोमॉन्ट (नाबाद 21) के शानदार प्रदर्शन की बदौलत इंग्लैंड ने शुक्रवार को महिला विश्वकप के चौथे मुकाबले में दक्षिण अफ्रीका को 215 गेंदे शेष रहते 10 विकेट से हरा दिया।

इंग्लैंड के लिए एमी जोंस और टैमी बोमॉन्ट की सलामी जोड़ी ने शानदार प्रदर्शन करते हुए बिना कोई विकेट खोए 14.1 ओवर में 73 रन बनकर मुकाबला 10 विकेट से अपने नाम किया। एमी जोंस ने 50 गेंदों में छह चौके लगाते हुए नाबाद 40 रनों की पारी खेली। टैमी बोमॉन्ट ने 35 गेंदों में तीन चौकों की मदद से नाबाद 21 रन बनाये। उन्होंने 15वें ओवर की पहली गेंद पर चौका लगाकर अपनी टीम को जीत दिलाई। सात रन देकर चार विकेट लेने वाली लिंसी स्मिथ को प्लेयर ऑफ द मैच से नवाजा गया।

इससे पहले आज यहां इंग्लैंड की महिला टीम ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया।

भारत-ए महिला हॉकी टीम चीन दौरे पर पांच मैच खेलेंगी

नई दिल्ली, 3 अक्टूबर। अनुभवी डिफेंडर मनीषा चौहान की अगुवाई में भारत ए महिला हॉकी टीम चीन दौरे पर 13 से 21 अक्टूबर तक लिया ओनिंग के खिलाफ पांच मैचों की श्रृंखला खेलेगी। ये सभी मैच डालियान के लियाओनिंग स्पोर्ट्स सेंटर में खेले जायेंगे और यह भारतीय महिला हॉकी प्रतिभाओं की अगली पीढ़ी के लिए बहुमूल्य अंतरराष्ट्रीय अनुभव और प्रतिस्पर्धी मैचों का अनुभव प्राप्त करने का एक महत्वपूर्ण कदम है।

राजधानी

गरीब व मध्यम वर्ग को बिजली के बिल में राहत मिलेगी

जयपुर (कासं)। राजस्थान में बिजली दरें और फिक्स चार्ज कम किया गया है। घरेलू उपभोक्ताओं के लिए 50 यूनिट तक के उपयोग पर एनर्जी और फिक्स्ड चार्ज में कोई बदलाव नहीं किया है, 50 यूनिट तक बिजली दर 4.75 रु प्रति यूनिट होगी। वहीं 150 यूनिट तक के उपभोग पर फिक्स्ड चार्ज 250 से घटाकर 150 रुपए किया है। बिजली दरें 6.50 रुपए प्रति यूनिट से घटाकर 6 रुपए यूनिट की गई है।

वहीं दूसरी ओर 300 यूनिट से ज्यादा खर्च करने वालों के लिए फिक्स चार्ज बढ़ाया है, लेकिन दरें कम की है। राजस्थान विद्युत नियामक आयोग ने बिजली की नई दरों को मंजूरी दी है। आयोग ने 2025-26 के लिए टैरिफ मंजूरी के आदेश जारी कर दिए है।

50 केवीए से ज्यादा कॉन्ट्रैक्ट डिमांड पर भी फिक्स्ड चार्ज 275 रु. से बढ़ाकर किया 300 रु. प्रति प्रति मासिक बिल किया गया है। हालांकि बिजली दर 7.15 रु.से घटाकर 6.50 रु. प्रति यूनिट की है।

मीडियम इंडस्ट्री एलटी-6 कनेक्शन के लिए फिक्स चार्ज 130 प्रति एचपी से बढ़ाकर 150 रुपए किया, हालांकि दरें 7 रुपए प्रति यूनिट से घटाकर 6.50 रुपए की गई।

मीडियम इंडस्ट्री एचटी-3 का फिक्स चार्ज 255 प्रति केवीए हर महीने से बढ़ाकर 275 रुपए किया। दरें 7 रुपए प्रति यूनिट से घटाकर 6.50 रुपए प्रति यूनिट की गई।

एलटी-7 में फिक्स चार्ज 115 रुपए प्रति एचपी से बढ़ाकर 150 रुपए प्रति एचपी किया। दर 8.05 रुपए प्रति यूनिट से घटाकर 7.50 रुपए प्रति यूनिट की। एचटी-4 में फिक्स चार्ज 240 केवीए से बढ़ाकर 300 रुपए किया। दर 8.05 रुपए प्रति यूनिट से घटाकर 7.50 रुपए प्रति यूनिट की।

बड़े उद्योगों के लिए अब फिक्स चार्ज 300 रुपए प्रति केवीए से बढ़ाकर 380 प्रति केवीए किया है। अब दो तरह की दरों की जगह 6.50 रुपए प्रति यूनिट का चार्ज लगेगा।

पहले 150 एचपी तक 7.30 प्रति यूनिट और 1 एमवीए पर 6.30 रुपए प्रति यूनिट दरें वसूली जाती थीं।

इलेक्ट्रिक व्हीकल चार्जिंग स्टेशन के लिए बिजली दरों और फिक्स चार्ज में कोई बदलाव नहीं किया है। इनसे 6 रुपए प्रति यूनिट की दर यथावत रखी है।

एन.एस.यू.आई. के प्रदेशाध्यक्ष सहित 9 आरोपियों को जमानत नहीं

जयपुर (कासं)। शहर की निचली अदालत ने राजस्थान विश्वविद्यालय में आरएसएस के शस्त्र पूजन कार्यक्रम में हंगामा करने और राजकीय संपत्ति को नुकसान पहुंचाने के मामले में एनएसयूआई के प्रदेशाध्यक्ष विनोद जाखड़ और 8 अन्य आरोपियों की जमानत अर्जी को खारिज कर दिया है। महानगर प्रथम की न्यायिक मजिस्ट्रेट, दक्षिण ने यह आदेश विनोद जाखड़ सहित किशोर चौधरी, मनीष, महेश कुमार, रामसिंह, विकास, साहिल, अक्षय और राकेश कुमार सैनी की जमानत अर्जी पर सुनवाई करते हुए दिए। पीठासीन अधिकारी नीलम सुलभ जैन ने अपने आदेश में कहा कि आरोपियों पर बीएनएस सहित पीडीपीपी एक्ट के तहत गंभीर आरोप हैं। आरोपियों पर कार्यक्रम स्थल पर लगे पोडियम को गिराने, पोस्टर फाडक़र कार्यक्रम कर रहे लोगों की धार्मिक भावनाओं को आहत करने और पुलिस की गाडी की लाइट तोडकर राजकीय संपत्ति को नुकसान पहुंचाने का आरोप है। इसके अलावा आरोपी विनोद जाखड़ के खिलाफ विभिन्न पुलिस थानों में पहले से ही आधा दर्जन मामले दर्ज हैं।

पुष्कर-अजमेर के ब्रह्मा मंदिर कॉरिडोर और सरोवर परिक्रमा को ऐसे विकसित करें, जिससे आगंतुकों का मन प्रसन्न हो जाए : दीया कुमारी

उपमुख्यमंत्री ने महाराणा प्रताप टूरिस्ट सर्किट और पुष्कर-अजमेर के ब्रह्मा मंदिर कॉरिडोर तथा सरोवर परिक्रमा मार्ग की डीपीआर अंतिम रूप से प्रस्तुत करने के दिए निर्देश

जयपुर। उप मुख्यमंत्री एवं पर्यटन मंत्री दिया कुमारी ने निर्देश दिए हैं कि पुष्कर-अजमेर के ब्रह्मा मंदिर कॉरिडोर व सरोवर परिक्रमा मार्ग का इस प्रकार विकास किया जाए कि पुष्कर आगतुकों का मन प्रसन्न हो जाए और उन्हें यहां शांति का अनुभव कर सके। उन्होंने महाराणा प्रताप टूरिस्ट सर्किट और पुष्कर-अजमेर के ब्रह्मा मंदिर कॉरिडोर व सरोवर परिक्रमा मार्ग की डीपीआर अंतिम रूप से प्रस्तुत करने के दिए निर्देश भी दिए।

उप मुख्यमंत्री एवं पर्यटन मंत्री दिया कुमारी के समक्ष राजस्थान धरोहर प्राधिकरण के अध्यक्ष ओंकार सिंह लाखावत, प्रमुख शासन सचिव पर्यटन राजेश यादव, पर्यटन आयुक्त रुक्मणि रियाड़, अजमेर विकास प्राधिकरण के अधिशाषी अभियंता अरुण वर्मा, पुष्कर नगर परिषद आयुक्त, अतिरिक्त निदेशक पर्यटन आनंद त्रिपाठी की उपस्थिति में सोमवार को सचिवालय में आयोजित बैठक में राज्य के बजट 2024-25 के अंतर्गत पुष्कर-अजमेर के ब्रह्मा मंदिर कॉरिडोर व सरोवर परिक्रमा मार्ग की अजमेर विकास प्राधिकरण द्वारा तैयार की गयी डीपीआर का प्रस्तुतीकरण के दौरान उक्त निर्देश दिए। उपमुख्यमंत्री ने कहा कि महाराणा प्रताप टूरिस्ट सर्किट और पुष्कर-अजमेर के ब्रह्मा मंदिर कॉरिडोर व सरोवर परिक्रमा मार्ग के विकास में धन की कमी नहीं आने दी जाएगी।

उप मुख्यमंत्री एवं पर्यटन मंत्री दिया कुमारी ने शुक्रवार को बैठक लेकर महाराणा प्रताप टूरिस्ट सर्किट और पुष्कर-अजमेर के ब्रह्मा मंदिर कॉरिडोर व सरोवर परिक्रमा मार्ग के विकास पर चर्चा की।

उपमुख्यमंत्री को इससे पूर्व पुष्कर-अजमेर के ब्रह्मा मंदिर कॉरिडोर व सरोवर परिक्रमा मार्ग की डीपीआर के प्रस्तुतिकरण में 2011 में बने 2031 के मास्टर प्लान के आधार पर भूमि चिन्हिकरण के अनुसार ब्रम्हा मंदिर कोरिडोर व सरोवर परिक्रमा मार्ग का विकास किये जाने की विस्तार पूर्वक जानकारी दी गई।

प्रस्तुतिकरण के दौरान पुष्कर के प्रमुख आकर्षण क्या होंगे और कैसे होंगे इस पर विस्तार से चर्चा की गई। परिक्रमा से घाट जाने के मार्ग को सुधारने, पुष्कर की सडकों का विकास करने, आधुनिक सुविधाओं का विकास करने, अच्छे फुटपाथ और शेड विकसित करने, घाटों का कैसे विकास करने जिसमें प्रत्येक घाट का महत्व प्रदर्शित करने, प्रवेश द्वार से पहले ही पार्किंग उसके आगे मोबेलिटी के लिए ट्राम जैसे पब्लिक ट्रांसपोर्ट सिस्टम विकसित करने, बस जंक्शन विकसित करने, गौशाला और पौराणिक म्यूजियम विकसित करने सहित कई महत्वपूर्ण बिंदुओं और सुझावों पर विस्तार से चर्चा की।

गृह राज्य मंत्री जवाहर सिंह बेढम को कोर्ट ने विदेश जाने की मंजूरी दी

जयपुर (कासं)। जिले की एडीजे कोर्ट-4 ने गोपालगढ हिंसा प्रकरण में आरोपी गृह राज्य मंत्री जवाहर सिंह बेढम को राजकार्य के लिए 8 अक्टूबर से 13 अक्टूबर 2025 तक डेनमार्क जाने की सशर्त मंजूरी दे दी है। पीठासीन अधिकारी विद्यानंद शुक्ला ने कहा कि विदेश जाने से पहले वे यात्रा से जुडे सभी दस्तावेज पेश करेंगे और विदेश यात्रा खत्म होने के बाद वापस आने पर कोर्ट को सूचित करेंगे।

अदालत ने यह आदेश बेढम के प्रार्थना पत्र पर दिया। प्रार्थना पत्र में अधिवक्ता अश्विनी बोहरा ने कहा कि प्रकरण में उसके खिलाफ 30 सितंबर 2013 को चालान पेश हो चुका है और केस की ट्रायल 12 साल से पेंडिंग चल रही है। वित्तीय वर्ष 2024-25 की बजट घोषणा के अनुसार किसानों की नॉलेज क्षमता में बढ़ोतरी के लिए नॉलेज एनहांसमेंट प्रोग्राम शुरू किया गया है। पहले चरण में प्रगतिशील युवा कृषकों को डेनमार्क, नीदरलैंड, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड और ब्राजील आदि देशों में भेजा जाएगा। डेनमार्क में ही इस संबंध में नॉलेज शेयरिंग मीटिंग होना प्रस्तावित है और इसमें पशु पालन व ग्रामीण विकास के मंत्री डेलिगेशन हिस्सा लेंगे। प्रार्थी भी इस विभाग का राज्य मंत्री है और उसकी भी डेनमार्क यात्रा प्रस्तावित है। इसलिए उन्हें 8 अक्टूबर से 13 अक्टूबर तक विदेश जाने की मंजूरी दी जाए।

जिसका विरोध करते हुए सीबीआई की ओर से कहा गया कि प्रार्थी की ओर से प्रार्थना पत्र के समर्थन में कोई दस्तावेज पेश नहीं किए गए हैं। यदि उन्हें विदेश जाने की अनुमति दी जाती है तो उनके भाग जाने का अंदेशा रहेगा। इसलिए उन्हें विदेश जाने की अनुमति नहीं दी जाए।

ए.टी.एस. ने प्लंबर बनकर भर्ती परीक्षा घोटाले में फरार 2 बदमाशों को दबोचा

आरोपी जागेन्द्र सिंह और परमजीत सिंह पर 25-25 हजार रुपये का इनाम घोषित हैं

-कार्यालय संवाददाता-

जयपुर। आतंकवाद निरोधक दस्ता राजस्थान जयपुर (एटीएस) और एनटीएफ ने भर्ती परीक्षा घोटाले में फरार चल रहे 25-25 हजार रुपये के दो इनामी आरोपियों को गिरफ्तार किया है। गिरफ्त में आए आरोपित जोगेंद्र सिंह निवासी पिलानी जिला झुंझुनू और परमजीत सिंह निवासी हरियाणा हाईटेक नकल गिरोह के सरगना बताए जा रहे हैं। फिलहाल एटीएस की टीम पूछताछ करने में जुटी है।

एटीएस पुलिस महानिरीक्षक (आईजी) विकास कुमार ने बताया कि ऑपरेशन एब्स विक्टर और ऑपरेशन जॉली के तहत हरियाणा के गुड़गांव सेक्टर-37 के एक फ्लैट में दबिश दी गई। जहां प्लंबर बनकर पहुंचे एटीएस जवानों ने जोगेंद्र सिंह और परमजीत सिंह को मौके पर गिरफ्तार किया। उस समय आरोपित महाकाल मंदिर से दर्शन कर लौटे ही थे।

भर्ती परीक्षा घोटाले में फरार 25-25 हजार रुपये के दो इनामी बदमाशों को ए.टी.एस. टीम ने गिरफ्तार किया।

जांच में सामने आया कि दोनों आरोपित पेशे से इंजीनियर हैं और प्रतियोगी परीक्षाओं में असफल होने के बाद नकल कराने का धंधा शुरू किया।

जनवरी में जयपुर में हुई नेशनल सीड्स कॉर्पोरेशन लिमिटेड की एग्री ट्रेनी भर्ती परीक्षा में कंप्यूटर रिमोट से हैक कर पेपर सॉल्व कराने की साजिश इन्होंने रची थी। इसके बाद दोनों फरार हो गए थे। आरोपित दिल्ली और जयपुर में लैब संचालित कर चुके हैं और कई ऑनलाइन परीक्षाओं में धांधली की।

कोचिंग संचालकों के जरिए अभ्यर्थियों से 1.5 से 8 लाख रुपये तक वसूले जाते थे। पूछताछ में दर्जनों परीक्षाओं में फर्जी पास कराने का खुलासा हुआ है।

एटीएस आईजी ने बताया कि दोनों आरोपी पिछले नौ महीने से फरार थे। कभी तीन दिन से ज्यादा एक जगह नहीं ठहरे और मोबाइल नदी में फेंक कर राहगीरों के फोन से ही संपर्क करते थे।

आखिरकार इनकी महिला मित्र के जरिए सुराग मिला और दस दिन की निगरानी के बाद गिरफ्तारी हुई।

एटीएस ने खुलासा किया कि गिरोह ने टाटा, एप्टेक, सीडैक, एनएसईआईटी और जिंजर जैसी कंपनियों से कॉन्ट्रैक्ट लेकर लैब किराए पर दीं और वहीं से परीक्षाओं में नकल कराई जाती थी।

पूर्व विधानसभा अध्यक्ष गिर्राज प्रसाद तिवाड़ी का देहांत

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने बिड़यारी गाँव पहुँचकर तिवाड़ी को पुष्प चक्र अर्पित किया

भरतपुर 3 अक्टूबर, (निस)। राजस्थान विधानसभा के पूर्व अध्यक्ष एवं कांग्रेस के दिग्गज नेता रहे गिर्राज प्रसाद तिवारी का शुक्रवार को 105 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनके निधन की खबर से राज्य में शोक की लहर दौड़ गई। बयाना के गांव बिड्यारी में उनका अंतिम संस्कार किया गया। स्थानीय लोगों के अलावा, राजनीतिक और सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधि भी बड़ी संख्या में उन्हें श्रद्धांजलि देने पहुंचे। मुख्यमंत्री ने तिवारी की पार्थिव देह पर पुष्पचक्र अर्पित किया। उनके साथ राज्य वित्त आयोग अध्यक्ष अरुण चतुर्वेदी भी मौजूद थे।

इस अवसर पर राज्य वित्त आयोग के अध्यक्ष अरूण चतुर्वेदी, विधायक बहादुर सिंह कोली, डॉ. ऋतु बनावत, जिला अध्यक्ष शिवानी दायमा, पूर्व जिला अध्यक्ष गिरधारी तिवारी, आलोक शर्मा, वैर विधायक बहादुर सिंह कोली, पूर्व सांसद रंजीता कोली, पूर्व सांसद पंडित रामकिशन, पूर्व डिप्टी मेयर गिरीश चौधरी, व्यापारी संगठन अध्यक्ष संजीव गुप्ता, कांग्रेस के जिला अध्यक्ष दिनेश सूपा, सतीश सोगरवाल, योगेश सिंघल, दयाचंद पचौरी, विवेक कल्ला, दौलत फौजदार, जनप्रतिनिधि, परिजन एवं बड़ी संख्या में ग्रामवासियों ने भी श्रद्धांजलि अर्पित की।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने राजस्थान विधानसभा के पूर्व अध्यक्ष एवं कांग्रेस के दिग्गज नेता गिर्राज प्रसाद तिवारी की पार्थिव देह पर पुष्पचक्र अर्पित कर श्रद्धांजलि दी।

- **एक सौ पाँच वर्षीय तिवाड़ी को अंतिम विदाई देने वित्त आयोग अध्यक्ष अरूण चतुर्वेदी, विधायक बहादुर सिंह कोली, डॉ. ऋतु बानावत, पूर्व सांसद, पंडित रामकिशन शर्मा, रंजीता कोली सहित बड़ी संख्या में राजनेता, व्यापारी व सामाजिक संगठन के पदाधिकारी पहुँचे।**

सन् 1920 में जन्मे गिर्राज प्रसाद तिवारी ने अपने कैरियर की शुरुआत वकालत से की। कानून की दुनिया में अपनी पहचान बनाने के बाद उन्होंने राजनीति में कदम रखा और जनसेवा को जीवन का लक्ष्य बनाया।

भरतपुर में प्रधान और जिला प्रमुख रहते हुए उन्होंने समाज की सेवा की। इसके बाद वे दो बार विधायक चुने गए और जनता की आवाज़ को मजबूती से विधानसभा तक पहुंचाया। गिर्राज प्रसाद तिवारी का सबसे अहम् कार्यकाल 1985 से 1990 तक रहा, जब वे राजस्थान विधानसभा के अध्यक्ष बने।

भगदड़ कांड में हाईकोर्ट ने विजय को फटकारा

मदुरै, 03 अक्टूबर। मद्रास हाईकोर्ट ने करूर भगदड़ के मामले में टीवीके नेताओं को जमकर फटकार लगाई है। कोर्ट ने कहा कि पार्टी के मुखिया विजय भगदड़ के बाद मौके से फरार हो गए और पार्टी ने इस पर दुख तक जाहिर नहीं किया। इससे उनकी मानसिकता का पता चलता है। करूर में विजय की रैली के दौरान हुई भगदड़ में 41 लोगों की मौत हो गई थी। घटना के बाद सीएम एमके स्टालिन मौके पर पहुंचे थे और पीड़ितों से मिले थे। इसके बाद उन्होंने मुआवजे का ऐलान किया था।

मद्रास हाईकोर्ट के मदुरै पीठ ने कहा कि प्रशासन विजय के प्रति नरमी बरत रहा है। पीठ ने घटना की जांच के लिए आईपीएस अधिकारी असरा गर्ग की अगुआई में एक एसआईटी के गठन का आदेश दिया और टीवीके नेता बुस्सी आनंद और सीटीआर निर्मल कुमार द्वारा दायर अग्रिम जमानत याचिकाओं पर आदेश सुरक्षित रखा।

मुख्यमंत्री ने सूरत में ''प्रवासी राजस्थानी मीट'' की तैयारियों के निर्देश दिए

उन्होंने अधिकारियों से कहा कि राजस्थानी उद्यमियों के साथ सैक्टर मीटिंग आयोजित करें

- **मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि 8 अक्टूबर को सूरत के इस आयोजन से प्रदेश में होटल, खनन व फार्मा जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में निवेश को बढ़ावा मिलेगा।**

जयपुर, 3 अक्टूबर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने गुजरात के सूरत में आगामी 8 अक्टूबर को प्रस्तावित 'प्रवासी राजस्थानी मीट' के आयोजन की तैयारियों को लेकर शुक्रवार को मुख्यमंत्री कार्यालय में आयोजित बैठक की अध्यक्षता की। उन्होंने अधिकारियों को प्रवासी राजस्थानी मीट के आयोजन को सफल बनाने के लिए सभी तैयारियां समय से पूर्ण करने के निर्देश दिए। साथ ही, उन्होंने प्रवासी राजस्थानी उद्यमियों एवं निवेशकों के साथ सेक्टर मीटिंग के लिए भी अधिकारियों को निर्देशित किया।

मुख्यमंत्री ने कहा कि इस प्रवासी राजस्थानी मीट से प्रदेश में होटल, खनन, फार्मा जैसे विभिन्न महत्वपूर्ण क्षेत्रों में निवेश को बढ़ावा मिलेगा। इसके लिए आयोजित होने वाली महत्वपूर्ण बैठकों से संबंधित पूर्व तैयारियां समय से सुनिश्चित की जाएं।

उन्होंने कहा कि इस आयोजन में प्रदेश के प्रमुख सांस्कृतिक एवं पर्यटन स्थलों की प्रवासी राजस्थानियों को जानकारी दी जाए।

बैठक में मुख्यमंत्री कार्यालय, उद्योग एवं वाणिज्य विभाग एवं संबंधित विभाग के उच्चाधिकारी उपस्थित रहे।

एयर चीफ मार्शल ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

मार करने वाला ऑपरेशन माना जा रहा है। अगस्त में भी वायुसेना ने पुष्टि की थी कि ऑपरेशन सिंदूर में जेकबाबाद और भोलारी जैसे पाक एयरबेस पर मिसाइल हमलों के जरिए व्यापक नुकसान पहुँचाया गया।

एयर चीफ मार्शल ने पाकिस्तान के उस दावे को सिरे से खारिज कर दिया कि पाक ने भारत के राफेल सहित, 6 सैन्य विमानों को गिराया है। एयर चीफ ने कहा कि यह केवल झूठा प्रचार है, जिसका उद्देश्य केवल पाकिस्तान के नागरिकों को गुमराह करना है।

उन्होंने कहा, ''पाक ने कोई प्रमाण नहीं दिया है कि उन्होंने भारतीय विमानों को गिराया है। ये केवल दावे हैं, सच नहीं।''

एयरफोर्स प्रमुख ने यह भी स्पष्ट किया कि 10 मई को हुई युद्ध बंदी पाकिस्तान के अनुरोध पर हुई, न कि अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप की मध्यस्थता के कारण। उन्होंने कहा, ''पाकिस्तान ने हमसे युद्धविराम की अपील की, क्योंकि उन्हें समझ आ गया था कि अगर संघर्ष जारी रहा, तो उन्हें और बड़ा नुकसान झेलना पड़ेगा।''

उन्होंने कहा, ''प्रधानमंत्री मोदी ने जून 17/18 को ट्रंप से फोन पर स्पष्ट कर दिया था कि भारत किसी तीसरी पक्ष की मध्यस्थता को नहीं मानता और यह युद्धविराम भारत के सैन्य दबाव के कारण, पाकिस्तान की ओर से की गई अपील के कारण हुआ।''

''आई लव मोहम्मद'' ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

गर्म कर दिया है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा, मौलाना तौकीर रज़ा ख़ान को ऐसा सबक सिखाएंगे, जिसे वे कभी नहीं भूल पाएंगे।

उन्होंने लोगों को याद दिलाया कि प्रदेश में भाजपा की सरकार है। एआईएमआईएम प्रमुख असदुद्दीन ओवैसी भी इस विवाद में कूद पड़े हैं और अभियान का समर्थन किया है। माना जा रहा है कि इस विवाद का असर बिहार के सीमांचल क्षेत्र की सीटों पर ओवैसी की पार्टी को चुनावी फायदा पहुँचा सकता है। दिलचस्प बात यह है कि मौलाना रज़ा ख़ान को अक्सर उत्तर प्रदेश का ओवैसी कहा जाता है, क्योंकि उनके बयानों और कार्रवाइयों ने कई बार सांप्रदायिक विभाजन को गहरा किया है, जिसका राजनीतिक लाभ भाजपा को विधानसभा और लोकसभा चुनावों में मिला है। 2010 में जब मौलाना जेल में थे, तो बताया जाता है कि एक वरिष्ठ भाजपा नेता ने उनकी ज़मानत करवाने में मदद की थी।

मौलाना का भाजपा नेता संतोष गंगवार से भी करीबी रिश्ता बताया जाता है, जो 2024 तक कई बार बरेली से लोकसभा सांसद रहे। भाजपा के पूर्व सांसद और सपा नेता प्रवीण सिंह अरोन ने आरोप लगाया है कि कानपुर और बरेली में जो कुछ हुआ, उसके पीछे भाजपा ही थी।

कश्मीर में बर्फ गिरी

श्रीनगर, 03 अक्टूबर। कश्मीर के पहाड़ों पर शुक्रवार को मौसम की पहली बर्फबारी हुई तथा मौसम विज्ञान केन्द्र ने अगले तीन दिनों में मैदानी इलाकों में व्यापक बारिश और ऊंचाई वाले इलाकों में बर्फबारी का अनुमान जताया है।

इसके प्रभाव में 4 अक्टूबर की शाम से 7 अक्टूबर तक एक पश्चिमी विक्षोभ आने की संभावना है। गुलमर्ग में बर्फबारी होने के बाद सोनमर्ग, गुरेज घाटी और अन्य ऊँचे इलाकों में मौसम की पहली भारी बर्फबारी होने की संभावना है।

भूगोल में रहना है या नहीं, आर्मी चीफ ने पाक को खुली धमकी दी

- **सेना प्रमुख उपेन्द्र द्विवेदी ने कहा अगर अब पाकिस्तान ने कुछ भी किया तो भारत ऑपरेशन सिंदूर जैसा संयम नहीं दिखाएगा।**
- **आर्मी चीफ ने श्रीगंगा नगर जिले के अनूपगढ़ में सैनिकों को संबोधित करते हुए कहा कि आप तैयार रहिए भगवान ने चाहा तो जल्दी ही दूसरा मौका मिलेगा।**

श्रीगंगानगर, 03 अक्टूबर। राजस्थान के श्रीगंगानगर जिले के अनूपगढ में शुक्रवार को सेना प्रमुख जनरल उपेंद्र द्विवेदी ने पाकिस्तान को कड़ा संदेश दिया। उन्होंने कहा कि यदि पाकिस्तान विश्व मानचित्र पर अपनी जगह बनाए रखना चाहता है, तो उसे अपनी धरती पर आतंकवाद को प्रायोजित करना बंद करना होगा। जनरल द्विवेदी ने सैनिकों को संबोधित करते हुए यह स्पष्ट किया कि भारत अब ऑपरेशन सिंदूर के दौरान दिखाए गए संयम को दोहराएगा नहीं।

जनरल द्विवेदी ने कहा कि ऑपरेशन सिंदूर के दौरान भारत ने पूरी दुनिया को पाकिस्तान में आतंकी ठिकानों के सबूत दिए। उन्होंने बताया कि यदि भारत ने ये सबूत उजागर नहीं किए होते, तो पाकिस्तान इन तथ्यों को छिपा लेता। इस ऑपरेशन में भारतीय सेना ने पाकिस्तान के भीतर नौ लक्ष्यों पर हमला किया, जिनमें से सात सेना ने और दो वायुसेना ने नष्ट किए। जनरल द्विवेदी ने स्पष्ट किया कि भारत का उद्देश्य केवल आतंकियों को निशाना बनाना था, न कि आम पाकिस्तानी नागरिकों को नुकसान पहुंचाना।

सेना प्रमुख ने सैनिकों से पूरी तरह तैयार रहने को कहा। उन्होंने कहा कि अब अपने आप को पूरी तरह तैयार रखें, यदि भगवान ने चाहा, तो मौका जल्द आएगा। उन्होंने जोर देकर कहा कि भारत इस बार पहले जैसा संयम नहीं दिखाएगा और ऐसी कार्रवाई करेगा, जो पाकिस्तान को अपनी स्थिति पर विचार करने के लिए मजबूर कर दे।

जनरल द्विवेदी ने सीमा पर रहने वाले लोगों के बारे में कहा कि भारत इन लोगों को आम नागरिकों के बजाय सैनिकों के रूप में देखता है।

सोनम वांगचुक की ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

की जोधपुर सेंट्रल जेल में बंद हैं। लद्दाख को अलग राज्य का दर्जा दिए जाने की मांग को लेकर हुए विरोध प्रदर्शनों के बाद उन्हें 26 सितंबर को गिरफ्तार किया गया था। इस प्रदर्शन के दौरान भड़की हिंसा में चार लोगों की मौत हो गई थी। दशहरा की छुट्टियों के कारण शीर्ष अदालत में फिलहाल छुट्टी है। अदालत छह अक्टूबर को खुलने के बाद इस मामले में अदालती कार्रवाई शुरू हो सकती है।

'दो साल तक के ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

चाहिये। आम तौर पर पांच साल से कम उम्र के बच्चों को ये दवाइयां नहीं दी जाती हैं। पांच साल से अधिक उम्र के लोगों को भी ये दवाएं देने से पहले सावधानी पूर्वक जांच की जानी चाहिये और खुराक की उचित मात्रा ही दी जानी चाहिये। डीजीएचएस ने कहा है कि ये दवायें कम से कम समय के लिए दी जानी चाहिये और उसके साथ कई दवाएं नहीं दी जानी चाहिये।

डीजीएचएस सभी राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों से कहा गया है कि वे अपने अधिकार क्षेत्र में सभी अस्पतालों और स्वास्थ्य केन्द्रों को इस परामर्श के बारे में अवगत करायें।

अब तक रूस की सीमा से ....

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

ओर उठ रही है। लेकिन रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने बार-बार इन आरोपों का मजाक उड़ाया है और कहा है कि ये पश्चिमी यूरोपीय देशों की साजिश है।

असल समस्या यह है कि किसी भी गुप्त आक्रामक कार्रवाई में रूस की सीधी संलिप्तता साबित करना निश्चित रूप से बेहद कठिन है। जिन देशों ने ये परेशानियाँ झेली हैं, उनमें से कोई भी अब तक कोई ठोस सबूत नहीं दे पाया है। तथापि, इसके बावजूद पश्चिमी देशों में गुप्त युद्ध की धारणा गहरी है और माना जा रहा है कि यूक्रेन युद्ध के दबाव के कारण, रूस बदला लेने और पश्चिमी यूरोप में डर पैदा करने की कोशिश कर रहा है।

पूरे यूरोप में इन छुटपुट घटनाओं के परिणामस्वरुप असुरक्षा की भावना पैदा हो रही है। कथित रूसी एजेंटों द्वारा बार-बार किए जा रहे इन व्यवधानों के कारण पश्चिमी यूरोप अनिश्चितता और लाचारी में घिरा है। अमेरिका भी खास मददगार नहीं रहा है, क्योंकि राष्ट्रपति ट्रंप यूरोपीय हवाई क्षेत्र और सीमाओं में इन घुसपैठों को हल्के में लेते रहे हैं।

असलियत यह है कि पश्चिमी यूरोप के किसी भी देश के पास रूस के खिलाफ कोई ठोस रोकथाम का उपाय नहीं है। रूस के खिलाफ कड़े बयानों के बावजूद, हर देश अपने तथाकथित साझा बचाव तंत्र को लेकर संशय में है।

यूरोप की एक प्रभावशाली आवाज़, जिसे लंदन की पत्रिका ''द इकॉनमिस्ट'' ने सामने रखा है, पश्चिम से यह आग्रह कर रही है कि वह रूस के खिलाफ अपनी रोकथाम की नीति स्पष्ट व कड़े शब्दों में लागू करे, ताकि रूसी भालू अपनी सीमा से लगे देशों पर पंजा न मार सके। पत्रिका का कहना है कि यदि अभी कदम नहीं उठाए गए तो रूस को और अधिक घुसपैठ करने और अंततः कुछ रूसी भाषी अल्पसंख्यकों के साथ जमीन के बड़े हिस्से पर कब्जा करने का साहस मिलेगा।

ऐसी जबरदस्त घुसपैठ और विध्वंसकारी गतिविधियों के बीच, जबकि रूस बार-बार सीमा उल्लंघन और छुपे हमले कर रहा है, राष्ट्रपति पुतिन इस साल के अंत में भारत आने वाले हैं। उन्होंने कहा है कि वे अपने मित्र, भारत के प्रधानमंत्री से मिलने का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं।

ऐसे में, जबकि पुतिन इंटरनेशनल क्रिमिनल कोर्ट द्वारा अपने खिलाफ जारी गिरफ्तारी वारंट के कारण अपने देश से बाहर नहीं जा सकते, तो भारत की यह यात्रा उनके देश के बाहर की दुर्लभ यात्राओं में से एक होगी।

शायद भारत के पास पुतिन का स्वागत करने के अलावा कोई और विकल्प नहीं है, भले ही इसके कारण पश्चिम उससे नाराज हो। खासकर तब, जबकि राष्ट्रपति ट्रंप के मनमौजी रवैये और रूस से तेल खरीदने पर भारत को दंडित करने की कोशिशों ने भारत के सामने और कोई रास्ता नहीं छोड़ा है।

पुतिन ने ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

हैं कि प्रधानमंत्री मोदी ऐसा कोई फैसला नहीं लेंगे।

राष्ट्रपति ने अमेरिका को चेतावनी देते हुए कहा कि रूस के भारत जैसे व्यापारिक सहयोगियों पर अगर उच्च आयात शुल्क लगाया जाता है तो वैश्विक स्तर पर महंगाई और बढ़ेगी। इस कारण अमेरिकी फेडरल बैंक को अपनी ब्याज दर उच्च रखनी पड़ेगी। उन्होंने कहा कि तेल की कीमत प्रति बैरल 100 डॉलर तक बढ़ जाएगी। अमेरिका के फैसले का नकारात्मक असर पूरे विश्व पर पड़ेगा।

अमेरिका ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

जब तक सांसद आपसी सहमति पर नहीं पहुंचते, सरकार बंद रहेगी – और देश इंतज़ार करता रहेगा– चिंतित, बिना वेतन और बढ़ती हताशा के साथ।

'भारतीय कंपनियां ''क्रोनीइज़्म'' ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

लिखा है, कोलंबिया में बजाज, हीरो और टीवीएस को इतनी सफलता हासिल करते देखना गर्व की बात है। यह दिखाता है कि भारतीय कंपनियां नवाचार से जीत सकती हैं, न कि भाई-भतीजावाद से। बेहतरीन कार्य।''

मेडलिन, कोलम्बिया की ईआईए यूनिवर्सिटी में आयोजित ''द फ्यूचर इज़ टुडे'' नामक सेमिनार में बोलते हुए, राहुल गांधी ने पूरे आर्थिक ढांचे को तीन -चार कंपनियों के हाथों सौंपे जाने की आलोचना की।

इस लैटिन अमेरिकन देश में श्रोताओं से खचाखच भरे हॉल में आयोजित सेमिनार के दौरान राहुल गांधी द्वारा छात्रों से पूछे गए एक सवाल - जब मोटरसाइकिल का वज़न 100 किलोग्राम होता है, तो कार का वजन 3,000 किलोग्राम क्यों होता है?'' ने भारतीय जनता पार्टी को चौंका दिया। भाजपा की आईटी सेल के प्रमुख अमित मालवीय ने इसे ''बकवास'' बताया।

हालाँकि राहुल गांधी ने एनविगेडो, कोलम्बिया की ईआईए यूनिवर्सिटी के छात्रों के समक्ष यह सवाल रखा, तो उनका उद्देश्य छात्रों को यह समझाना था कि सत्ता का केंद्रीकरण गलत क्यों है तथा विकेंद्रीकरण भविष्य वास्तविक का रास्ता क्यों है। अपने प्रश्न के माध्यम से वे सत्ता के स्वरूप पर अपने विचार साझा कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि इस समस्या का समाधान इलेक्ट्रिक मोबिलिटी है।

उन्होंने कहा कि दोनों के वज़न के अन्तर का कारण उनके इंजनों में छिपा है। ''कार भारी होती है, क्योंकि उसका इंजन हादसे के वक्त अंदर की ओर धकेलता है और जानलेवा हो सकता है, जबकि मोटरसाइकिल का इंजन हल्का होता है और टक्कर में अलग हो जाता है, जिससे नुकसान कम होता है। यही कारण है कि मोटरसाइकिल हल्की होती है।'' उन्होंने कहा, ''जब मोटरसाइकिल की टक्कर होती है, तो इंजन आपसे अलग रहता है, इसलिये आपको चोट नहीं पहुंचाता। जब कार की टक्कर होती है, तो इंजन कार के अंदर आ सकता है। इसलिये कार को इस तरह डिजायन किया जाता है कि इंजन अन्दर नहीं आ सके तथा आप बच जायें।''

उन्होंने कहा कि कार की इस समस्या का समाधान ''इलेक्ट्रिक मोबिलिटी'' में है। ''इलेक्ट्रिक मोटर पारंपरिक इंजन जैसी केंद्रीकृत ऊर्जा प्रणाली को तोड़ती है। यह आपको मोटर को अलग-अलग जगहों पर लगाने की अनुमति देती है, इस प्रकार इलेक्ट्रिक मोटर एक प्रकार से सत्ता का विकेन्द्रीकरण है।

राहुल गांधी ने यह स्पष्ट किया कि यह सिर्फ एक तकनीकी उदाहरण नहीं है, बल्कि एक राजनीतिक विचार है, राजनीतिक सत्ता का विकेंद्रीकरण। लेकिन सत्तारुढ़ दल ने इसे एक गूढ़ राजनैतिक टिप्पणी के रुप में लिया, तथा राहुल की इस टिप्पणी को उनके फरवरी के नागालैंड वाले भाषण का आगे का सोपान बताया। नागालैंड में बोलते हुये भी राहुल ने यही कहा था कि भारत जैसे विविधता भरे देश में सत्ता का विकेंद्रीकरण अनिवार्य है।

उन्होंने कहा था: ''पारंपरिक इंजन केंद्रीकृत ऊर्जा स्त्रोत होते हैं, लेकिन इलेक्ट्रिक वाहन विकेंद्रीकृत होते हैं - बैटरी और मोटर पूरे डिजाइन को नया रुप देते हैं।'' नागालैंड में विद्यार्थियों से बात करते हुये राहुल गांधी ने कहा था कि सत्ता के विकेन्द्रीकरण से हर चीज बदल जायेगी, अर्थव्यवस्था से लेकर राजनीति तक, सब कुछ बदल जायेगा।

भारत और चीन की तुलना करते हुए, राहुल गांधी ने कहा: ''भारत की प्रणाली चीन से कहीं अधिक जटिल है और भारत की ताकतें चीन से बिल्कुल अलग हैं। भारत की एक समृद्ध आध्यात्मिक परंपरा और विचार प्रणाली है, तथा भारत परम्परा एवं वैचारिकता के मामले में विश्व को बहुत कुछ देने की स्थिति में है।''

उन्होंने यह भी कहा: ''मैं भारत को लेकर बहुत आशावादी हूं, लेकिन भारतीय व्यवस्था के भीतर कुछ गहरी दरारें हैं, जिन्हें दूर करना होगा। सबसे बड़ा खतरा है - भारत में लोकतंत्र पर हो रहा हमला।''

राहुल गांधी ने आगे कहा: ''भारत कई धर्मों, भाषाओं और परंपराओं का देश है। भारत दरअसल, एक सतत संवाद है अपने लोगों के बीच। इन विविधताओं को उनका समुचित स्थान देना आवश्यक है और इसका सबसे अच्छा तरीका है लोकतांत्रिक व्यवस्था।'' राहुल ने कहा, ''इस समय भारत में लोकतांत्रिक व्यवस्था पर जबरदस्त हमला हो रहा है। यह एक बड़ा खतरा है। दूसरा संकट विभिन्न प्रकार की अवधारणाओं का है। भारत में 16-17 प्रमुख भाषाएं हैं, कई धर्म हैं। इन सबको फूलने-फलने दीजिये। भारत में यह बहुत जरुरी है कि विभिन्न परम्पराएं अभिव्यक्ति के अवसर पा सकें। हम चीन की तरह लोगों को दबाकर केन्द्रीयकृत प्रणाली नहीं चला सकते। ''हमारे देश की सामाजिक संरचना उसे स्वीकार ही नहीं करेगी।''

राष्ट्रदूत हिन्दु संयुक्त परिवार की ओर से सोमेश शर्मा द्वारा ज्वाईन्ट मीडिया, आजाद मार्ग, मैन रोड, आयड, उदयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-राजेश शर्मा, आर.एन.आई. नं. 57928/93 **जयपुर कार्यालय:** सुधर्मा एम.आई.रोड, जयपुर। फोन: 2372634, 4103333-34, फैक्स : 0141-2373513 **कोटा कार्यालय :** पलायथा हाऊस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन: 2386031, 2386032,फैक्स:0744-2386033 **बीकानेर कार्यालय :** कुम्भाना हाऊस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन: 2200660, फैक्स 0151-2527371 **अजमेर कार्यालय:** राष्ट्रदूत भवन, चुंगी नाका के पास, अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665 **जालोर कार्यालय :-** जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन 226422,226423, फैक्स: 02973-226424 **हिण्डौनसिटी कार्यालय :-** जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 **चूरू कार्यालय :** एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन : 256906, 256907, फैक्स: 01562-256908